❀ श्री सीतारामाभ्यां नमः ❀

❀ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

❀ श्रीमते युगलानन्यशरणाय नमः ❀

श्रीमैथिली विवाह पदावली

सम्पादक

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज

श्रीलक्ष्मणकिलाधीश

❀ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

श्रीमैथिली विवाह पदावली
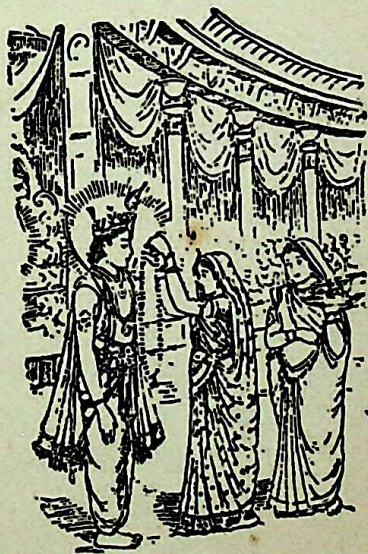
सम्पादक

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज

श्रीलक्ष्मणकिलाधीश ।

चतुर्थ संस्करण की

भूमिका

सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहँ सदा उछाह, मंगलायतन राम जस ॥

कलि पावनावतार गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने श्रीसीताराम विवाह महोत्सवको परम मंगलमय कहा है। जो भक्त श्रीसीताराम विवाह महोत्सवका गान करते हैं उनके पास सदा मंगल होते रहते हैं। श्रीसीतारामजीकी अनन्त लीलाओं में विवाह लीला परम मधुर एवं रसमय है। भारतीय संस्कृति का मूर्त्त रूप श्रीसीताराम विवाह में प्रस्फुटित हुआ है। लीलावैचित्री, रसवैचित्री से चमत्कृत श्रीसीताराम विवाह रस का अपार सागर है। अनन्त सौन्दर्य माधुर्य निलया श्रीमिथिलेशराजनन्दिनी एवं अपरिगणित कन्दर्प दर्प दलन पटीयान् सौन्दर्य माधुर्य सुधासिन्धु श्रीराघवेन्द्र के असमोर्ध्व माधुर्य का पूर्ण विकास विवाह महोत्सव के अवसर पर दुलहा–दुलहिन के रूप में हुआ है। जिसने दूलह–दुलहिन के रूपमें श्रीसीतारामजी का दर्शन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। श्रीगोस्वामीजी ने लिखा है :—

"दूलह राम सीय दुलही री"
घन दामिनि बर बरन हरन मन सुंदरता नखसिख निबही री ॥
ब्याह बिभूषन बसन बिभूषित, सखि अवली लखि ठगि सी रही री।
जीवन जनम लाहु लोचन फल, है इतनोइ लह्यो आजु सही री ॥

श्रीगोस्वामीजी ने कवितावली में लक्ष्मी, नारायण, गौरी, शंकर, लोमश भुशुण्डि, नारद, हनुमान् आदि को साक्षी देकर कहा हैं:—

बानी विधि गौरी हर सेसहू गनेस कही,
सही भरी लोमस भुसुंडि बहु बारिखो ।
चारि दस भुवन निहारि नर-नारि सब,
नारद को परदा न नारद सो पारिखो ॥
तिन्ह कही जग में जगमगति जोरी एक,
दूजो को कहैया औ सुनैया चष चारिखो ।
रमा, रमारमन, सुजान हनुमान कही,
सीय सी न तीय न पुरुष राम सारिखो ॥

विवाह महोत्सव के अपार साहित्य उपलब्ध है। सिद्ध सन्तों के अनेकों पद उपलब्ध हैं। मिथिला के रसिक भक्तों के अनेकों पद विवाह के सम्बन्ध में गाये जाते हैं, जिनमें श्रीमोदलताजी के पदों का माधुर्य सबसे अधिक है। श्रीअवध के आचार्यों के पद अत्यन्त सरस हैं, जो कुछ प्रकाशित थे कुछ अप्रकाशित। श्रीसीता-रामजी की कृपा से आवश्यक पदों का संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। आशा है विवाह रस के रसिक भक्तों को इन पदों के द्वारा दुलहा दुलहिन चित-चोर की अनुपम छवि का दर्शन प्राप्त होगा।

फाल्गुन कृष्ण
विजया एकादशी
संवत् २०३६

स्वामी श्रीसीतारामशरण

❀ विषय सूची ❀

विषय	पृष्ठ
आचार्य वन्दना	१
श्रीमिथिलाजी की महिमा	२
विवाह मण्डप की रचना	३
मंगल देवाराधन	४
श्रीरामलला नहछू	५
हरदी वुकावन-तिलक चढ़ावन	६
धनबट्टी	१०
मटकोर	११
हरदी चढ़ावन-उबटावन	१६
श्रीकिशोरीजी का चुमावन	१७
बारात आगमन	१८
परिछन	१६
मंगल गान	२३
स्वस्तिवाचन-संकल्प	२४
मातृका पूजा-धुरछक	२५
दुलहा का अन्दर आगमन	२६
अन्दर परिछन	३२
मण्डप परिक्रमा	३४
कन्या निरीक्षण	३५
मंडप पर दुलहिन का आगमन	३६
अठौङ्गर-पुरुष सूक्त	३७
दुलहिनक नहछू	४१
दुलहाक नहछू	४२
देवपूजा-चरण प्रक्षालन	४३
शाखोच्चार	४४
कन्यादान	५१
गठबन्धन-भाँवरी	५२
सिन्दूरदान	५४
दूर्वाक्षत-चुमावन	५५
मण्डप की झाँकी	५५
आरती	६७
द्वार छेकाई	६८
कोहवर की झाँकी	६६
कुलदेवता	७०
जूआ	७१
बाती मिलावन	७२
कोहवर हास्य	७३
पाटी धराइ	७५
घूँघट-कोहवर	७६
जेवनार के लिये प्रस्थान	७८
जेवनार बुझौवल	८०
नित्य जेवनार	६०
मिथिलाक डाम-डोमिन	६५
बिदाई	६६
अवधमें परिछन	१०१
अवधमें-चुमावन-मुँह दिखाई	१०२
अवध में आरती	१०४
कंगन छोरन	१०५
युगल छबि वर्णन	१०६
कवित्त-सवैया	१५७
श्रीराम कलेवा	१७७

❀ अकारादि क्रम से पद सूची ❀

पद	पृष्ठ
अ	
अँखियन बिच तुमको	१४०
अचमन करत रामसिय	६४
अनका कहल किय अयला	३६
अनोखे छैला मारी हमहिं	१३३
अवध नगरिया से चलली	१६
अवध नगर से जनकपुर	२८
अवध छैल दूलह बने आज	६३
अवध छैल छवि दृगन	१२२
अवधकिशोर बनो प्यारो	१२७
अब छाड़ि ससुरारि कहाँ	६६
अब हम भई सोहागिनि	१२१
अति छवि जनकलली की	१०६
अयलौं पाहुन से खूब कैलौं	८६
अलवेलो दुलहा रघुनन्दन	३३
अलवेला वना अनमोल	१२१
आ	
आई कमला पूजन जाथि	१०
आइ करथि विधिवत	१४
आई विधना के कतेक	६०
आगु आगु लक्ष्मीनिधि	७६
आँचर से झाँपि २ लेल	५१
आजु तिलक चढये	१०
आजु परम परमानन्द	६
आजु सियाजू के व्याह की	२३
आजु जनकपुर घर घर	२४
आजु चुमावन सिया	१०२
आजु चुमावन सिया	१०२
आजु दुलहा वने हैं	१४३
आजु केर झाँकी	१५०
आदि सारदा गनपति गौरि	५
आनन्द आजु महा	१६
आनन्द आजु जनकपुर	११
आनन्द आनन्द आजु	३३
आवू आवू २ दुलहा	३१
आवू आवू २ सखि	३२
आरती करिये सियवर की	६७
आली सियावर	१२५
आली सियावर अजब	१२८
आली री सिया को बनरा	१२३
आहाँ के हम कौशल्या	१५
ई, उ	
ई छैला अवध के अन्हरिया	५३
उरत जावें यहीं लालन	२६
ए, ऐ	
एकटा बात हमर कने	२६

पद	पृष्ठ
ए दुलहा आपे से लागी	६५
ऐ अलबेलो लाल कौन	७४
ऐसोई मन चाहत निशि	१४०
एहन ससुरारी दुलहा	६७
एहन स्वरूह कहाँ पैलौं	१४५
एहन पतित केर अहीं	११६
एही वर भँसुगा के	३५
क	
कमला पूजन चलिजात	१३
करत दोउ नैनन से	१४४
कहवाँ के पीअर मटिया	१३
कहाँ केर कोहवर लाल	७७
कंचन महल मणिन	७६
कंचन भवन खचित	७६
किशोरीजी राखि शरण	१११
किशोरीजू के अनुपम	११२
कैसा बना अलबेला	१४६
कौना गुमान में भुलइल	८६
कौने नगर के सिन्दुरिया	५४
क्या चला आता है मेरा	७८
क्या अजब रंगदारी	८५
क्या छवि धरौ सियाजू	१४३
ग	
गजब बनी गुन खानि	१०५
गजब तोरी चितवनि	१३६
गरज है किशोरीजी हमें	११५
गारी खूब सुनैवै छयल	८६
गोरे से वदन पर श्याम	१३४
घ	
घोड़वा छमकावत आवे	२६
घूँघरवारी अलक हिय	१२६
च	
चलु धीरे धीरे लालन	३०
चरण सरोज धरि	४२
चारों दुलहा देहिं भमरिया	५३
चारों दुलह चारों दुलहिनि	५८
चादर पकड़ि एहि वरवा	३५
चितचोरवा आजु	३६
चित चोरन छवि रघुवीर	१३०
चिरंजीवै बनी को सुघर	१५६
चुमावत हो ललना धीरे	५५
छ	
छवि देखु रंगीली पाग की	११८
छवि जादू भरी सिय	१५१
छवि अति बांकी हमारे	१२६
छयलवा को देहौं चुनि र,	८४
छयल तेरी छवि की	१४०
छाड़व नाहीं दुआरी	६८
छाड़ि ससुरारि ललन	६८
छैला मारी रे तिरछी	१३४
ज	
जखन श्यामल वर	१५४

पद	पृष्ठ
जखने मिया के पग	४१
जनककिशोरी मोरी	१५४
जनि मनहिं लजाउ कने	८४
जँविया चढ़ाय वावा	५२
जाग्यो भाग तिहारो	१३०
जादू भरी राम तुमरी	११८
जादू भरे नैन तोरे जादू	१४८
जादू भरी तेरी आँखें	१५०
जिय मारो पियरवा की	१८९
जिया परिगै नयन के	११९
जिया मानत नाहीं	१४२
जिया मिया दुलहे पै	१४२
जुआ खेलो कुँवर वर	७१
जेंवत कुँवर रसिक	९१
जेहने सलोनी सिया	१४७
जौं हम जनितौं कि	९९
झमड़ँत आवे मिथिलेश	७९
ठ	
ठाढ़ो रे प्रमोदवन	१३३
ड	
डोमवा कवरवा वैले	८५
त	
तव पद पदुम विहाय	११७
तन मन सर्वस वारी	१५२
तनिक हँसि हेरैं जो	१३८
तिल भरि गारि नै दै छी	८३
त्रिभुवनपति रामचन्द्रवर	५२
तुम सकुचत कस चितचोर	८४

पद	पृष्ठ
तेरी चितवनि मोहे	१८६
तोहें राखों पियरवा मैं	१४०
द	
दुलहा आये दुआरिया ए	८२
दुलह दुलही की छवि बाँकी	६५
दुलहिया दूलह देखो	११२
दुलहिया लाड़िली अलबेलो	११४
दुलहाक मुँह अनमोल	१५५
दूलह राम सीय दुलही रो	६१
देखियौन देखियौन	१४६
देखो देखो री सब चारों	८०
देखो देखो देखो सखी	८६
देखो देखो सु छवि दुलहन	११६
देखु सखी छवि राम	१८४
देल कमल कर पल्लव	३६
दोउ खेलि रहे नैनन में	१४४
दोउ जेंवत हास विनोद	९२
दोउन की अरुझनि आली	१३९
द्वार की छेकाई नेग	६८
दृगन भरि छवि लखु	१३८
दृगन लग जायगी	१३८
ध	
धनि धनि सुनयनाजी के	५१
धन धन जीवन लेखो री	८१
धड़ धड़ धड़कत छतिया	१३४
धान बाटि अवध से	१०
धुरछक की कलशा लय के	३५
न	
नमो श्री अग्रस्वामि पद कंज	३

पद	पृष्ठ
नहछू करत लखि नाउनी	४१
नउनियाँ के हाथे कनक	५२
नव नव राजत छिन छिन	६६
नवल बनरा मन मेरो	१२७
नवेले लाल की दुलही हो	११२
नयनमां माने नहीं	१५८
नारि सुभग मण्डपतर	५८
नित नव व्याह रचैता	६७
निरखत सीय कंगनमां	१३३
निरमोहिया से लागी	१२१
निहारे बिनु ना माने	१३६
नैन दोउ जहर बुझी	१३२
नौशय चारों नवलबर	७२
प	
परम प्रिय पावन तिरहुत	३
पउरि आये पाहुन परीछे	२२
पाहुन कहू कोना गुन	८५
प्रिय पाहुन सिन्दुरदान	५५
प्रिय पाहुन रुचि सँ	८२
प्रियाजू के नैनन की	१०८
प्रियाजू के नेह भरे	१११
पिय हँसि सियको घूँघट	७६
पिया बांधी कटारी तैने	११६
पिया प्यारे के नैना बड़े	१२८
प्रीतम श्याम सुजान सजन	६८
प्रीतम बड़ प्रेमी छथि	११४
प्रीतम तोरे नैना हो	१२२
पुरहित चतुर सतानन्द	२५
प्यारे रसिया राजकिशोर	८३
प्यारा राम बन्ना रघुनाथ	१००
प्यारीजू तिहारी चन्द्रानन	११३
प्यारीजू प्रीतम अहाँक प्रेम	११५
प्यारी पियहिं सितार	१२०
ब व	
वर महँ बड़ बड़ बात	८२
बसो किन राजा बना	६७
बड़ा रे जतन सँ हम	१००
बढ़ौ नित जनकलली को	१०७
बनी छवि स्वामिनी सिंग	११३
बनरा तोरी चितवनि मन	११६
बनाजी प्यारी चितवनि	१२५
बना तेरी छवि पर	१२०
बनि आये सुघर रघुराज	१२६
बनरा बना क्या बांका	१३१
बने रहो नीके रहो मोरे	१४१
वारी रे इन तिरछी	१४३
वाँका बनरा ने मन	१५१
बिन देखे नयनमां ना माने	१२९

पद	पृष्ठ
बिहँसि मोहि मारी नैन	१३२
बिधु सम आनन पहियाँ	१३३
बिहरत प्यारा रे सरजू	१३४
बीड़ी दैहौं मैं नागर	६४
बोलनि ललित लड़ै तीजू	१०८
बौरी बना दिया है	१५२
भ	
भोजन करत भावते जीके	६३
भोजन करि बैठे पावत	६४
म	
मधु रसवा चुवै तेरी	११६
मजेदार क्या बनरा बनि	१४१
मत मनिहऽ मनमें बुरा	८६
मतवारे बना की नजर	१४२
मलिया जे सूतेला ऊँची	१५६
मारे कलेजे हँसिके तेरे	१३१
मिथिला आज सुमंगल	१०
मिथिलापुर की नारि	१७
मिथिला के नतवा से	४०
मिथिला नगर तजि	६६
मिलि जेंवत श्रीरघुबीर	६२
मिलि जेंवत प्रीतम संग	६२
मिलि जेंवत श्रीरघुनन्दन	६३
मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द	६३
मीठी तान सुना दे सुघर	१२०
मुँह दिखाई सिया की	१०२

पद	पृष्ठ
मुदित मन आरती करै	१०४
मैया सुनैना के पाहुन रे	१४५
मो मन मृग को फांसि	१३२
मोर पिया अवध विहारी	१३४
मोहे छैला ने मारी	१४३
मोरा अंगना में उगि गेलै	१४५
मोहिं तो भरोसो सियाजू	११०
मोहि लेलक सजनी	१४७
मोहनी मुरतिया देखि	१४७
मंगल करन गणेश देव	४
मंगल आजु सुहावन	६
मंगल आजु जनकपुर	८३
मंडप बिच जोरी चमकि	६३
य	
यह आपकी कुल देवता	७०
ये जोरी चारु चन्द्रमा की	६६
ये न होइबो धनुष को	१०५
ये छवि पर वारौं अमित	११८
र	
रघुनन्दन आवहीं विलोकु	२१
रतन जड़ाव के कील	२६
रघुबर धीरे धीरे चलिये	३०
रघुवंशी रसिया रसहिं	३१
रतन जड़ित मंडप पर	६०
रघुबर दूलह दुलहिनि	६२
रघुबर जेंवत जानि एक	६०

पद	पृष्ठ
रानी ए रामजी	३२
रानी कौशिल्या अवितथि	१५
राजकुमर वर चार री	३४
राजति रामजानकी जोड़ी	६०
रामचन्द्र दुलहा सुहावन	६८
राम लखन सन सुन्दर	७५
राघोजी थारे नैना जादू	१३६
राघोजी थारे नैनन को	१३६
राघोजी थारे नैना	१३७
रंगीली आरती करु	६७
रंगीले बना दूती तेरी	१२२
ल	
लखो दशरथ कुमार	२८
लखि कौतुक घर में नारि	७४
ललन ससुरारि छाड़ि	९८
ललन मोरी अँखियन	११८
लहकौरि करत पिय प्यारी	७०
ललन पर टोना जनि	१०६
लाल इन देवी के लागउ	७१
लाल की अलकैं अतर	१३२
लामी लामी केशिया तोरी	१५४
स, श	
सजीवन जीवन युगल	१२१
सब जग आश तजि	१५५
सब मिलि आरती हे उतारु	६८
सब सखियन मिलि	१२

पद	पृष्ठ
सखि अलबेलो म्हारो प्रान	१०१
सखी लख सिय दुलही	१०१
सखिन मधि राजति जनक	१०७
सजनी कैसा वर	१०४
सखि लखन चलो नृप	१०५
सखी री मन लै गयो	१२६
सखि यह अवध छयल	१३१
समुझु सजनी आशिक	१२३
सखि पश्य कोशल कान्त	६१
सरसों के कली सिया	४०
सांवला नैन बान मारा	१३७
सांवरे सलोनेजू सों	१३७
सांवरो रस के भरे तोरे	१४१
सिय सांवली को सखियाँ	१७
सिय मुखचन्द छवि	२७
सिय छबि बरनि सकै	१०७
सिय बनी को बना नित	१३०
सियवर छवि अवलोकु	१३५
सिय दुलहे से नयन जब	१४६
सिय स्वामिनि के मन	१५३
सिया प्यारी के सजन	२१
सियाराम की बाँकी	६६
सियजू के छैन मटकोर	१२
सियाजू आज बनी गोरे	१०६
सियाजू मोहि भरोस	१०८
सियाजू के दृग छवि	१११

पद	पृष्ठ
सियाजू के अरुणारे	१०६
सियाजू रानिन में	११०
सियजू की सर करि	११०
सिया के दुलहा मोह्यो	१४२
सिया के सजनमाँ संग	१४६
सियारानी का अचल	१५६
सुभग सुआसिनि समदि	१४
सुन्दरि नवेली ठाढ़ि	२६
सुख लीजै सुख लेवैया	३४
सुनिये रसिकराय	६१
सोभित सीताराम कनक	५६
सोहते कैसे हैं दुलहों पै	६४
सँवलिया तेरी कहर करै	१३१
सँवलिया के सोहत भौंह	१३२
स्वामिनी तोर सुहाग	१०६
स्वामिनी पद पंकज	११६
श्रीसिय प्यारी ए परम	११४
श्रीकिशोरी जी के अंगना	५६
श्रीकोहबरवा घरवा	७३
श्रीराघवलला छवि	१४६
शुभे शुभे होय चहुँओर	१६
श्याम सुन्दर रघुनाथ	१२५
श्याम सुन्दर मनमोहन	१३७
श्यामला पहुनमां बिन	१४८
ह	
हमारे माइ जनकललीजू	१०८
हमारे दृगन बसे रघुबीर	१३५
हमारी सिया सुन्दरता	११३
हिया बसु जिया बसु	१४६
हिनकर पच्छ आच हम	७५
हेयो पाहुन कृपा	४२
हे अवध छयल मनहरन	१५०
हे रघुबर राजकिशोर	१५३
है नौशय रुर रघुबर को	६५

❀ परिशिष्ट ❀

पद	पृष्ठ
अब पेन्हूँ गले जयमाल	२०४
आभा अभिराम हो	२०५
झाँकी झलकावहीं	२०५
स्वामिनी सियाजू	२०६
छबीली पिया छवि	२०६
सुगना जे हमरी	२०७
आजु मिथिला नगरिया	२०८

॥ श्रीमैथिलीमुखचन्द्रचकोराय नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीमते युगलानन्यशरणाय नमः ॥

श्रीमैथिली विवाह पदावली

आचार्य--वन्दना

वन्दौं गुरु परमेस जिनकी महिमा को कहै ।
थके गनेस महेस सारद सेष रमेस युत ॥
जिनके पद नख प्रभा से हृदय सुहोत प्रकास ।
नसत तिमिर सूझत हिये सिय पिय रहस विलास ॥
वन्दौं श्रीचन्द्रकला अली सकल सखिन सिरमौर ।
कृपा दृष्टि करिये हिये सूझै रहस हलोर ॥
वन्दौं श्रीचारुशिलादि अली रूप गुनन की खान ।
करुनाकरि हिय में वसो उपजावहु रस ज्ञान ॥
वन्दौं श्रीमन्मारुती जिन सम रसिक न आन ।
दया दृष्टि मोपै करो दरसावहु रस ज्ञान ॥
वन्दौं श्रीमज्जगद्गुरु श्रीरामानन्द महान ।
रसिकन पंकज के लिये उदित भानु भगवान ॥
श्री श्रीतुलसीदासजी भाविक महा उदार ।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि अवतार ॥

यहौ कहत सकुचत हिये हैं सिय पिय अवतार ।
जगद्गुरु विख्यात हैं जिन मानस रचि सार ॥
तिनके पद अरविन्द को वन्दौं बारम्बार ।
कृपा करो दरसै हिये सिय पिय रहस उदार ॥
श्रीमद्अग्राचार्य वर सब रसिकन सिरताज ।
रसिक साखि हित मेव ह्वै बरसायो रसराज ॥
वन्दौं तिनके चरन रज मम धन जीवन प्रान ।
निज लघु किंकर जानिके दरसावहु रस ज्ञान ॥
श्रीनाभा श्रीबालअली श्रीमधुराचार्य धुरीन ।
रामसखे हरि रूपसखी श्रीकृपानिवास प्रवीन ॥
श्रीरामचरन हरि रसिकअली श्रीयुगलप्रिया रसखान ।
श्रीयुगलानन्यशरनजू रसिकन जीवन प्रान ॥
श्रीजानकिवरशरणजू पण्डितवर्य महान ।
श्रीरामवल्लभाशरणजू और जे रसिक महान ॥
वन्दौं सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि ।
सब मिलिके करिये कृपा लघुतर किंकर जानि ॥
रहस चार दिन दिन बढ़े हरहु अरस अज्ञान ।
मम अभिलाष पुरावहु सब मिलि कृपा निधान ॥
जय जय जय श्रीजानकी जय जय अवध किसोर ।
जय जय दूलह वेष जू जय रसिकन सिरमौर ॥
सीय मांडवी उर्मिला श्रुतिकीरति वर वाम ।
चारि कुंवरि चारिहु कुँवर तुलसी करत प्रनाम ॥

पद--१

नमो श्रीअग्रस्वामि पद कंजु ।
प्रिय बानी रसिकन मनमोदक बोधक विपुल रासरस मंजु ।।
रसिकवर्य रसिकन मतमण्डन खण्डन असद विषय भ्रम पुंज ।
नमो श्रीजैति जैति प्रमोदवन पिय प्यारी संग रहसि निकुंज ।।
नमो श्रीजैति जानकीवल्लभ नाम रसिक रसनावलि गुंज ।
प्रीति रीति परतीति लली पद 'युगलप्रिया' हिय तमसि विधुंज ।।

श्रीमिथिलाजी की महिमा--पद--२

परम प्रिय पावन तिरहुत देस ।।
जहँ जनमी विदेहतनया श्रीसीता मंजुल वेस ।
जासों पावन भये रघुनन्दन रघुकुल कमल दिनेस ।।
जाग्यवल्क्य गौतम कनादमुनि कौसिक कपिल द्विजेस ।
अष्टावक्र व्यास सुत शुकमुनि परम शान्त सुचि वेस ।।
आय विदेहराज सों पायल ग्यान तत्व अनिवेस ।
महामहिम बोधायन उदयन वाचस्पति गंगेश ।।
शंकर मण्डन गोकुल द्विज जहँ शिवसिंह सदृश नरेश ।
मंजुल चंचरीक विद्यापति गुंजत काव्य हमेस ।।

विवाह मण्डप की रचना

पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । जे बितान बिधि कुसल सुजाना ।।
बिधिहिं बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनक कदलि के खंभा ।।
दो०—हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।
रचना देखि बिचित्र अति मन बिरंचि कर भूल ।।

वेनु हरित मनिमय सब कीन्हे । सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनक कलित अहिबेलि बनाई । लखि नहिं परइ सपरन सुहाई ॥
तेहि के रचि पचि बंध बनाए । बिच बिच मुकुता दाम सुहाए ॥
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥
किए भृंग बहुरंग बिहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥
सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं । मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़ी ॥
चौकें भाँति अनेक पुराई । सिंधुर मनिमय सहज सुहाई ॥
दो०—सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ।
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि ॥
रचे रुचिर वर बंदनिवारे । मनहुँ मनोभव फंद सँवारे ॥
मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥
दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि विचित्र बिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनि वैदेही । सो बरनै असि मति कवि केही ॥
दूलह राम रूप गुन सागर । सो बितान तिहुं लोक उजागर ॥
जनक भवन कै सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी ॥
जेहि तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं भुवन दसचारी ॥
जो संपदा नीच गृह सोहा । सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥
दो०—बसइ नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि वर वेष ।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेष ॥

मंगल देवाराधन पद—३

मंगल करन गणेश देव प्रथम मनाइये ।
देव श्रीरामलाल दुलहा सिया दुलहिन योग सुयोग बनाइये ॥

शंकर परम शुभंकर पद शिरनाइये ।
देव सिय रघुवर के संयोग सुयोग दिखाइये ॥
गोर लागू गौरि गोसाउँनि पग परूँ प्रेम से ।
देवी श्रीरामलाल दुलहा किशोरि दुलहिनि मोरिके राखोसदा क्षेमसे॥
वन्दौं श्रीदिनकर देवा जो काया के नाह हे ।
देवा हम कहँ बेगि दिखाइये सियाराम व्याह हे ॥
हाथ जोड़ि मांगौं वर नाथ माथ दीजिये श्रीरंगनाथ हे ।
देव तौ लौं रहैं सियाके सोहाग जबै लौं महि अहि माथ हे ॥
विनती करौं ग्राम देवा ओ देवीं दया करू हे ।
देवी सिया रघुवर के संयोग दिखाय आनन्द भरू हे ॥
देव पितर सन मांगहिं 'मोद' विनती करि हे ।
देवा प्रगट असीसहिं मातु लेहिं अंचल भरि हे ॥

श्रीरामललानहछू--सोहर छन्द--४ ✓

आदि सारदा गनपति गौरी मनाइय हो ।
रामलला कर नहछू गाई सुनाइय हो ॥
जेहि गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो ।
कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो ॥ १ ॥

कोटिन्ह बाजन बाजहिं दसरथ के गृह हो ।
देवलोक सब देखहिं आनंद अति हिय हो ॥
नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो ।
कौशल्या के हरष न हृदय समातै हो ॥ २ ॥

आजु हि बाँस के माँड़व मनिगन पूरन हो ।
मोतिन्ह झालरि लागि चहुँ दिसि झूलन हो ॥
गंगा जल कर कलस तौ तुरित मँगाइय हो ।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥ ३ ॥
गजमुकुता हीरामनि चौक पुराइय हो ।
देइ सुअरघ राम कहँ लेइ बैठाइय हो ॥
कनक खम्भ चहुँओर मध्य सिंहासन हो ।
मानिक दीप बराय बैठि तेहि आसन हो ॥ ४ ॥
बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो ।
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो ॥
अहिरिनि हाथ दहेंड़ि सगुन लेइ आवइ हो ।
उनरत जोबनु देखि नृपति मन भावइ हो ॥ ५ ॥
रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहिं हो ।
जाकी ओर बिलोकहिं मन तेहि साथहिं हो ॥
दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो ।
केसरि परम लगाइ सुगन्धन बोरा हो ॥ ६ ॥
मोचिनि बदन सँकोचिनि हीरा माँगन हो ।
पनहि लिहे कर सोभित सुन्दर आँगन हो ॥
बतिया सुघरि मलिनियाँ सुन्दर गातहिं हो ।
कनक रतनमनि मौर लिहे मुसुकातहिं हो ॥ ७ ॥
कटि कै छीन बरिनियाँ छाता पानिहि हो ।
चन्द्रबदनि मृगलोचनि सब रसखानिहि हो ॥

नैन विसाल नउनियां भौं चमकावइ हो।
देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो॥ ८॥
कौसल्या की जेठि दीन्ह अनुसासन हो।
नहछू जाइ करावहु वैठि सिंहासन हो॥
गोद लिहे कौसल्या बैठी रामहि वर हो।
सोभित दूलह राम सीस पर आँचर हो॥ ९॥
नाउनि अति गुन खानि तौ वेगि बोलाई हो।
करि सिंगार अति लोन तौ विहँसति आई हो॥
कनक चुनिन सों लसित नहरनी लिय कर हो।
आनन्द हिय न समाइ देखि रामहिं वर हो॥ १०॥
कानन कनक तरीवन बेसरि सोहइ हो।
गजमुकुता कर हार कण्ठमनि मोहइ हो॥
करकंकन कटि किंकिनि नूपुर बाजइ हो।
रानिकै दीन्हीं सारी अधिक विराजइ हो॥ ११॥
काहे रामजिउ साँवर लछिमन गोर हो।
कींदहुँ रानि कौसिलहि परिगा भोर हो॥
राम अहहिं दसरथ कै लछिमन आनक हो।
भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथक हो॥ १२॥
आजु अवधपुर आनन्द नहछू रामक हो।
चलहु नयन भरि देखिय सोभा धामक हो॥
अति वड़भाग नउनियाँ छूऐ नख हाथ सों हो।
नैनन्ह करति गुमान तौ श्रीरघुनाथ सों हो॥ १३॥

जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावइँ हो ।
सो पगधूरि सिद्धमुनि दरसन पावइँ हो ।।
अतिसय पुहुपक माल राम - उर सोहइ हो ।
तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहइ हो ।। १४ ।।
नख काटत मुसुकाहिं वरनि नहिं जातहिं हो ।
पदुमरागमनि मानहुँ कोमल गातहिं हो ।
जावक रचिक अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो ।
प्रभु कर चरन पछालत अति सुकुमारी हो ।। १५ ।।
भइ निवछावरि बहु विधि जो जस लायक हो ।
तुलसिदास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो ।।
राजन दीन्हें हाथी रानिन्ह हार हो ।
भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो ।। १६ ।।
भरि गाड़ी निवछावरि नाऊ लावइ हो ।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो ।।
तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो ।
होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिं हो ।। १७ ।।
गावहि सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो ।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ।।
हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो ।
नाउनि मन हरषाइ सुगन्धन मेलि हो ।। १८ ।।
दूलह कै महतारि देखि मन हरषई हो ।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरखई हो ।।

रामलला कर नहछू अति सुख गाइय हो।
जेहि गाये सिधि होइ परम निधि पाइय हो॥ १९॥
दशरथ राउ सिंहासन बैठि विराजहिं हो।
तुलसिदास बलि जाहिं देखि रघुराजहिं हो॥
जे यह नहछू गावैं गाइ सुनावइ हो।
ऋद्धि सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइ हो॥ २०॥

हरदी-बुकावन पद—५

मंगल आजु सुहावन अति मन भावन हे।
जुगल संजोग बढ़ावन हरदी बुकावन हे॥
मिथिला सुख सरसावन रस बरसावन हे।
दम्पति पद दरसावन हरदी बुकावन हे॥
परम प्रीति प्रगटावन लगन लगावन हे।
लाल लली उबटावन हरदी बुकावन हे॥
निरखत जग के छुड़ावन आवन जावन हे।
मोद हिये हरषावन हरदी बुकावन हे॥

तिलक चढ़ावन पद—६

आजु परम परमानन्द सजनी सोभा बरनि न जाय गे माई।
चारों कुमरजी के तिलक चढ़ावन विप्र मंडली आय गे माई॥
गाइक गोबर अँगना निपावल मोतियन चौक पुराय गे माई।
सजल कलस पर पल्लव दीपक वारि सुमंगल गाय गे माई॥
गनपति गौरि गिरीस ग्रामसुर श्रीरंगदेव मनाय गे माई।
त्रिभुवन तिलकहिं तिलक देत लखि सुर नभ जय जय छाय गे माई॥

मुख में पान नयन में काजर सुखमा अति सरसाय गे माई।
प्रमुदित मोद सकल दरसकगन चितवनि चखनि वसाय गे माई॥

पद—७

आजु तिलक चढ़ये रघुनन्दन के।
चारों कुँवर बैठे छवि छहरत होत सुमंगल तेहि छन के॥
पीत जनेऊ पिताम्बर धोती पहिरावत सब लालन के।
नारियर पान हरदि दधि दूर्वा द्रव्य भरल कर कंचन के।
पढ़ि पढ़ि वेदक मंत्र पुरोहित देलनि रघुकुलचन्दन के।
स्नेहलता शुभ तिलक चढ़ावति रचि रचि दशरथनन्दन के॥

धनवट्टी पद—८

मिथिला आजु सुमंगल सजनी घर घर आनन्द छाज।
अवध नृपति के ब्राह्मण अयलनि लगन बांटन केर काज।
लखितहिं नगर छटा छकि गेलनि मंगल रचनाक साज।
भेंटि यथोचित आदर कैलथिन शतानन्द महराज॥
मंगल गान सुनावय लगलनि हिलि मिलि सखिन समाज।
हरदि धान दूबि फेंटि सुबटलनि गह गहे बाजन बाज॥
करि सनमान दान बहु देलथिन निमिवंशिनि शिरताज।
मोदलता मन मुदित समाति न आनन्द उर महँ आज॥

धनवट्टी पद—९

धान बाँटि अवध से आयल गावथि मंगल मिथिलानी।
अवधक कुशल पूछथि हजमा से चतुर नारि छानि छानी॥
कहु कहु हजमा नृप दरशन के रहन सहन आनि बानी।

केहन हुनक छैन यश परतिष्ठा वैभव सुख सनमानी ।।
सुनि हजमा गद् गद् भय बाजल कहब कि हम अज्ञानी ।
अवध अवधपति के यश वैभव भुवन चारि दश घहरानी ।।
सहित सुनयना नारि जनकपुर धिया योग घर वर जानी ।
सनेहलता कुल देवक आगाँ राखल धान हरषमानी ।।

मटकोर पद--१०

आनन्द आज जनकपुर आनन्द आनन्द हे ।
माई हे सियाजू के आज मटकोर चहुँदिशि आनन्द हे ।।
आनन्द बाजन बाजत सखि सब आनन्द हे ।
माई हे आनन्द अमित अपार कुमरि चारू आनन्द हे ।।
उमा रमा ब्रह्माणि सबै मिलि आनन्द हे ।
माई हे गावति मंगल गीत सुनत मन आनन्द हे ।।
आनन्द फुल बरसावथि सुर सब आनन्द हे ।
माई हे चहुंदिशि जय जय होत श्रीनिधि आनन्द हे ।।

मटकोर पद--११

आँचर से झाँपि झाँपि लेल तियगन हे ।
चललीं सलोनी सिया कमला पूजन हे ।।
साजि-साजि अंग-अंग अपन अपन हे ।
चलि भेलीं सिया सखी आनन्द मगन हे ।।
धूप-दीप-माला-दूभि-तुलसी सुमन हे ।
साजि लेल डाला बिच अच्छत चानन हे ।।

गावथि सुमंगल गीत बाजत बाजन हे।
मुदित सनेहलता धिया मने मन हे ॥

पद--१२

सब सखियन मिलि चललीं पोखरिया हे सुहावन लागे, जनक लड़ैती संग सोहाय। मंगल कलशा लिहले तेल ओ अंकुरिया हे सु०, मंगल बजवा बजाय ॥ मंगल गीत गावे अति मनहरिया हे सु०, सुनि कलकण्ठ लजाय ॥ आनन्द बधावा बाजे बड़ अनमोलिया हे सु०, सुर सब फूल बरसाय। श्रीनिधि हाथ लिहले मणि के कोदरिया हे सु०, मटिया कोरन चलि जाय ॥

पद--१३

सियाजू के छैन भटकोर लखो री आली। सब मिलि आनंद विभोर॥
बड़े भाग से पावल समैया,
हरषि बजावहु आनंद बधैया, फुल बरसत चहुँओर।
सब सखियाँ मिलि मंगल गावति,
चारों कुँवरि पर बलि बलि जावति, बाजन बाजैं घनघोर।
झाँझ मृदंग बाँसुरी बाजै,
चहुँदिशि जय जय आनन्द छाजै, श्रीनिधि नाचत विभोर ॥

पद—१४

आई कमला पूजन जाथि सिया ॥
उमा, रमा, कमला, ब्रह्मानी जिनका सँ सभ प्रगटीया।
से सीता कमला सँ माँगथि श्याम सुन्दर वर पीया ॥

सलज भाव सोभथि तियगन में दिव्य कांतिवर कमनीया ।
केहि पटतर दय करब प्रसंसा उपमा नहिं कछु कथनीया ॥
गावथि गीत सुहागिनि सुन्दरि विप्रवधू अरु सुरतीया ।
स्नेहलता अनुपम छवि निरखथि रहि रहि उमगए हीया ॥

पद—१५

कमला पूजन चलि जाति हैं सिय चारों बहिनी ।
संग में सुहागिनि सुहाति हैं ॥ सिय० ॥
कनक थारनमां महँ अच्छत चाननमां, गूथी माल सुमनमां;
हरे हरे तुलसी के पात हैं ॥ सिय० ॥
धूप–दीप–नैवेद विविध फलनमां, लै लै बहु पकवनमाँ,
व्यञ्जन बनी हैं भाँति–भाँति हैं ॥ सिय० ॥
लखि-लखि सोभा सुर बरिसें सुमनमां, होय होय अंग पुलकनमां,
गावैं निमिवंसी गुन ब्रात हैं ॥ सिय० ॥
चुनि चुनि गावैं गारी, उमगति वर नारी, नाम लै वारी-वारी ।
मोद सुभ औसर सुहात हैं ॥ सिय० ॥

पद—१६

कहवाँ के पीअर मटिया कहाँ के कोदारि हे ।
कहवाँ के सात सोहागिनि माँटी कोरे जाइ हे ॥
कमला के पीअर मटिया सोने के कोदारि हे ।
मिथिला के सात सोहागिनि माँटी कोरे जाइ हे ॥
माँटी के कोरौनी बाबा किये देब दीन हे ॥

तोहरा के देवौंगे बेटी डालाभरि सोनमां हे।
पहुना के देवौंगे बेटी चढ़े लागी घोड़वा हे॥

पद--१७

सुभग सुआसिनि समदि सुनैनारानी,
निज गोतनिन बुलवाई री।
भूसन वसन सँवारि सुता चहुँ, कमला पूजन सिधाई री॥
परमानन्द पूरि सब सहचरि, मधु स्वर पञ्चम गाई री।
उमा, रमा, ब्रह्मानि आनि जुरि, मिलि सिय अलि बलि जाई री॥
बाजन बाजहिं अतिहिं सुहावन, शोभा वरनि न जाई री।
पाँवरे पर परसत पद पंकज, दरसत ललित लुनाई री॥
जाय निकट सिरनाय सबै मिलि, भाव सहित गोहराई री।
श्री कमला झट प्रगट असीसेउ, जयति-जयति जय छाई री॥
चारिउ कुंवरि यथाविधि पूजेउ, मनभावंति वर पाई री।
लै तट माँटि नाइ सिर चली सब, अंकुरी आदि कँटाई री॥
सुरतरु सुमन मुदित सुर बरषहिं, लखि रहस्य तरसाई री।
मोद सबै आनन्द अमाति न, मन-बुधि-चित न्यवछाई री॥

पद--१८

आइ करथि विधिवत वैदेही पूजन कमला तीर हे।
नारि वृन्द मिलि मंगल गावथि के कहे कतवा भीर हे॥
लोक लाज सँ सकुचित लोचन मुखमंडल गम्भीर हे।
हिय मन्दिर में रघुवर राजित पुलकित सकल शरीर हे॥

जिनका चरन कमल पर निर्भर जल थल गगन समीर हे।
से सीया कमला से मांगथि, दीन जकाँ तकदीर हे॥
विनय करथि पुनि पुनि कमला सँ तुव जस चहुंजुग थीर हे।
स्नेहलता किरपा करु वर दे होथि हमर रघुबीर हे॥

गारी पद १६

अहाँ के हम कौसल्या रानी कोन कोन दीअ गरिआ ये।
जिनका सभकेओ हरी कहै छथि अहाँ कहै छी हरिआ ये॥
आहाँक बेटा आहाँक बेटी दुनू बड़ व्यभिचरिया ये।
एक बिना नहिं एक रहै छथि एहन लाग लगरिआ ये॥
दुनु प्राणि अहाँ गोर गोरि छी बेटा मेलनि किय करिआ ये।
अही सँ त जानि परैए, अछि किछु फेरम फेरिआ ये॥
निज जमाय सँ यन्त्र-मन्त्र लय चमकैलौं सुत चरिआ ये।
शृङ्गीरिषि जग्य पूरन कैलनि जानइ सब संसरिआ ये॥
मोद उमगि उमगि कए गावथि अलिअन के महतरिआ ये।
आहाँक भाग धन-धन्य कौसल्या धन मोरी गोरी सँवरिआ ये॥

गारी पद २०

रानी कौशल्या अवितथि जखनहिं रानी कैकेयी अवितथि।
जन्म लेमक फल पवितथि जखनहिं रानी सुमित्रा अवितथि॥
जनक महल महँ डेरा करितथि कोमल पलंग ओछवितथि।
तोशक तकिया ललित सजवितथि विविध सुगंध सिंचवितथि॥
षटरस ब्यञ्जन रुचिर बनवितथि थार कटोरि धरवितथि।
सादर सीरध्वजहिं पठवितथि बिहँसैत बिअनि डोलवितथि॥

कमला जल आचमन करवितथि अंचल सँ अँगुछवितथि ।
प्रीति सहित मुख पान खोअवितथि वसननि अतर लगवितथि ॥
सुरंग दोसाल ओढ़ा ओढ़ि सुतितथि सरस प्रेम दरसवितथि ।
धैकर कर कंजनि परसवितथि मोद सुमुद सरसवितथि ॥

हरदी चढ़ावन पद--२१

शुभे शुभे होय चहुँओर सकल मिलि गावथि हे ।
मंगल हेतु (अमुकवावा) हरदी चढ़ावत हे ॥
जय जय होत चहुँओर सुयश घहरावत हे ।
मंगल हेतु (अमुकवावा) हरदी चढ़ावत हे ॥
वाजन धुनि घनघोर आनन्द वढ़ावत हे ।
मंगल हेतु श्री (अमुकवावा) हरदी चढ़ावत हे ॥
सुख उपजत चहुँओर सुमन सुर बरसत हे ।
मंग ल हेतु श्री (अमुकवावा) हरदी चढ़ावत हे ।
मंगल हरदी घोरावल मंगल मंगल हे ॥
छिरकि छिरकि सुख पाओल मंगल मंगल हे ॥
छविलखि प्रेम विभोर जनम फल पावथि हे ।
मंगल हेतु श्री सनेह बाबा हरदी चढ़ावत हे ॥

उबटावन पद—२२

आनन्द आजु महा मिथिलापुर शोभा वरनि न जाइ ए माई ।
चारो दुलहिनके अंग उबटावन हिलि-मिलि स्वासिनि आई ॥
गाई के गोवर अंगना निपावल नगजरि चौकी सजाई ।
गनपति गौरी मनाय यथोचित चारो कुंअरि बैसाई ॥

कंचन थार फुलेल औ उबटन सुगंध दसौदिसि छाई ॥
पंच सखी सुभ अंगन उबटहिं मधु स्वर पंचम गाई ॥
तन परसतहिं परा सुख सरसहिं हर्ष न हिये समाई ॥
यह रहस्य लखि सुरतिय तरसहिं बरसहिं सुमन सिहाई ॥
उबटि अमल अंग करि दृग काजर वासित पान पवाई ॥
मोद मगन इकटक छवि हेरहिं मन-बुधि-चित बिसराई ॥

श्रीकिशोरीजी का चुमावन पद—२३

सिय साँवली को सखियाँ चुमावति हैं,
मन्द मन्द मुसुकावति हैं ॥
दूवि धान धै धै सुभ अंगनि तिरछी नजरिया घुमावति हैं ।
हैं कि सती, कि सची, कि सरस्वती, विष्णुप्रिया,
कि रमा, रति' हैं ॥
डोला परसि झुला सिर सेहरा, दिव्य दमक दमकावति हैं ।
'मोद' के हियरा हलकत सजनी, जब तूं हुमकि दबावति हैं ॥

पद—२४

मिथिलापुर की नारि तोको श्याम ब्याहि लै जैहैं ।
सपन भयो यह मोहि सखी री मुनि संग आजुहिं ऐहैं ॥
तोरि धनुष जयमाल पहिरि उर तो संग भाँवरि लैहैं ।
सोच न कर अब जनक लड़ैती रघुबंसी वर पैहैं ॥
रास विलास प्रमोदविपिन में करि नित प्रति सुख दैहैं ।
जब तैं भवन मान करि बैठे तब करजोरि मनैहैं ॥

वेणी कल गुहिहैं फूलन सों जावक पगन लगैहैं ।
गोद जु लैहैं मोद बढ़ैहैं रुचि रुचि पान खवैहैं ॥
तेरे रंग पगिहैं निशिवासर तो बिन छिन न बितैहैं ।
रामसखे प्रभु रूप बावरौ मुख निरखत ही रैहैं ॥

वारात आगमन

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा ॥
ब्याह विभूषन विविध बनाइए । मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥
सरद विमल विधु बदन सुहावन । नयन नवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥
बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुअँर वर बाजि देखावहिं । बंस प्रसंसक विरिद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर राम बिराजे । गति बिलोकि खगनायक लाजे ॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा । बाजि वेष जनु काम बनावा ॥

छं०—जनु वाजि वेष बनाइ मनसिज राम हित अति सोहई ।
आपने वय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ॥
जगमगत जीन जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे ।
किंकिनि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दो०—प्रभु मनसहिं लयलीन मन चलत वाजि छबि पाव ।
भूषित उड़गन तड़ित घन जनु वर बरहि नचाव ॥
जेहि बरबाजि राम असवारा । तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥

पद--७५

अवध नगरिया से चलली बरिअतिया हे सुहावन लागे,
जनक नगरिया भैले सोर हे ॥ सु० ॥
सब देवतन मिलि चलले बरिअतिया हे सुहावन लागे,
बजवा बजेला घनघोर हे ॥ सु० ॥
बजवा सबद सुनि हुलसे मोरा छतिया हे सुहावन लागे,
रोशनीसे भइलवा अँजोर हे ॥ सु० ॥
परिछन चलली सब सखिया सहेलिया हे सुहावन लागे,
पहिरेली लहरा पटोर हे ॥ सु० ॥
कहत रसिकजन दुलहाके सुरतिया हे सुहावन लागे,
सुफल मनोरथ भैले मोर हे ॥ सु० ॥

परिछन

छंद०--अति हरष राजसमाज दुहुँदिसि दुंदुभी बाजहि घनी ।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥
दो०--सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल संवारि ।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि वर नारि ॥
विधुबदनी सब सब मृगलोचनि । सब निज तन छवि रति मदमोचनि
पहिरे बरन बरन बर चीरा । सकल विभूषन सजे ससीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाए । करहिं गान कलकंठि लजाए ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । चाल बिलोकि काम गज लाजहिं॥

बाजहिं बाजने विविध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगल चारा ।।
सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ।।
कपट नारि वर वेष बनाई । मिली सकल रनिवासहिं जाई ।।
करहिं गान कल मंगल बानी । हरष विवस सब काहु न जानी ।।

छं०—को जान केहि आनन्द बस सब ब्रह्म वर परिछन चली ।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली ।।
आनंदकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई ।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ।।

दो०—जो सुख भा सियमातु मन देखि राम वर वेष ।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेष ।।
नयन नीरु हटि मंगल जानी । परिछन करहिं मुदित मन रानी ।।

पद—२६

देखो-देखो री सब चारों सुन्दर वर,राजा दशरथजी के लाल माई हे ।
चारों कुमरि जोग आनि मिलौलनि, श्रीगौरी शंकर कृपाल ।।
सिर पै सुरंगी चीरा तुर्रा कलंगी हीरा, केशर खौर ऊँचे भाल ।
अजब अनोखी आँखि कजरा सुरेख रेखी, चितवत करत निहाल ।।
कुण्डल मनिनजर उलटे कपोल पर, बुलकनि करत कमाल ।
जियरा अरुझै लखि औरो न सूझै देखी,मुसुकत मुख दै रूमाल ।।
अँगुरिन छल्ला छाजै नख सिख रूप राजै,गरवामें गेरे मनिमाल ।
सौंपि संपत्ति साज राखैं विदेहराज, मिथिले इनहिं सब काल ।।

प्रेम बढ़ाय चाहे लोन पढ़ाय चाहे, लेवै बझाय मंत्रजाल।
'मोद' न तो वियोग बौरी हो विरह रोग, लागत जीवन जवाल ॥

पद—२७

रघुनन्दन आवहिं विलोकु सखियो,
नजर वाली अपनी नजर सम्हार रखियो।
जादू वाली अपनी जदुआ सम्हार रखियो,
टोना वाली अपनी टोनमा सम्हार रखियो ॥
माथे मनि मौरवा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
केशर की खोरवा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
नयनानि कजरवा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
जुलुमी नजरवा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
कुण्डल हलनमां विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
मंजु नासामनमां विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
श्याम गौर जोड़वा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥
मोद चितचोरवा विलोकु सखियो, न० ॥ जा० ॥ टो० ॥

पद—२८

सियाप्यारी के सजन दूजे मार सजनी, आकी दुलहा के वेष में शृंगार सजनी ॥ काम एक धनु पाँच वान वार स०, इनके अंग-अंग दिव्य हथियार स०। काम धावत फिरत पद चार स०, इतो चंचल तुरंग असवार स० ॥ भृकुटी भाल तिलक सम्हार स०, साजे धनु पर विशिष सुधार स० ॥ बाँके नयना मद भरे रतनार स०, चितवनियाँ बरछी कटार

स० ॥ कान कुण्डल ढाल झलकार स०; फाँसिवे को जाल जुलुफ पसार स० ॥ अधराधर सोहैं अरुनार स०, तामें विहँसनि तीखी तलवार स० ॥ कोई बचे चाहे छिपे अँधियार स०, नासामोती दुति करे उजियार स० ॥ आवे कतल करत नर नारि स०, नहिं थमत हटत बरियार स० ॥ जनि डरू नेहशीला हुशियार स०, हिनको से बली लाड़िली हमार सजनी ॥

पद—२६

दुलहा आये दुअरिया ए देखो देखो गोरिया ।
घोड़वा चढ़ल दुलहा आये दुअरिया, बाजा बजे घनघोरिया ॥
झुण्ड के झुण्ड आवे हाथी अमरिया, जोड़ी बग्गी घोड़ा घोड़िया॥
हुम हुम हुमकत आवे कहरिया, लिये कारचोबी खड़खड़िया ॥
रोशनी से राति लागे दिन दुपहरिया, छूटे स्वाइस धराधरिया ॥
परिछन करैं साजि सिया महतरिया, प्रेम मगन फिरिफिरिया ॥
देके रुमाल दुलहा हँसे मुख मोरिया मोद पै मारे नजरिया ॥

परिछन—पद—३०

पऊरि आये पाहुन परिछे चल री ॥

सुनो सुनो सुआसिनि, दम्पति की उपासिनि, सहेलिनि, खवासिनि, प्रीतम प्रेम प्यासिनि, चलो लेवैं सबै मिलि नयनफल री ॥
सम्हारि ले री डलवा, हरदि दूबीदलवा, रही दधी सुमलवा, सिला सेदेलु गलवा, चलो गावो मंगलवा सुकंठ कलरी ॥
उमा, रमा, सुभारती, सची हिया उमगावती, दरस को तरसती, बनाय वेष नरती, हिलि-मिलि के गावैं जावैं बलि बलि री ॥

द्वै श्यामल गोरवा, हैं चारों चितचोरवा, जगत सिरमौरवा,
के सोहैं सिरमौरवा, ठगोरी ठौर ठौरवा विलोकु भल री ॥
परिछै सब सासु री, कि हुलसि हुलासु री, हैं रोके प्रेम आसुरी,
हैं होश ना हवासु री, मोद प्रमोद पागी है न परै कल री ॥

मंगल गान पद—३१

मंगल आजु जनकपुर मंगल मंगल हे ।
मंगल तनेऊ वितान गान धुनि मंगल हे ॥
मंगल बाजन बाजहिं पुर नभ मंगल हे ।
मंगल वस्तु लए साजहिं मिलि सब मंगल हे ॥
मंगल मन्त्र उचारहिं महिसुर मंगल हे ।
मंगल तनु धरि धाय उमगि जनु मंगल हे ॥
मंगल दुलहिनि चारु दुलह चारों मंगल हे ।
मंगल व्याह उछाह मोद प्यारी मंगल हे ॥

पद—३२

आजु सियाजू के व्याह की लगनियाँ ए सखी घर—घर मंगल, बाजन बाजै घनघोर ॥ आय वरियात साजि विविध वाहनियाँ ए०, रघुकुलमनि सिरमौर ॥ सुनि ना परत सखी बतियाँ अपनियाँ ए०, जुरे अगवनियाँ अथोर ॥ लखि बरषावैं बहु सुरन सुमनियाँ ए०, जयति जयति करैं सोर ॥ मोद उमगि गावैं प्रेम मगनियाँ ए०, छवि छकि-छकि तृण तोर ॥

पद—३३

आजु जनकपुर घर-घर मंगल आनन्द अधिक उछाह गे माई।
सजि वरियात सुपुत्र विआहन ऐला अवध के नाह॥
हाट बाट महँ चहल पहल छाएल उमगि सवहिं उर माह।
रानी सुनयना के जाई जुड़ाउनि कैलनि सुखी सब काह॥
चारिउ कुमरि जेहने छथि तेहने बर चारिहुँ रूप धारि।
जानि परइ जनु चतुर विधाता रचलनि सोचि विचारि॥
हम सब प्रगट भाग्य वस भेलहुँ मिथिला अम्बाक गोद।
कोहवर बैसि सरस सुख लूटब प्रमुदित मोद विनोद॥

स्वस्ति वाचन

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्व वेदा।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥
विष्णोरराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि, विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ २॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधिः॥ ३॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभि-र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ४॥

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे

श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते अमुकदेशे, अमुकपुण्यक्षेत्रे, विक्रम सम्वत्सरे, अमुक संख्यके, अमुक नाम्नि सम्वत्सरे, अमुक अयने, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुक तिथौ, अमुकवासरे, अमुक नक्षत्रे श्रीसीताराम-विवाह महोत्सव निर्विघ्नतापूर्वक समाप्त्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं षोडशमातृकापूजनञ्चाहं करिष्ये ।

मात्रिका पूजा पद—३४

पुरहित चतुर सतानन्द मन्त्र पढ़ावथि हे ।
मात्रिका पूजथि रानि परम सुख पावथि हे ॥
सुरभी के गोवर मँगावथि ठाँव करावथि हे ।
पूजि प्रथम गणराजहिं कलश धरावथि हे ॥
पंच देवि पूजि रानि सुरक्षिका मनावथि हे ।
पूजथि निज कुल देवि बहुत गोहरावथि हे ॥
तियगण मंगल गावथि प्रेम जगावथि हे ॥
स्नेहलता ऐहो पूजन गावि सुनावथि हे ॥

घुरछक पद—३५

घुरछक की कलशा लयके चलीं सुआसिनि ए रसप्रीती माती, सजि लीनी सोरहो शृङ्गार ॥ पीतरंग सारी अंग सुबरन धारी ऐ०, भाल लाखी सिन्दुर सँभार ।। मांगलिक बाजन की गति पै पग धारे ऐ०, गान तान लाजैं सुरनार ॥ मङ्गल सुनाती उमगाती लखे आती ऐ०, रघुवंशिन सरदार ॥ भरि

भरि डलवा असरफी लए दीनी ए०, मोद चलीं गावति जय जयकार ॥

पद--३६

सुन्दरि नवेली ठाढ़ि धुरछक गावथि हे सुहावन लागे, सोने के कलशिया लेल माथ ॥ आनन्द वधावा बाजे नृप जनवासा हे०, दशरथ विराजथि सुत के साथ ॥ सुनल अवधपति दुलहाके स्वागत हे०, कलशा में देल मानिक सात ॥ तखन वशिष्ठमुनि देल अनुशासन हे०, करु जाय सियाके सनाथ ॥ गुरुके सनेहमय सुनि वर वचना हे०, चारु भाई चलला रघुनाथ ॥

जनवासासे दुलहाका अन्दर आगमन पद—३७

घोड़वा छमकावत आवै सांवला पहुनमां, देखु सहेलिया मोरि हे, मौरिया की अजब वहार ॥ ऊँचे रे लिलरवा पर लटकैं लट घुंघुररवा देखु०, जुलुमी नयनमां कजरार ॥ चिकने कपोलवा पर कुण्डल करैं किलोलवा देखु०, ओठवा अनुठवा अरुणार ॥ झुलकनि की हुलकनि लखि लखि हुलसेला मोरा छतिया देखु०, मुसुकनि बनावेला बेकार ॥ मोद न रुकिहैं संग रहि रैन दिन बिलोकिहैं देखु०, लोक लाज कुल कानि छार ॥

पद—३८

देखो देखो देखो सखी सांवला पहुनमां हे ।
जिनका देखैते सखी मोहि जात मनमां हे ॥

मिथिला की असही दुसही डारइना कहीं टोनमां हे।
ताते सहेली झट से दै दे दीठोनमां हे॥
घोड़वा गुमान भरे करइ फनफनमां हे।
जौहर जड़ित जीन जेवर झनझनमां हे॥
झुकि झुकि चुचकारैं झूलैं मौरन छोरनमां हे।
मानो दिव्य घन पर नाचैं विज्जु गननमां हे॥
भाल बिशाल पर तीन रेखनमां हे।
मनहुँ जनावइ तीनू लोक ना अइसनमां हे॥
भौहें कमनियाँ सखिया नयना चोखे बनमां हे।
मन मृग आपे आय होत कतलनमां हे॥
गोल गोल गाल पर डोलइ अलकनमां हे॥
मानो झुकि झुकि पूछइ केहि मन ठेकनमां हे॥
मुसकनि मद पीके डोलइ बौरी बुलकनमां हे।
बोलिया अमोलिया करइ अंग अंग पुलकनमां हे॥
मलवा अलबेलवा झुकि झुकि देवइ सिखनमां हे।
आओ आओ शरणियाँ इनके चाहो यदि कल्यनमां हे॥
जनके हित करते करते बाढ़ल कर कमलनमां हे।
अँखियाँ में रहते रहते श्याम भये रंगनमां हे॥
धन धन किशोरी मोरी जिन लागी ललनमां हे।
आपहीं से आय बने मिथिला मेहमनमां हे॥
जुग जुग जीवइ सखिया दुलहिन दुलहनमां हे।
मोद मंगल गावइ बरषइ सुमनमां हे॥

पद--३९

अवध नगर से जनकपुर आये दुलहा सुन्दर हे ।
मदन मोहन छवि निरखत लिये हिये अन्दर हे ॥
अनुपम सोहे सिरमौर भूषण पिताम्बर हे ।
अलक कुटिल भहुँवाँ धनु सम कमल नयन सर हे ॥
साजि-साजि कंचन थार लिये परिछन केरि नारी हे ।
आरती उतारैंलीं सुनयना रानी बीरी दै दै जादू डारी हे ॥
जोगी जन जतन करत हारे वस नाहीं भये हरि हे ।
परम सनेह करि जन हरिनाथ ताही वस करि हे ॥

पद--४०

लखो दशरथ कुमार बनरा बने आते हैं ।
रंगीले नर्म सखा संग में सुहाते हैं ॥
सवारी धूम धाम तुरंगों पर साज सजी ।
गयन्द मस्त मन्द मन्द चले आते हैं ॥
छरी औ छत्र चँवर विजनादिक कर लीन्हें ।
अनेक यन्त्र बजत बंदि सुजस गाते हैं ॥
अहै धन भाग सकल मिथिला नगर वासिन की ।
विलोकि तन मन धन वारि-वारि जाते हैं ॥
यही अभिलाष मधुपअली श्रीसियाजू की ।
बना रहे सुहाग सुख यही मानते हैं ॥

तंच सवद धुनि मंगल गाना । पट पांवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अरघ तिन्ह दीन्हा । राम गमन मंडप तब कीन्हा ॥

मण्डप गमन पद—४१

उतर जावैं यहीं लालन चलैं पैदल लली आँगन।
यहाँ से हो गमन पैदल चलें पैदल लली आँगन॥
अवधसे आये मिथिलामें कहाँ थी पालकी उस दिन।
न ठगिये की धनी हम हैं चलें पैदल लली आँगन॥
सवारी आपके जितने बराती लोग आये हैं।
सभी हैं, गैर से मँगनी चलें पैदल लली आँगन॥
चले आते सभी पैदल शरम की बात ही क्या है।
समझ ही गये समझ वाले चलें पैदल लली आँगन॥
ललन सुनि स्नेहमय चुटकी उतर गये पालकी तजकर।
मसल होने लगे उस दम चलें पैदल लली आँगन॥

आगे बढ़ने से पूर्व पद—४२

एकटा बात हमर कने सुनि लिय। इ विधि कए आगां पैर दिय॥
अइ ठामक ई विधिक प्रसिद्धि अछि, माय बहिनि के नाम लिय॥
पितु सँ सौगुन माय अधिक छथि, अपनहुँ देखु विचारि हिय॥
बिना नाम जनने जननी के, गौती कोना गितगाइन तिय॥
मोद मंद हँसि कहलनि मधु स्वर, ताकि तिरछि मुसुकाथि सिय॥

पद—४३

रतन जड़ाव के कील लागल हे, पहिरि चलल दुलहा राम हे, सोने के रचल, रूपे के रचल, पाँवरि हे॥ नयन कजरवा मुँहमां पान सोभे हे, जुलुमी जुलुफिया घुंघुरारि हे, माई अलि गइली, माई बलि गइली सुरतिया देखि के हे॥ कमल

नयनमां कजरार हे, माई अलि गइली, माई बलि गइली, चितवनियाँ देखि के हे। ओठवा अनुठवा अरुणार हे, माई अलि गइली, माई बलि गइली मुसुकनियाँ देखि के हे ॥ मोतिया के जोतिया उजियार हे, माई अलि गइली माई बलि गइली, बुलकनियाँ देखि के हे ॥ गरवा में कराठा उपरा चपकन सोभे हे, हाथ में धनुहियाँ लिहले ठाढ़ हे, अलबेलवा राजा, मतवलवा राजा, अवधवा वाला हे ॥ हाथ में रुमलिया लिहले ठाढ़ हें, मुँह पोछत जाला, कुछ सोचत जाला, खुरफतिया दुलहा हे ॥ चरण महावर उपरा पियरी धोती हे, सखिया कलशवा लिहले ठाढ़ हे, भाई बीकि गइली, बिकाई गइली, अवधवा जायब हे ॥

अन्दर प्रवेश पद--४४

चलु धीरे-धीरे लालन लली के अँगना ॥
ई अँगना जनि बुझू अवध के दौड़ल चलब मन मानत जेना।
कंचन के गच पर मरकत कियारी, गमला सजल सोभे हीरापना॥
बेली चमेली गुलाब गुलदाउदी, लाखों किसिम के फुलायल हीना।
रहथि वसंत सदा मिथिला में, तीसों दिवस बारहो महीना ॥
मध्य सतह मणिमण्डप राजित, तीन लोकमें उपमा बिना।
स्नेहलता लखि कुमर सराहथि, केवल अँगनमां के ई रचना॥

पद--४५

रघुवर धीरे धीरे चलिये लली की गलियां।
लखु खिलि रही कामिनी कुमुद कलियां ॥

मुखचन्द की चकोरिका चखनि अलियां ।
छवि छाकने दे छीने क्यों छयल छलिया ॥
नोखे नयननि नुकीले सुधि बुधि दलिया ।
फल पाइहौ किये का लखि सिय ललिया ॥
मन्द मन्द हँसि हेरैं गुनि भाव भलिया ।
मोद तन मन वारैं होय बलि बलिया ॥

पद—४६

आवू आवू आवू दुलहा अंगना हमार हे ।
अंगना में होयत दुलहा विधि सब तोहार हे ॥
एना किय चलै छी दुलहा सासुजी के घर हे ।
सासु सब हँसि देती चालि देखि तोहर हे ॥
नहुँ–नहुँ चलू दुलहा छोरू डेग नम्हर हे ।
सरहज दुलारी लेती नाक पकरि हे ॥
चुनि–चुनि सखिया सब पढ़ लगलनि गारि हे ।
चलहु न सिखौलकनि दुलहा के बहिनि छिनारि हे ॥
सारी के गारी सुनि हँसे चारू वर हे ।
रीझल कनकलता दुलहा ऊपर हे ॥

पद—४७

रघुवंशी रसिया रसहिं रसे । चलिये मण्डप सुख रस सरसे ॥
धरत चरण पांवड़े करिवर से, कथा जननीं जनमाय करि से ।
लालन सुनि चले डेग नम्हर से, जाय मनहुँ बाजी वर से ॥

चारों कुमर भये ठाढ़ अटर से, जनु गरलाय भये गिरिवर से।
मोद हारि हँसि गवने ठहर से, मुखनि रुमाल दिये कर से।।

पद—४८

आवू आवू आवू सखि देखु भरि नयना दुलहा श्यामला, मुखवा पर धैने छथि रूमाल।। चानन ललाट शोभे माथे मणि मौरिया दु०, गुलुमी जुलुफिया घुंघुराल ।। सुन्दरी धिया के जोग सुन्दर सलोना दु०, जोड़ी विधि रचल कमाल ।। एहन जमाय पावि धनि आइ मिथिला दु०, धनि-धनि जनक सुआल ।। निरखि स्नेहलता गावे एहो झाँकी दु०, आजु भेल जीवन नेहाल ।।

अन्दर परिछन

एहि विधि राम मंडपहिं आये। अरघ देइ आसन बैठाए ।।
छन्द—बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं।
मनि वसन भूषन भूरि बारहिं नारि मंगल गावहीं ।।
ब्रह्मादि सुरवर विप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकि रघुकुल कमल रवि छवि सुफल जीवन लेखहीं ।।

पद—४९

रानी ए रामजी अएलनि पहुनमां किछु आदरो करिऔन ना।
सादर सविधि सँवारि के प्रेमासन धरिऔन ना ।।
सुचि जल पगतल धोय के अंचल पद पोछिऔन ना।
ललकि ललकि मुख जोहि के राइ लोन निहुछिऔन ना ।।

मेवा मधुर मँगाय के अति हित अरपीऔन ना।
पुनि परम मिष्ट स्वादिष्ट विमल कमला जल दीऔन ना ॥
नख शिख भूषण साजि कै आँखि काजर लगविऔन ना।
भाल तिलक भरपूर कै मुख पान पवविऔन ना ॥
जानि पुत्र निज प्रेम से परिछन करि लीऔन ना।
पुलकित मोद विनोद सँ आशिष दय दीऔन ना ॥

पद—५०

आनन्द आनन्द आजु शुभे हो। पूरण भये मन काजु शुभे हो।
देखु दूलह रघुनन्द शुभे हो। सबहिन को सुखकन्द शुभे हो ॥
रसिक जनन कहँ प्रान शुभे हो। सुखमा शील निधान शुभे हो ॥
दुर्वाक्षत न्योछारु शुभे हो। दृष्टि सुधारि निहारु शुभे हो ॥
दधि केशर दिअ भाल शुभे हो। सुख लूटिअ अलि माल शुभे हो॥
नील दिठौना लगाऊ शुभे हो। राई लवण न्योछाऊ शुभे हो ॥
अंजन आँजिय आँखि शुभे हो। चितवनि लिय हिय राखि शुभेहो॥
बीड़ा सरस पवाऊ शुभे हो। अतर सुघ्रान कराऊ शुभे हो ॥
सिलवन सेदिय गाल शुभे हो। लखि लखि होई निहाल शुभे हो ॥
धन्य सियां सुख धाम शुभे हो। धन्य ई मिथिला ग्राम शुभ हो ॥
जिन प्रसाद हम वाम शुभे हो। पाय घरहिं घनश्याम शुभे हो ॥
लए चलु आँगन मांहि शुभे हो। चारो सुघर वर काहि शुभे हो ॥
मोद छकी चली संग शुभे हो। उमगित पुलकित अंग शुभेहो ॥

पद—५१

अलबेलो दुलहा रघुनन्दन देखत ही सबके मन वसि गये ॥

कुसुमी पाग मौर शिर सोहैं, कज्जल नयन पान मुख लसि गये ।
घुंघुरारी अलकैं लटके शिर, पीत दुपट्टा पै मन बसि गये ॥
पीताम्बर शुभ कटि में राजे, चरन महावर मोतियन गसि गये ।
द्विज दुनियाँ मणि यह छवि निरखे,सो सो प्रेम के फन्दामें फँसि गये॥

पद—५२

राजकुमर वर चार री सखियाँ छवि लखि ले ।
माथे मणिन की मौर मनोहर, झलकत झालरदार री, दीठोना निरख ले ॥ भाल विशाल केशर दधि अच्छत, कमल नयन कजरार री, चितवनि अमि चख ले ॥ ललित कपोल कलित कल कुण्डल, बुलकनि हुलनि बहार री, हेरि हीय हरख ले ॥ रूप यही सखि नयननि को फल, नाम इनहिं के सार री, जपि जीह परख ले । सीय कृपा यह मोद मिले तोहि, रघुवर प्राण अधार री, अब आँखों में रख ले ॥

मण्डप परिक्रमा पद—५३

सुख लीजै सुख लेवैया सुखसार आप आ गये ।
मिथिलेश आँगने में ह्वै चार आप आ गये ॥
चारों के गर में चादर लक्ष्मीनिधि धर सादर ।
सत फेर फिराते ही सर्वत्र साफ छा गये ॥
जिसका है सब पसारा जो सारहूँ को सारा ।
सो प्रेम वश विचारा कर सार के बँधा गये ॥

पद--५४

चादर पकड़ि एहि बरवा के सखी वेदी घुमाऊ ।
कहीं नजरि न लागे दुलहवा के सखी टोना बचाऊ ॥
कहीं ठेसो न लागे दुलहवा के सखी धीरे चलाऊ ।
कहीं मोह न दाबे ललनमां के झट बीध कराऊ ॥
आनन्दलता एहि बरवा के सखी वेदी घुमाऊ ।

कन्या निरीक्षण पद--५५

एही वर भैंसुरा के कइसे देऊँ गारी हे ।
भूषण वसन लायो बहुत सँवारी हे ॥
माँगटीका शीशफूल नथ जुत भारी हे ।
झुलनी झमकदार नासामणि प्यारी हे ॥
कर्णफूल कुण्डल झुमक दुति न्यारी हे ।
कण्ठा गोप सतलरी हँसुली हजारी हे ॥
दुलहिन जोग लायो सुन्दर मन हारी हे ।
चन्द्रहार हलक करत उजियारी हे ॥
बाजूबन्द बिजली सुझब्बा झलकारी हे ।
किंकिनि कमर कस सुन्दर पेटारी हे ॥
कड़ा छड़ा पायजेब पैजनी सुठारी हे ।
सारी देखो मोतियन झालर किनारी हे ॥
कनक सिन्होरा जामें लाल सेन्दुर धारी हे ।
'रामा' देखि मुदित सकल नर नारी हे ॥

दुल्हा के द्वारा कन्या निरीक्षण पद—५६

देल कमल कर पल्लव आमक पल्लव हे।
चिन्हू बाबू चिन्हू धनि आपन देखू जनि भूलब हे॥
रघुकुल के एक रीति तकर सुधि राखब हे।
हेरथि नहीं परनारि से अखनहिं जानब हे॥
चारु ललन चख चंचल चित करइ डगमग हे।
आइ असल थिक जाँच नृपति घर तिय लग हे॥
यद्यपि चारु कुमार कुलक पति राखल हे।
सखि सभ देल हहार ललन कहि हारल हे॥
स्नेहलता हँसि कहल सतत हारि जायब हे।
मिथिलापुरी के व्यवहार पार नहिं पायब हे॥

मण्डप पर दुलहिन का आगमन

समउ बिलोकि वशिष्ठ बोलाए। सादर सतानन्द मुनि आए॥
बेगि कुँवरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई।
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चली लवाई॥
चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुञ्जर गामिनी॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति वर बाजहीं॥
दो०—सोहति वनितावृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय।
छबि ललनागन मध्य जनु, सुषमा तिय कमनीय॥

सिय सुन्दरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई ॥
एहि बिधि सीय मण्डपहिं आई। प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥

पद—५७

सिय मुखचन्द छवि छाई चहुँओर हे।
प्रेम सिन्धु अंगना में उठत हिलोर हे ॥
बिबुध बिबुधतिय देखि भेलि भोर हे।
मिथिला के वासी सब आनन्द विभोर हे ॥
जदपि मदन सन अवध किशोर हे।
तदपि किशोरी मुख निरखि चकोर हे ॥
कहथि सनेहलता दुहुँ करजोर हे।
आबू सिया हिया बिच हमर निहोर हे ॥

तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू। दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ॥

अठौङ्गर

तत उदूखले धान्यन्निःक्षिप्याष्टौ ब्राह्मणाः मुशलं धृत्वा सहस्र-शीर्षेत्यादि षोडशर्च्चं न्त्रिः पठित्वा मुशलेन त्रिरवहत्याम्रपत्रे दधियुक्तन्तदक्षतादिकमादाय वर दक्षिण कर मूले, कन्यायाश्च वाम करमध्ये कङ्कणं वध्नीयुः।

पुरुष सूक्त

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्व्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेद ँ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्वँ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामंत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधिपुरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद् यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद् यज्ञात्सर्व्वहुतः ऋचः सामानि यज्ञिरे ।
छन्दा ॰ँ सि यज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ॰ँ शूद्रो अजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ॰ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ २ अकल्पयन् ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञन्तन्वाना अवध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याःसन्तिदेवाः ॥१६॥

पद—५८

अनका कहल किय अयला महल चारू लालन के पूछियौन हे ।
बान्हू सखी कसि बन्धन प्रबल कसि लालन के बन्हियौन हे ॥
मिथिला में घूमि घूमि टेढ़ी देखौलनि आइये घुसरतैन्ह
शेखी सकल कसि लालन के बन्हियौन हे ॥
चौदह भुवन जे अनका बन्है छथि बूझथु कतेक मैथिलानीमें बल ॥
बान्हि तखन दिऔन ऊखर मुसरवा आठ चोट गनि कूटथि सम्हलि
आइ धनमां कुटबियौन हे ॥ स्नेहलता किय चित के चोरौलनि
भोगथु अपन चितचोरी के फल ॥

पद—५९

चितचोरवा आजु बन्हौलनि ए, सब शान गुमान गमौलनि ए ॥
ई चितचोरवा के सिरमनि मौरवा, छोरवा छवि छहरौलनि ए ॥
ई चितचोरवाके चोखी दृग कोरवा, पार करेजवाके कैलनि ए ॥
ई चितचोरवाके लाली लाली ठोरवा, मनमोरवाके भरमौलनि ए॥
चोरवाके आठो अंग बान्हू कसि डोरवा,उधम अथोरवा मचौलनि ए
सोने के ऊखरवा मणिन के मुसरवा,आठे चोटे चउरवा बनौलनि ए

सेहेरे चउरवा बन्हाय शुभ करवा,सियप्यारी बरवा कहौलनि ए ।।
चोरवा के भाग्य पर मोद बलिहरवा, शुभ अठौङ्गरवा गौलनि ए ।।

पद--६०

मिथिला के नतवा से बढ़ि गेलै शान रे ।
हमरा नै चाहिय पाहुन जोग जप ध्यान रे ।।
मिथिला जनम भेल सुकृत महान रे ।
लाड़िली कृपा सँ पैलौं आहाँ सन मेहमान रे ।।
जिनकी कृपा से छूटै त्रिगुन महान रे ।
तिनका के कैलौं हम गाँठि से बंधान रे ।।
विश्वम्भर छथि विदित जहान रे ।
लाड़िली के अंगना में कूटै छथि धान रे ।।
हमरा नै चाहिय पाहुन धनुष अरु बान रे ।
हमरा तो चाहिय पाहुन मन्द मुसुकान रे ।।

पद--६१

सरसों के कली सिया जोति महान हे, तीसी फूल ।
रंग दुलहा सोहान हे तीसी फूल ।।
हियरा दिअटिया में नेहिया चुआन हे, रस रस ।
प्रान बतिया जरान हे रस—रस ।।
छवि माधुरी रस झहरि झहरान हे भींजि भींजि ।
सब सखियाँ नहान हे भींजि—भींजि ।।
सब जग भरल अन्हरिया महान हे, मोर अंगना ।
उगल चार चार चान हे, मोर अंगना ।।

जेकरा लागी जोगी मुनि वनमें धरे ध्यान हे, सोई प्रभु।
मोरा अंगना कूटे धान हे, सोई प्रभु॥
पाओल करील ऐसन मेहमान हे, अब कछु।
नहिं हिया अरमान हे, अब कछु॥

दुलहिनक नहछू पद—६२

नहछू करत लखि नाउनी नवेली सुरतिय तरसै लगलनि, निरखि नाउनी के सुभाग॥ सिय पद कंज चूमि आनंद में झूमि हिय अति हरषै लगलनि, उमगि उमगि अनुराग॥ लखि नख छीलनि सु ललित नहरनी सुरगन बरषै लगलनि, सुरतरु सुमन सुहाग॥ सरस सनेह काछि रंगि रंग रंगलनि, पगतल परसय लगलनि, दिय नेग निज पिय लाग। लाड़िली सुरुख लखि मगन नउनियाँ सबके दरसय लगलनि, रोम रोम मोद प्रेम पाग॥

पद—६३

जखने सिया के पग छुअल नउनियाँ हे जै जै कहु सिया के, लछमी विराजे हजमा द्वार॥ एक दुई तीनि चारि नव नख छीले हे जय० नवमणि से भरल भण्डार॥ अन्तिम सु नख छीलि सिया मुख ताके हे जय०, मनि घर सोने के देवार॥ बहुरि सुनयना दिसि निरखे नउनियाँ हे, जय०, देल दसलखवा गरके हार॥ मुदित सनेह भरि घर गेल नउनियाँ हे जय०, दुअरे पर झूलैं गज हजार॥

दुलहा का नहछू पद—६४

हे यो पाहुन कृपा कएक चरण पंकज कनेक दीय ।
ललित नख छौलि दुर्लभ लाभ शुभ लोचन के हम लीय ॥
हमर महतीनि के कन्या परम धन्या सिया भेली ।
जनिक परसाद सँ अपनहुँ जुड़ा रहलौं सबहिं जीय ॥
धनुष के टूक कैलौं बात से कछु मन में जनि राखी ।
अनायासहिं ऐली उठबैत बालहिंपन सँ श्रीसीय ॥
नृपति छथि गोर अपने श्याम से चरचा शहर भरि में ।
कहै छथि सब कहू कोना कहैत सकुचाइत अछि जीय ॥
नहछु के नेग में सरकार एतबै दिय दयालू होय ।
नाऊ संग में बसथि शान्ती वो हम भरि मोद संग पीय ॥

पद—६५

चरण सरोज धरि मचले नउनिआँ सुनु हे राघेजी, दिय किछु नहछू कराइ ॥ हमरा नै चाही किछु साड़ी चूड़ी आँगी सु०, नहिं चाही कंचन विदाइ ॥ श्रृंगी संगे शान्ता सुख बहुत उठौलनि सु०, चाही आब नउवा से सगाइ ॥ वृद्धदशरथजी के तीन पटरानी सु०, हजमा के एको न उपाय ॥ मांगथि सनेहलता चतुर नउनिआँ सु०, मन में विचारू चारू भाइ ॥

पद—६६

नउनियाँ के हाथे कनक नहरनी बदन निरेखे दुलहा राम के ।
काहे दुई दुलहा साँवर दुई दुलहा गोर हे ।
नोह काटु नोह काटु नाउनि अंगुरी जनि काटु हे ।
काहे तोर दुलहा साँवर तूँ काहे गोर हे ॥

देव पूजा

छं०—आचारु करि गुरु गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुख पावहीं॥
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो सब लिएहिं परिचारक रहैं॥
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर कियो।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंहासन दियो॥
सियराम अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै।
मन बुद्धि वर बानी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै।
दो०—होम समय तनु धरि अनल अति हित आहुति लेहिं॥
विप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं।

श्रीदुलहा का चरण प्रक्षालन

जनक पाटमहिषी जग जानी। सीय मातु किमि जाइ बखानी॥
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि विधि रची बनाई॥
समउ जानि मुनिवरन्ह बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई॥
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनी जनु मयना॥
कनक कलस मनि कोपर रूरे। सुचि सुगंध मंगल जल पूरे॥
निजकर मुदित रायँ अरु रानी। धरे राम के आगे आनी॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसरु जानी॥
वर बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥
लागे पखारन पांय पंकज प्रेम तन पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँदिसि चली॥

जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीं ॥
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई।
मकरंद जिन्हको संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥
करि मधुप मुनि मन जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ॥
वर कुँवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं।

शाखोच्चारः वर पक्षे

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः—जामातृ दक्षिण करोपरि कन्या दक्षिण करन्निधाय शाखोच्चारः कर्तव्यः।

सुरुचिरजलदाभं भावनाभावगम्यं
कनकनिकरभास्वज्जानकीवामभागम्।
स्मितशुचिमुखकान्तं कामिनीकामकारं
वर हृदय सरोजे नौमि रासेश्वरन्तम्।

स्वस्ति श्रीशरदिन्दुविन्दु मन्दमन्दार वृन्दारकशृँगारस्यन्दस्यन्द-वंद्यबन्दारुमारस्फारस्फूर्ति फलकालकावलीकतिलकालभालार्द्र-दीप्तद्युतिव्यास पर्याप्त पटलीक सन्निहितसंविदाधारैक वर्तुला-कारकमनीयकपोल देदीप्यमान स्वच्छप्रत्यक्षलक्षलक्षणाविलक्षणा-दर्शकृतकरणावतंसद्धै फणीशदोरंसान्तराललुलितंलुण्ठनासक्त शक्ति खरांशु विशितांशु ब्रह्माण्डभाण्डोदरी चञ्चलचमत्कारशाल्यु-न्मिलितादक्षाक्षिघूर्णिताऽघटनापटीयोमनुमहाराजाधिराजहंस-वंशावतंस मतिमत्सतत सुखापारपारावार धरांधरोत्तुङ्गरसाधार

मधुरधुरन्धर नर नटवर नागरतर कविगुरुगणपदविफलयुपम भायापति रतिपति चक्षुर्भषभखमारण मृगकञ्जखञ्जखञ्जन-निरंजनाञ्जनाम्बलीढाम्बकाऽऽनुक्रोश कटाक्षाश्रयोपयुक्तानुरक्त भक्त भूपालेन्द्र कोशलेन्द्रमणिरामनामाभिराम गुणगृणत्कण्ठता नन्दकन्दामन्दपद द्वन्द्वाब्जं विजयतेतराम् ।

अव्यक्त प्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्य अव्ययः ।
तस्मान्मरीचिः संजज्ञे मरीचेः कश्यपः सुतः ॥
विवस्वान्कश्यपाज्जज्ञे मनुर्वैवस्वतः स्मृतः ।
मनुः प्रजापतिः पूर्वमिक्ष्वाकुश्च मनोः सुतः ॥
इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान्कुक्षिरित्येव विश्रुतः ।
कुक्षेरथात्मजः श्रीमान्विकुक्षिरुदपद्यत ॥
विकुक्षेस्तु महातेजा बाणः पुत्रः प्रतापवान् ।
बाणस्य तु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान ॥
अनरण्यात्पृथुर्जज्ञे त्रिशंकुस्तु पृथो सुतः ।
त्रिशंकोरभवत्पुत्रो धुन्धुमारो महायशः ।
धुन्धुमारान्महातेजा युवनाश्वो व्यजायत ।
युवनाश्वसुतश्चासीन्मान्धाता पृथिवीपतिः ॥
मान्धातुस्तु सुतः श्रीमान्सुसन्धिरुदपद्यत ।
सुसन्धेरपि पुत्रौ द्वौ ध्रुवसन्धिः प्रसेनजित् ॥
यशस्वी ध्रुवसन्धेस्तु भरतो नाम नामतः ।
भरतात्तु महातेजा असितो नाम जातवान् ॥

सगरस्यासमञ्जस्तु असमञ्जादथांशुमान् ।
दिलीपोंऽशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः ॥
भगीरथात्ककुत्स्थश्च ककुत्स्थस्य रघुः सुतः ।
रघोस्तु पुत्रस्तेजस्वी प्रवृद्धः पुरुषादकः ॥
कल्माषपादोऽप्यभवत्तस्माज्जातस्तु शंखणः ।
सुदर्शनः शंखणस्य अग्निवर्णः सुदर्शनात् ॥
शीघ्रगस्त्वग्निवर्णस्य शीघ्रगस्य मरुः सुतः ।
मरोः प्रशुश्रुकस्त्वासीदम्बरीषः प्रशुश्रुकात् ॥
अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून्नहुषः पृथिवीपतिः ।
नहुषस्य ययातिश्च नाभागस्तु ययातिजः ॥
नाभागस्य बभूवाजो अजाद्दशरथोऽभवत् ।

[हिन्दी भाषा में शाखोच्चार]

गुरु पद पदुम पराग वंदि गणनाथ मनावौं ।
शेष शारदा वंदि शंभु पद शीश नवावौं ॥
दिव्य सच्चिदानन्द राम जेहि कुल महँ प्रगटेउ ।
नव दूलह वर वेष धारि एहि मंडप हुलसेउ ॥
वंश वखान सुजानवृन्द सन आज सुनावौं ।
सियदूलह की कृपाकोर मति निर्मल पावौं ॥
प्रथम विष्णु के नाभि कंज प्रगटेउ चतुरानन ।
तिन ते भये मरीचि ताहि सुत कश्यप तप धन ॥
विवस्वान महराज ताहि सुत मनु भए सुन्दर ।
श्रीइक्ष्वाकु प्रसिद्ध ताहि सुत भए तदनन्तर ॥

श्रीविकुक्षि ते बाण ताहि अनरण्य महाबल।
श्रीपृथु पुत्र त्रिशंकु ताहि सुत धुन्धुमार बल॥
युवनाश्वात्मज मान्धाता सुत सन्धि विमल यश।
श्रीध्रुवसन्धि भरत सुत असित सगर असमंजस॥
अंशुमान सुत श्रीदिलीप सुत भए भगीरथ।
श्रीककुत्स्थ सुत श्रीरघुसुत कल्माषपाद वर॥
श्रीशंखण के भये सुदर्शन अग्निवर्ण तेहि।
शीघ्रग के मरु भये प्रशुश्रुक अम्बरीष जेहि॥
श्रीमत् नहुष ययाति ताहि नाभाग समुज्वल।
श्रीअज के भये महाभाग दशरथ कुल कुण्डल॥

तिनके सुख धाम अभिराम लोक लोचन के,
शंभु हिये मानस मराल गुन खान हैं॥
सच्चिदानन्द घन शीलनिधि कोमल चित,
प्रेमी बश प्यारे उदार अ समान हैं॥
ब्याह साज साजे मध्य मण्डप विराजे,
काम देखि जाको लाजे साजे भौंह के कमान हैं॥
श्रीराम, भरत, लषन, शत्रुघ्नलाल,
सुख के देवैया चारों नवसे जन प्रान हैं।

तस्य पुत्रः सुठिमाधुर्यमूर्तिसौम्य श्रीरामचन्द्रः, राशिनाम हिरण्यनाभ इति। सूर्यवंशावतंस सच्चिदानन्दघन परात्पर-पूर्णब्रह्मपरेश समस्तलोक लोचनाभिराम सुखधाम परमोदार परमब्रह्म परमात्मा॥

स्वस्ति श्रीमत्सकल जगदघध्वंसन परमोदार विनोदविचार सदाचार सच्छास्त्राध्ययन विद्वज्जनगोष्ठीप्रकाश वशिष्ठगोत्र वाशिष्ठैकप्रवर श्रीमन्नाभागवर्मणः प्रपौत्रः १, श्रीमदजवर्मणः पौत्रः २, श्रीमद्दशरथवर्मणः पुत्रः ३, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये । स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वरकन्ययोर्मंगलमास्ताम् । इति वरपक्षे वारत्रयं पठेत् ।

अथ कन्या पक्षे

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जयति जनकजायाः पादपद्मं मनोज्ञं
हरिहर विधिवंद्यं साधकानां सुसेव्यम् ।
नखर निकरकान्तं मुद्रिका नूपुराद्यैः
वर मुनि हृदि मध्ये योगयोगीश भाव्यम् ॥

ॐसिद्धि श्रीसर्वेश्वरी पदपद्मपरागमकरन्दास्वादित द्विरेफस्फूर्दि-स्फारफलकालभालालबालतिलकालकावलीकवरविलसद्दियद्रसाध-रणीधुरेन्द्रदुहिणपरहीन पटुतैक प्रभुतालताऽमुधामुधाबसुधा सुधावलोत्तुङ्ग तमालतारुण्यतर सञ्चिताकुञ्चितमेचककचान्वित-मुख सुखमा-अपार नटवरमणिनागर दशरथकुमार जानकी सुखसञ्चित भ्रमरो विजयतेतराम् ॥

राजाभूत्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा ।।
निमिः परमधर्मात्मा सर्वसत्त्ववतां वरः ।
तस्य पुत्रो मिथिर्नाम मिथिला येन निर्मिता ॥

प्रथमो जनको नाम जनकादप्युदावसुः ।
उदावसोस्तु धर्मात्मा जातो वै नन्दिवर्धनः ॥
नन्दिवर्धनपुत्रस्तु सुकेतुर्नाम नामतः ।
सुकेतोरपि धर्मात्मा देवरातो महाबलः ॥
देवरातस्य राजर्षेर्बृहद्रथ इति स्मृतः ।
बृहद्रथस्य शूरोऽभून्महावीरः प्रतापवान् ॥
महावीरस्य धृतिमान्सुधृतिः सत्यविक्रम ।
सुधृतेरपि धर्मात्मा धृष्टकेतुः सुधार्मिकः ॥
धृष्टकेतोस्तु राजर्षेर्हर्यश्व इति विश्रुतः ।
हर्यश्वस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रतिन्धकः ॥
प्रतिन्धकस्य धर्मात्मा राजा कीर्तिरथः सुतः ।
पुत्रः कीर्तिरथस्यापि देवमीढ इति स्मृतः ॥
देवमीढस्य विबुधो विबुधस्य महीध्रकः ।
महीध्रक सुतो राजा कीर्तिरातो महाबलः ॥
कीर्तिरातस्य राजर्षेर्महारोमा व्यजायत ।
महारोम्णास्तु धर्मात्मा स्वर्णरोमा व्यजायत ॥
स्वर्णरोम्णास्तु राजर्षेर्ह्रस्वरोमा व्यजायत ।
ह्रस्वरोम सुतः श्रीमान् शीरध्वज इति स्मृतः ॥

[श्रीमद्बाल्मीकिरामायणे]

[हिन्दी भाषा]

श्रीगुरु मूरति हृदय धारि गणपति शिर नावौं ।
गिरिजा शंभु प्रसाद पाइ निमिकुल गुण गावौं ॥

जेहि कुल महँ श्रीपराशक्ति मिथिलेशललीजू ।
प्रगटी करुणाधाम भगत हित कमलकली जू ॥
निमि सुत श्रीमिथिराज ताहि सुत प्रथम जनक जू ।
उदावसु महाराज नन्दिवर्धन सुकेतु जू ॥
देवरात सुत भये बृहद्रथ महावीर पुनि ।
श्रीसुधृति सुत धृष्टकेतु हर्यश्व तासु सुनि ॥
श्रीमरु पुत्र प्रतीन्धक तेहि सुत भये कीर्तिरथ ।
देवमीढ महाराज विबुध सुत भये महीध्रक ॥
कीर्तिरात सुत भये महारोमा शुभ यशध्वज ।
स्वर्णरोम सुत ह्रस्वरोम के भये शिरध्वज ॥

ताहि की लड़ैती सुकुमारी शोभा शील खानि,
जाको मुखचन्द्र देखि चन्द्रहुँ लजात हैं ।
रूप की उजारी देखि दामिनीहू फीकी परैं,
भूषण अनेक अनमोल सोहैं गात हैं ॥
उमा रमा शारदा न उपमा में आवैं नेकु,
रति सत कोटिहुँ की कहै कौन बात है ।
जानकी माण्डवी उर्मिला श्रुतिकीरतिजू,
चारों दुलहिन आज अतिहिं सुहात हैं ॥

तस्य पुत्री सुजवसुकुमारांकुरजिता सौम्या श्रीसीता । राशिनाम-हेमलतिका । निमिसूर्यकुल चूड़ामणि सुनयना प्रियमाधुर्य मिश्रितैश्वर्यालंकारालंकृता निजपति परिचर्या विलासिनी जगदीशिनी शर्वरीशिनी परमपरमेश्वरी ।

स्वस्ति श्रीसत्सदाचाराचरण परिलब्ध गरिष्ठादि मुनिगण जेगीयमान यशश्शरच्चन्द्रकरधवलीकृत जगत्त्रयस्य गौतम गोत्रस्य गौतमाङ्गिरसाप्यायेति त्रिप्रवरस्य श्रीमत्स्वर्णरोमवर्मणः प्रपौत्रीं १, श्रीमत् ह्रस्वरोमवर्मणः पौत्रीं २, श्रीमत् शीरध्वज-वर्मणः पुत्रीं ३, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये । स्वस्ति सुवासो-भूपयोर्वरकन्ययोर्मंगलसास्ताम् इति कन्यापक्षे वारत्रयं पठेत् ।

कन्यादान

भयो पानि गहन बिलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनन्द भरैं
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तन हुलस्यो हियो ।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषन कियो ॥
हिमवन्त जिमि गिरिजा महेसहिं हरिहिं श्री सागर दई ।
तिमि जनक रामहिं सिय समरपी विस्व कल कीरति नई ॥
क्यों करैं विनय विदेह कियो विदेह मूरति साँवरी ।
करि होम विधिवत गांठि जोरी होन लागी भाँवरी ॥
दो०—जय धुनि बंदी वेद धुनि मंगल गान निसान ।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥

पद—६७

धनि धनि सुनयनाजी के अंगनमां दुलहिन दुलहनमां ॥
मिथिला के मान सरोवर मण्डप अति पावन सुन्दर,
ताहि बिच हंसिन ओ हंसनमां ॥ एक दिसि मौरिया लर बाढ़े
एक दिसि घूँघट पट काढ़े, तरे तर नयना के छिटकनमां ॥
दुनु के सजीवन मूरी भेल छथि सियाजीक चूरी, सरसिज

पर सरसिज के सुमनमां ।। फाटल विदेहक छतिया पागल सनेहक गतिया, कौने विधि गावें पानि गहनमां ।।

पद—६८

जँघिया चढ़ाय बाबा बैसला मण्डप पर बाबा करू न धीया दान हे। वर करकंज तर लली कर ऊपर ताही में सोहत फूल पान हे ।। गुरु वशिष्ठजी मंत्र उचारथि मंत्र पढ़त श्रीराम हे। सब सखियन मिलि मंगल गावै फुल बरसत देव बहु बार हे ।। सुसुकि सुसुकि रोवै मातु हे सुनयना आब बेटी भेल मोर विरान हे। जाही बेटी लागि हम नटुआ नचौलौं सेहो बेटी भेल मोर विरान हे। चुपे रहु चुपे रहु मातु हे सुनयना इहे थिक जग व्यवहार हे ।।

गठवन्धन पद—६६

त्रिभुवनपति रामचन्द्र वर सखि मन रंजन हे।
ललना हे दुलहिन सिया सुकुमारि पड़ल गठबन्धन हे ।।
प्रेम फाँस थिक बन्धन आमक कंगन हे।
ललना हे कनकबेलि सिया ताग सुमाल रघुनन्दन हे ।।
वर दुलहिन एक संग बैसल सुभ आसन हे।
ललना हे सुरगन बरसत फूल बजत नभ बाजन हे ।।
लतिका सनेह सोहागिन गावति मंगल हे।
ललना हे युगे युगे जीवे चारु दम्पति मिथिला सुमंगल हे ।।

भाँवरी

कुँअर कुँअरि कल भाँवरि देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं ।। जाइ न वरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ।।

राम सीय सुन्दर प्रति छांही । जगमगात मनि खंभन्ह मांही ॥
मनहुँ मदनरति धरि बहु रूपा । देखत राम विआह अनूपा ॥
दरस लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भए मगन सब देखनिहारे । जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी । नेग सहित सब रीति निवेरी ॥

दुलहिन आगे वार त्रय, चारि वार नृपचन्द ।
चौथे में गठबन्धन करि, लूटैं अलि आनन्द ॥

पद--७०

चारों दुलहा देहिं भामरिया ए, संग सोहति दुलही नागरिया ए ॥ श्याम गौर गौर श्यामा चारों जोड़ा जोड़िया,हरेहरे होत चहुँओरिया ए ॥ शिरनि पै सोहैं मणिन मौर मौरिया, दामिनि की छवि छीनै छोरिया ए ॥ रतनारी कजरारी अजब अँखरिया, लखितहिं करे बेखबरिया ए ॥ अंचल चदरिया में परीहैं गठरिया,बांधे हैं कि बूटी बसकरिया ए ॥ नवरंग मणिन की सुपली सोहरिया,लावा छिरियावैं भरि भरिया ए ॥ उमगि उमगि गावैं अलिगन गरिया, सुख सरसत बंसुमरिया ए॥जयति जयति जय जय होत सोरिया,सुर करैं सुमनकी झरिया ए ॥ परैं मनि खम्भन्हि में दम्पति छहरिया, जागै जोति जगर मगरिया ए ॥ मानो रतिपति जानि पितु महतरिया, प्रगटि दुरत बेरि बेरिया ए ॥ फूली न समाति लखि मोदिया किंकरिया, लली लाल लखनि लजोरिया ए ॥

पद--७१

ई छैला अवध के अन्हरिया, हमार सिया पूनम अँजोर ॥

सिय छवि छाँह छुअत वसनन्हि छनि, हरिवर होत सँवरिया ॥
घूँघट ओट छटा छिन निरखत, विसरत देन भँवरिया ॥
सहमि सकुचि झुकि उझकि चकित चलि, चाहत छवि दृग भरिया ॥
मनि खम्भन्ह प्रतिबिम्ब कबहुँ लखि, टारत नाहिं नज़रिया ॥
भाँवर देत जोरि अनुपम छवि, लखि करील वलिहरिया ॥

सेन्दुर दान

राम सीय सिर सेन्दुर देहीं । नयन लाभ सब सादर लेहीं ॥
अरुन पराग जलज भरि नीके । ससिहिं भूष अहि लोभ असीके ॥

पद—७२

कौने नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर बेचे आयल हे ।
आगे माइ कौने नगर के कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे ॥
अवध नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर बेचे आयल हे ।
मिथिला नगर के कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे ॥
कौने रंग रसिया जे बरवा से सिन्दुर चढ़ावल हे ॥
कौने धीया वारी सुकुमारी से सिन्दुर सँवारल हे ॥
श्याम रंग रसिया जे वरवा से सिन्दुर चढ़ावल हे ।
सिया धीया वारी सुकुमारी से सिन्दुर सँवारल हे ॥
जय जय होत चहुँओर सुमन बरसावल हे ।
कदमलता पद गावल सुनि सुख पावल हे ॥

पद—७३

प्रिय पाहुन सिन्दुर दान करू ।
ई अवसर नहिं लाज करक थिक एखन न किछु हठ मान करू ॥

सिय सिन्दुर कर कमल मुदित चित हमर कथा किछु कान धरू ।
लग्न मुहूर्त्त सुमंगल एखन अब न विलम्ब महान करू ॥
गाइनिगन अहूँ तानि मधुर धुनि शुभ शुभ मंगल गान करू ।
दामोदर विधि आजु मुदित चित वर कन्या कल्यान करू ॥

दूर्वाक्षत

ॐ आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्रीधेनुर्वोढा–ऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णु रथेष्ठा सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् । योगक्षेमो नः कल्पन्ताम् ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

चुमावन पद—७४

चुमावत हो ललना धीरे धीरे ॥
कंचन थार सम्हार सुआरति घुमावत हो ललना धीरे धीरे ।
मंगल गाइ सुनयनाजी आई चुमावत हो ललना धीरे धीरे ॥
सरहोज आई महल से दौरी बजावत हो बिछिया धीरे धीरे ।
प्रेम सहित सेकि सेकि कपोलन रिझावत हो दुलहा धीरे धीरे ॥

मण्डप की झाँकी

बहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुशासन । वर दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छं०—बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भए।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नए॥
भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाह भा सबहीं कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यह मंगल महा॥
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लईं हँकारि कै॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत्त करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई॥
जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्हीं ब्याहि लखनहिं सकल बिधि सनमानि कै॥
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप सील उजागरी॥
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं॥
सुन्दरीं सुन्दर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं॥
दो०—मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि॥

पद—७५

सोभित सीताराम कनक मण्डप तरे।
सिर सोने को मौर मंजु मुक्ता गरे॥

परसत अमल कपोल सुमुक्ता मौर के।
राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर के ॥
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुइ रह्यो।
मनहुँ अरुन घन मध्य चपलता चुइ रह्यो ॥
सिय भूषन प्रतिबिंब राम छबि उर धरे।
मनहुँ जमुन जल मध्य दिव्य दीपक बरे ॥
राम भुजा के निकट सीय भुजा यों लसे।
मरकत मनि कर खंभ मनहुँ कंचन कसे ॥
राम भये घनश्याम सिया भइ दामिनी।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी ॥
राम भये तन गौर सिया भइ साँवरी।
सारद सी बुधिवन्त बधू भइ बावरी ॥
पुष्पन बरसत मेघ मेदिनी थर हरे।
होत जनकपुर ब्याह राम भाँवरि फिरे ॥
सुर नर मुनि आनन्द सुमन बरषा करे।
सिव ब्रह्मादिक देव मुदित जय जय करे ॥
राम सिया को ध्यान सदा संकर धरे।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे ॥
यह छवि युगलकिशोर सु मुनिजन ध्यावहीं।
लखि लखि विमल विनोद वेद जस गावहीं ॥
जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहीं।
परसि सिया पद पद्म परम पद पावहीं ॥

तुलसी सीताराम सदा उर आनिये ।
राम भजन बिन जन्म वृथा करि मानिये ॥

पद—७६

नारि सुभग मण्डप तर मंगल गावहीं ।
सुनि सुनि सीताराम बहुत सुख पावहीं ॥
काल करम गति छेकि इहै छवि नित रहौं ।
निरखि निरखि सब लोग महा सुख के लहौं ॥
राम केशरिया पट सजे सिया लाल को ।
दुऔ प्रीति के रंग रंगे यहि चाल को ॥
राम बसत नित सीय में राम में सीय हैं ।
दोउन के पट कहत दोऊ एक जीय हैं ॥
प्रथम चऊथ औ बीच के अच्छर जोरि कै ।
ए दोउ तारक सीम छनत रस घोरि कै ॥
मिथिला जाउ अवध कि अवध इहाँ आवहिं ।
दिन बिछोह कर हम कहँ विधि न देखावहिं ॥
सरबस राज अरपि नृप राखहिं राम के ।
नाहिं त होइहैं विदेह जथारथ नाम के ॥
नित विहार सियाराम को दोऊ ठाऊँ में ।
देव करिहिं एहि भाँति कुशल दोउ गाऊँ में ॥

पद—७७

चारों दुलह चारों दुलहिन बैठे मण्डप तर हे ।
जगमग जगमग जोति निरेखो नयन भर हे ॥

मौरिया की झालर झलकत मुख छवि छलकत हे ।
सकुचि परस्पर चितवत हुलसत पुलकत हे ॥
बड़का दुलह घनश्याम दुलहिं जनु दामिनि हे ।
मझिला दुलह ज्यों तमाल कनकलता कामिनि हे ॥
सँझिला दुलह तन गौर सु मनहुँ निशाकर हे ।
दुलहिनि साँवरि रंग अधिक सुषमा भर हे ॥
अति कोमल लघु दुलह दुलहि नहिं जाति कहि हे ।
कनक कदलि ढिग श्याम वेलि जनु फवि रहि हे ॥
नील पीत रंग हिलि मिलि औरे रंग सरसत हे ।
सकल बराति सराति हरित रंग दरसत हे ॥
धन्य भाग रघुनन्दन पायउ सिय तिय हे ।
धन्य किशोरी के भाग्य भयउ रघुबर पिय हे ॥
हम सब धन्य धन्यतर बर सुख लूटेउ हे ।
प्राननाथ के साथ नात भल जूटेउ हे ॥
कोउ छवि लखि तृण तोरति राई लौन वारति हे ।
कोउ सखि दम्पति मूरति हिय बीच धारति हे ॥
निरखि सुमन सुर बरसत हरषत तरसत हे ।
मोदलता तन मन वारि दम्पति पद परसत हे ॥

पद—७८

श्रीकिशोरीजी के अंगना विलोकू बहिना ।
छवि शशि मुख राम छविनिधि जानकी, रचल विधना,
कने ओम्हरो निहारू तीनू जोरीं तहिना ॥ माण्डवी चकोरी

संग भरत चकोरवा विराजे दहिना, श्रुतिकीर्ति संग शत्रुहन शोभे ओहिना ॥ ववुआ लखन संग शोभे उरमिला दाइ उपमा बिना, सखि वुझू जेना अंगूठी में शोभे नगीना ॥ कहथिं सनेहलता मिथिला में राखू तिनसौं साठियो दिना, ऐहे पंचमी के तिथि अगहन महीना ॥

पद—७६

आई विधना के कतेक गुनमां गावू हे सखी ।
जेहने अपन किशोरी, शोभा सिन्धु सिय गोरी, तेहने लागि गेल जोरी, नयन जुड़ावू हे सखी ॥ जेहने माण्डवी हँसोरी सिय मुखचन्द्र की चकोरी, तेहने भरत विभोरी देखि सुख पावू हे सखी ॥ जेहने धीया उरमिला, तेहने श्रुतिकीर्ति सुशीला, तेहने लखन शत्रुहन हिय में बसावू हे सखी ॥ देखि झाँकी सखी सनेह सुधि बुधि भेलि विदेह, सब मिलि राखू नित नेह जनि बिसरावू हे सखी ।

पद—८०

रतन जड़ित मण्डपतर राजत दुलहा श्याम सलोना री ॥
सिर सुन्दर सोवरनि मनि सेहरा श्रवननि झलक तरौना री ।
श्याम वदन पर अलकें झलकत मानो नागिनि के छौना री ॥
वामअंग सोभित सिय सुन्दरि अंग-अंग छवि मन हरना री ।
प्रियासखी ऐसी मृदुजोरी अनत नहीं कहीं होना री ॥

पद—८१

राजित राम जानकी जोरी ।
स्याम सरोज जलद सुन्दर वर दुलहिनि तड़ित वरन तनु गोरी

ब्याह समय सोहति वितानतर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी ।
मनहुँ मदन मंजुल मंडप महँ छवि सिंगार सोभा इक ठौरी ॥
मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछौरी ।
कनक कलस कहँ देत भाँवरी निरखि रूप सारद भई भोरी ॥
इत वशिष्ठमुनि उतहि सतानंद बंस बखान करैं दोउ ओरी ।
इत अवधेस उतहिं मिथिलापति भरत अंक सुखसिंधु हिलोरी ॥
मुदित जनक रनिवास रहस वस चतुर नारि चितवहिं तृन तोरी ।
गान निसान वेद धुनि सुनि सुर बरसत सुमन हरष कहैं कोरी ॥
नयनन को फल पाइ प्रेम बस सकल असीसत ईस निहोरी ।
तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना बरनै सुख सो री ॥

पद—८२

दूलह राम सीय दुलही री ।
घनदामिनि वर बरन हरन मन सुंदरता नखशिख निबही री ॥
ब्याह विभूषन वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगि सी रही री ।
जीवन जनम लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यौ आजु सही री ॥
सुषमा सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दहीरी ।
मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छबि मनहुँ मही री ॥
तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कही री ।
रूप रासि विरची विरंची मनो सिला लवनि रति काम लही री ॥

पद—८३

सखि पश्य कोशलकान्त सुखद कुमारमति सुकुमारकम् ।
मैथल निवास विलास विलसत मदन मनोपहारकम् ॥

मणि मण्डपे सीतायुतं सुषमा भरं सीता वरम् ।
सुविवाह कर्म विधानमति कुर्वाणमद्भुतताकरम् ॥
मणि मुकुट पीताम्बर सुमध्य मुखारविन्दमनिन्दितम् ।
सेन्दुर सुघन मस्तक दिवामणिमिव तडिद्गण वन्दितम् ॥
किंचित्कटाक्ष विकास वीक्षित जानकी सुषमा सुखम् ।
गुरुजन निकट लज्जा वशंगतमधो भावित शशि मुखम् ॥
जनकात्मजार्पित दृष्टि कंकण कलितकर धृत चन्दनम् ।
रघुराज सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम् ॥

पद—८४

रघुवर दूलह दुलहिनि जानकी ।
नील पीत जलजात सुभग अंग अंगन अति सुख मान की ।
कनक महामणि मौर मनोहर चन्द्रवदन सुख खान की ॥
जनु शृँगार सब्यगिरि ऊपर उग्यो जोति परभान की ।
जावक चित्र पगन मेहदी कर अंजन दृगन अंजान की ॥
देत भामरी कनक कलश कहुँ संग लिये मन प्रान की ।
जय धुनि मंगल गान कुलाहल पुर नभ बाज निसान की ॥
बारहिं विविध सुमन सुर संकुल नाचहिं तिय विबुधान की ।
पुर नभ के नर नारि मगन मन बिसरी सुरति अपान की ॥
सूरकिशोर सिय भाग प्रसंसत भई बधू कुल भान की ।

पद—८५

रामचन्द्र दुलहा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे ।
ना जानी कौशिल्या माइके कोखे गुण कि रामचन्द्र रूप गुण हे ॥

माथे मणि मौरिया सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी मलिनियाँ के हाथे गुण की रामचन्द्र माथे गुण हे॥
चन्दन दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी पंडितजी के हाथे गुण की रामचन्द्र भाल गुण हे॥
कंठा दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी सोनरवा के गढ़े गुण की रामचन्द्र कंठ गुण हे॥
अंग में के जोड़वा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी दरजिया के बनवे गुण की रामचन्द्र अंग गुण हे॥
चरण महावर सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी हजमा के लगावे गुण की रामचन्द्र चरण गुण हे॥

पद—८६

मण्डप विच जोरी चमकि रही॥
मरकतमनि संग जाल रूप छवि घन बिच दामिनि दमकि रही।
सुधा सार रस प्रेमसिन्धु लखु मिथिला छवि छुइ छलकि रही॥
तरु तमाल लहि कनकलता जनु लिपटि रही तउ ललकि रही।
चिरजीवैं यह अविचल जोरी योगेश्वर अभिलाष यही॥

पद—८७

अवध छैल दूलह बने आज देखो, जिसे नेति कहते निगम आज देखो॥ मनोहर मवर पै मनिन की ए शोभा, मनहुँ कोटि दिनकर सजे आज देखो॥ अनूपम मधुर माधुरी की छटा पै, छटा सेहरे का है गजब आज देखो॥ तिलक भाल मनभावनी मनहरन का,

हलनि नाशामणि का अधर धर पै देखो ॥ है कानो में कुण्डल मकर कृत सोहावनि, ए अलकों के उलझन रचे जाल देखो ॥ मदन धनु मथन मद ए भृकुटी चपलतर, पै तिरछी सी चितवनि चढ़े वान देखो ॥ सजे व्याह भूषण सुभग पीत पट ये, चुरायें न दिल कहीं सम्हल आज देखो ॥ पुजारी से निज जन के ए जान जीवन, मिले आज सस्ते नजर भर के देखो ॥

गजल पद—८८

सोहते कैसे हैं दुलहों पै मनहरन सेहरा।
वनी सिया सजन, सोहाग का बाँका सेहरा ॥
कलित ललित लुभायमान मचलते मुख पै।
मनो छवि बुन्द सरसते सम्हल रहे सेहरा ॥
नीलमणि मंजु वदन, सजल घन सोहावन में।
चमक सी दामिनी की लर लटक रहे सेहरा ॥
प्रणय का सूत्र मुदित मोद का वना बाँका।
आज दुलहों पै अजब रंग जमाता सेहरा ॥
छवीले छैल गैल छोर छोर मिथिला को।
छुपा छुपा के दिखाता है छवि छलक सेहरा ॥
छली छवि माधुरी छकीं जकीं थकीं आली।
लुभा रहीं लुभा रहा लुभावना सेहरा ॥
गजब अजब है सरससंत छटे दुलहों पै।
करोर काम लुट गये लुटा रहा सेहरा ॥

पद—८६

दुलह दुलही की छवि बाँकी मुबारक हो मुबारक हो।
अनूपम सखि जुगल झाँकी मुबारक हो मुबारक हो॥
जसै शिर मौर मौरी व्याह भूषण औ वसन दोउ तन।
न उपमा मिलि सकै जाकी मुबारक हो मुबारक हो॥
अमित रतिनाथ हैं लज्जित निरखि सियवर सलोने की।
त्यौं रति लखि छवि जनकजा की मुबारक हो मुबारक हो॥
जिन्हें लखि जोगिजन तरसैं विराजैं मध्य मण्डप पर।
अहे बड़ भाग मिथिला की मुबारक हो मुबारक हो॥
मनोहर जुग्म शशि को त्यागि पल देखैं चकोरी सी।
ये आँखैं नेहलतिका की मुबारक हो मुबारक हो॥

पद—६०

है नौशे रूप रघुवर को मुबारक हो मुबारक हो।
अजब छवि श्यामसुन्दर की मुबारक हो मुबारक हो॥
अजब शिर मौर शुभ राजै गजब कजरा दृगन छाज़ै।
कुण्डल माला तिलक भ्राजै मुबारक हो मुबारक हो॥
हसन सुन्दर मनोहर है दसन की पाँति मन मोहैं।
नासामणि नाक में झलकैं मुबारक हो मुबारक हो॥
कमर में पीत पट काछे दुपट्टा दामिनि गाजे।
चरण झनकार किंकिनि की मुबारक हो मुबारक हो॥
सुन्दर उपवीत तन सोहैं अलक वो भौंह मन मोहैं।
दरश कर चित्त को मोहैं मुबारक हो मुबारक हो॥

पद—६१

सियाराम की बाँकी जोड़ी मुबारक ।
ललाई लली की लला में चमकती ।।
घटा बीच दामिनि सी जोड़ी मुबारक ।।
शरद्‌चन्द्र पूरण कलानिधि ललन मुख ।
जनकनन्दिनी चख चकोरी मुबारक ।।
जुगल रूप ए मोहते एक को एक हैं ।
दो तरफा की ए छोड़ा छोड़ी मुबारक ।।

पद—६२

ये जोरी चारु चन्दा की जिये जुग जुग मुबारक हो ।।
लसैं सिर मणिन के सेहरा तिलक युत खौर हा गहरा ।
रसीले नैन में कजरा जिये युग युग मुबारक हो ।।
पीत पट चूनरी छोरी बँधी हो गाँठि रस बोरी ।
सुछबि निधि श्याम ओ गोरी जिये जुग जुग मुबारक हो ।।
पिया कुण्डल अलक प्यारी हो अरुझी हो छटा न्यारी ।
सखी सब जाहिं बलिहारी जिये जुग जुग मुबारक हो ।।

पद—६३

नव नव राजत छिन छिन अनूप छटा,
सजल जलद वरन रूप मदनहूँ लजावै री ।
बड़े बड़े नैन अनियारे कजरारे प्यारे,
लाल–लाल डोरे तामें अधिक सुहावै री ।।
मरकत धनु कुटिल भौंह नासातिल सुमन चारु,
मदन मुकुर से कपोल कुण्डल झलकावै री ।

तापै छुटी अलक सघन शशि बिच लख मीन मानो,
धरत धसे अहि अनेक परस को न पावै री ॥
जैसोई स्वरूप तैसी सुघरता सुजानताई,
माई री सिया को वर मोको अति भावै री ।
रसिकअली यह अनूप जोरी जग अचल राज,
वैभव विलास नित नयो विधि बढ़ावै री ॥

आरती पद—६४

रंगीली आरती करू नीकी। नवल वर नौशय दुलहिनिजी की ।
पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवली की ॥
वसन वसन्ती सुकटि लसन्ती सारी मोल घनी की ।
मुख सुछवी की सींव वनी की मुसुकनि वृष्टि असी की ॥
मौर मौरी की छहर छोरी की दामिनि दुति करैं फीकी ।
मोदअली की सरबस ही की झाँकी सिया सियपी की ॥

पद—६५

आरती करिये सियवर की, नख शिख छविधर की ॥
लाल पीत अम्बर अति राजे, तिलक ललित भालन पर भ्राजे,
मुख निरखत शारद शशि लाजे, कुमकुम केशर की ॥
कर्णफूल कुण्डल झलकतु हैं, चन्द्रहार मोतिन हलरतु हैं,
कर कंकण दामिनि दमकतु हैं, जगमग दिनकर की ॥
मृदु तरुवन में अधिक लुनाई, हास विलास न कछु कहि जाई,
चितवन की गति अति सुखदाई, मनहीं मन फरकी ॥

सिंहासन पर चौंर ढुरतु हैं, झाँझ बजत जय जय उचरतु हैं,
सारद स्तुति 'देव' करतु हैं, कोटिन अनुचर की ॥

पद--६६

सब मिलि आरती हे उतारु, माई हे राम सिया सुन्दर जोड़ी ।
शोभे माथे मुकुट अरु चन्द्रिका, जगमग ज्योति है उजियार ॥
भाले कुमकुम केशर चन्दन, उर मणिमाला वो चन्द्रहार ।
काने कर्णफूल अरु कुण्डल, दमके दामिनियाँ हे हजार ॥
अंग अरुण पीत रंग अम्बर, चरण कमल हे रतनार ।
चाहे योंही दरश रामेश्वर, शोभा अमित है अपार ॥

द्वार छेकाई पद—६७

द्वार की छेकाई नेक लूँगी मन भाई हाँ तब जाने दूँगी, कोहवर सदन सुहाई ॥ सकुच विहाय दीजै दीनी है जो माई हाँ तब जाने दूँगी ॥ चाहें सोई मानिये जो कहूँ समुझाई हाँ तव जाने दूँगी ॥
कीजै मेरे भैया से निज बहिनी की सगाई हाँ तब जाने दूँगी ॥
मोद नहीं तो लीजै सिया शरणाई हाँ तब जाने दूँगी ॥

पद—६८

छाड़ब नाहीं दुआरी हे सुनिये रघुनन्दन ॥
जबहीं कोहवर चले रघुनन्दन सखियन छेकल दुआरी ।
नेग दिये बिना जो पग धरिहो दूँगी मैं गारी हजारी ॥
जो नहिं राखत साथ पदारथ बेचो बहिनी महतारी ।
सकुचत जन हरिनाथ न बोलत विहँसत अवध बिहारी ॥

सरकार का वचन

विश्वामित्र मुनि ज्ञानी पिताजी से माँगी आनी,
संग में न हम कछु लायो हे सहेलिया ।
दिल एक साथ लायो प्यारी तूँ लियो चुराय,
तिरछी नजर को चलाय हे सहेलिया ॥
देर होत जाने देहु बात मोरी मानि लेहु,
खड़े खड़े चरण पिराय हे सहेलिया ।
मन मोरा मोहि लियो प्यारी सखी बरजोरी,
श्रीनिधि लियो है लुभाय हे सहेलिया ॥

कोहबर की झांकी

स्याम सरीर सुभायँ सुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ।
जावक जुत पदकमल सुहाए । मुनिमन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रवि दामिनि जोती ॥
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥
पीत जनेउ महाछबि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥
सोहत ब्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ॥
पियर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनिमोती ॥
नयन कमल कल कुंडल काना । बदन सकल सौंदर्ज निधाना ॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलक रुचिरता निवासा ॥
सोहत मौर मनोहर माथे । मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥
छं०—गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।
पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं ॥

मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुर सुमन बरसहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं ॥१॥
कोहवरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआसिन्ह सुख पाइकै ।
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मंगल गाइ कै ॥
लहकौरि गोरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं ।
रनिवास हास विलास रस बस जन्म को फल सब लहैं ॥२॥
निज पानि मनि महुँ देखि अति मूरति सुरूपनिधान की ।
चालति न भुजवल्ली विलोकनि विरह भय बस जानकी ॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ।
वर कुअँरि सुंदर सकल सखी लवाइ जनवासेहिं चली ॥३॥
तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनंद महा ।
चिर जिअहुँ जोरी चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा ॥
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव विलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥४॥
दो०—सहित वधूटिन्ह कुअँर सब तब आये पितु पास ।
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥

कुल देवता पद—६६

यह आपकी कुलदेवता इन्हें सारद सीस नवैये ।
करजोरि सुविनय सुनइये, करुणा पर बलि-बलि जइये, अब नेकु न विलम्ब लगैये ॥ शुभ आसन दै बैठेये, पग धो जल शीश चढ़ैये, मधु-मेवा भोग लगैये, ॥ इत भेजी हैं आपकी मैये, आय देखन चारो भैये, अलि मोद सुभाग्य मनईये, इन्हें० ॥

पद—१००

लाल इन देवी के लागउ पाएँ ।
कर जोरउ पग परउ लाड़िले विनय करउ शिरनाए ॥
ई हमरी कुल पूज्य भवानी तुम्हैं उचित ह्याँ आये ।
परमानन्द होइ दूनउ दिशि इनके पूजे पुजाए ॥
ना ए रीझै जप तप संयम ना कछु गाए बजाए ।
केवल विनय मात्र करजोरत द्रवतीं सरल सुभाए ॥
सब विधि बिघन विनाश मोद पद कहती हमन सतिभाए ।
वेगि पाय परो दीन भाउ धरि करहिं क्रोध बिलमाए ॥
प्रभु हँसि कहेउ कैसी ये देवी बैठी बदन दुराए ।
क्रोध प्रसन्न जानि किमि परिहैं बिना सरूप लखाए ॥
ये हमरी ग्रह गोचर माया द्रवहिं न अंग देखाए ।
दूरि रहेउ जनि छुयेउ धोखेहु हउ तुम बिना नहाए ॥
वरवस राम गहे घूँघट पट हमरिनि पदप चोराए ।
इन देविन के भाग सराहउ दोउ पद लेत चढ़ाए ॥
हम का काह ठगउ मृगनयनि तुम्हैं ठगन हम आए ।
हँसि हँसि कहति प्रानवल्लभअलि लालन पढ़े पढ़ाये ॥

पद—१०१

जुआ खेलो कुमर वर चार, बाजी लगाई के ।
जो तुम जीतो अवध मैं चलिहौं, लोक लाज कुल छाड़ि सिया संग उमगाइ के ॥ जो हारो दीजिये मेरे भैया को, करि मंगल उपचार बहिनि निज सगाई के ॥ विहँसि-विहँसि कौड़ी कर भाँजैं, निज

निज दाव सँभार, सुख रस सरसाइ के ॥ खेलत मोद अजित वर हारे सखियन दीनी हहार, ताली बजाइ के ॥

बाती मिलावन पद—१०२

नौशय चारों नवल वर कोहवर राजहि हैं ।
जुरि रही अनिल समाज हास्य रस छाजहिं हे ॥
सोने की दिअरा नगनजरि रेसम बाति हैं ।
कनकथार महँ बारि दुइ लाई रंग राति हे ॥
लालन यह दोउ दीपक एक संग जोरियै ।
याको अमित प्रभाव न जानिये थोरि ये ॥
जौं यह दोनों टेम आप कर जूटि हैं ।
दम्पति चारु सनेह न कबहूँ टूटि हैं ॥
सुनि मुख डारि रुमाल हँस्यो दृग बाँकि कै ।
सखियन भयउ निछावरि छवि रस छाकि कै ॥
कोउ कहि बिनु बोले आवत नहिं सकुचाय जू ।
बातिहिं बात मिलावत काहे लजाय जू ॥
लाल कह्यो हँसि भौंरहिं कौन बुलावहीं ।
शोभा करन प्रसून आप चलि आवहीं ॥
दीपकला भल जानहि मोद सुवास हैं ।
मनसों मनहिं मिलावन मेरो काम है ॥

लहकौरी पद—१०३

लहकौरि करत पिय प्यारी ।
जनक नगर की अली चतुर सब गावत रसकी गारी ॥

लक्ष्मीनिधि प्रिया चतुर शिरोमणि सुसमै हृदय विचारी ।
बोली सुनहु प्राण मम वल्लभ हम हैं श्रोर तुम्हारी ॥
तुम जीतौ तव सखी सिय जीतौ जो कदापि ह्वै हारी ।
तब हम तुम्हैं जीतिहैं सियजू फुर कहि दोउ हिय धारी ॥
प्रेम हार निज निज घातैं करि पकरयो अवध बिहारी ।
तब सिय ललकि भौंह करि बांकी मन हरि गहि सुकुमारी ॥

कोहबर हास्य पद—१०४

श्री कोहबरवा घरवा राजैं बरवा चार गुइयाँ ।
हँसनि हँसावनि की हो रही बहार गुइयाँ ॥
कमल कली सी चहुँदिसि नव नार गुइयाँ ।
बीच में विराजे अलबेले चारों यार गुइयाँ ॥
चमर चलावती छबीली छवि वोर गुइयाँ ।
बिरिया खवावती सुगंध बहु डार गुइयाँ ॥
झूमि झूमि झाँकै सब झाँकी मजेदार गुइयाँ ।
हरसत सुख सरसत बेसुमार गुइयाँ ॥
बोली सिद्धि प्यारी सुनो अवध व्यवहार गुइयाँ ।
होत रघुबंस में पुरुष गर्भधार गुइयाँ ॥
रहे 'युवनास्व' एक राजा गुणागार गुइयाँ ।
जाय 'मानधाता' सुनि परेउ हहार गुइयाँ ॥
'सुदुमन' भये 'इला' कुमरि उदार गुइयाँ ।
कुलटा 'पुरुरवा' जनाइ करि जार गुइयाँ ॥
तीस दिन तिया रहैं पुरुष तीस वार गुइयाँ ।

सुनते हँसेउ सब दै दै ठहकार गुइयाँ ।।
'सुमति' सयानी एक भई दिमागदार गुइयाँ ।
ब्यानी एक बारही में साठि हजार गुइयाँ ।।
'शान्ता' छिनारी जोग भेटे ना भतार गुइयाँ ।
तपसी के गर बांधे जानत संसार गुइयाँ ।।
अवध की तिया सब अतिहिं खेलार गुइयाँ ।
पायस से पैदा किये मोद प्राणाधार गुइयाँ ।।
सकल छबीली छबि छकि भई न्योछार गुइयाँ ।
परानन्द फूली भूली अपनी परार गुइयाँ ।।

पद—१०५

लखि कौतुक घर में नारि हँसि हँसि पूछति हैं रघुबर से ।
तुमहिं जगत को सार कहहिं मुनि कहि न सकति हम डर से ।।
तुम नहिं पुरुष न नारि कहहिं श्रुति खेलहु खेल मकर से ।
सो लखि परत मकर कुण्डल से और किशोर उमर से ।।
दशरथ गौर कौशल्या गोरी तुम श्यामल कांहे घर से ।
दोऊ के हरि ध्यान प्रगट भये अस हमरे अटकर से ।।
व्यङ्ग चतुरता गारी सुनि के देखा राम नजर से ।
भई कृतारथ देव मनावहिं जनि ए जाहिं नगर से ।।

पद—१०६

रामलखन सन सुन्दर वर के जनि पढ़ियौन केव गारी हे ।
केवल हास विनोदक पुछियौन उचित कथा दुइ चारी हे ।।
प्रथम कथा ई पूछियौन सजनी कहता कनेक विचारी हे ।

गोरे दशरथ गोरी कौशल्या भरत राम किय कारी हे ॥
सुनु सखि एक अपूरब घटना अचरज लागत भारी हे ।
खीर खाय बालक जनमौलनि अवधपुरी की नारी हे ॥
अकथ कथा की बाजू सजनी रघुकुल के गति न्यारी हे ।
साठि हजार पुत्र जनमौलनि सगरक नारि छिनारी हे ॥
स्नेहलता किछु आब न कहियौन एतबे करथि करारी हे ।
हँसी खुसी मिथिला से जयता भेजि देता महतारी हे ॥

पद—१०७

हिनकर पच्छ आब हम करबैन्ह अहाँ धुसइछियैन्ह हिनका की ।
हमर अपन केहनो छथि पहुना ताइ सँ मतलब अनका की ॥
अपन वस्तु पर अपन खुशी थिक अछि कानून जहाँ ताकी ।
अपन बहिनि के बेचिये देलनि ताइ सँ मतलब अनका की ॥
साठि हजार वियइलथिन पुरखिन किन्तु करइ छी निन्दा की ।
दुख सुख जनलनि जे जनमौलनि ताइ सँ मतलब अनका की ॥
गट गट गारि सुनथि सब लालन मगर मरम्मत करता की ।
स्नेहलता मुसुकाथि लजायल असल बात में बजता की ॥

पाटी धराइ पद—१०८

ऐ अलबेलो लाल, कौन सिखायो यह चाल ।
छोरु छोरु प्यारे पाटी, दीजै संवारन चोटी, सिय प्यारी भाल,
जेहि लखि चंदहुँ के हिय साल ॥ मन माना नेग जौलौं पैहौं
न तजिहौं तौलौं मिथिलानी बाल, हो मेरे सखन हिय माल ॥
सुनि बैन सुखरासी, परेउ हहाके हाँसी, ह्वै के निहाल,

गावन लागी अलिन उताल ।। सासु मना दुलारे,सारिन मनाइ हारे, हठीले चाल लखि सरहोज मनाई चूमि गाल ।। लखि हठ भार मोद, कीनी स्वीकार, श्रीदसस्यन्दनलाल, मन्द मुसुकि किय कमाल ।।

घूँघट पद—१०६

पिय हँसि सिय को घूँघट टारो ।।

उघरत ही अस छवि दरसी है, मोहि गयो लखि अवध दुलारो ।
सियमुख मुकुर माँहि निज मुखको, देखि चकित भयो प्रीतम प्यारो ।।
रूप गुमान छाँड़ि ताही छिन, निरखत नैन निमेष निवारो ।
मोहनि नवरस माँहि दोउन को, मिलिगो दृगसों दृग रिझवारो ।।

कोहवर पद—११०

कंचन महल मणिन केर दियरा कंचन लागल केवार रे
बनेबाँस केर कोहवर ।
गजदन्त सेज फूलन के बिछवना रतन के बनि है सिंगार रे ,, ,,
तापर सोवत रघुवर दुलहा सीता दुलहिनी संग वाम रे ,, ,,
नील पिताम्बर रतन के भूषण राजत अंग साँवर गोर रे ,, ,,
यों मुख फेरि सोवे रघुवर दुलहा दुलहिनि सोवे करि मान रे ,, ,,
कमल कपोल मुखपट लेइ पोछत फेरि फेरि हिया में लगाय रे ,, ,,
दुलहा दुलहिनि अंग परसि परस्पर हरषि नयन जल छाय रे ,, ,,
'जन हरिनाथ'रघुनाथ सियाजी के आनन्द बरनि न जाय रे ,, ,,।।

कोहवर पद—१११

कंचन भवन खचित मणि माणिक चंदन के लागल है केवार रे
सुहागरात कोहबर ।

कदलीके थम्भ कनकदल झल मल जोड़ा कलश गृह द्वार रे।
सप्त जलधि के उत्तान से वितान शोभे इन्द्र धनुष के सिंगार रे ॥
भव्य भवन के विशाल भाल लाल सोहे चन्दन सरीखे वन्दनवार रे।
नील गगन घन वसन चन्दोवा हैं तारा के धार हीरा हार रे ॥
मुक्ताके जालमें प्रवाल पांतिमाल मोहे झालरसे छारल क्रीड़ागार रे
जगमग जगमग ज्योति जगत हैं दीपक दिव्य अपार रे ॥
गजदन्त सेज सुमन के विछावन ऊपर से लागल हैं ओहार रे।
तेहि पैसि सोवालि सिया सुकुमारि हे संगे कौशल्या के कुमार रे ॥
मिथिला की महिला मुदितमन सुन्दरि गावति राग विहार रे।
रंजन राम सिया कोहबर जे गावथि पावथि शुभ फल चार रे ॥

कोहवर पद—११२

कहाँ केर कोंहवर लाल ओ गुलाल हे।
कहाँ केर कोहवर पान सँ छाड़ल हे ॥
अवधक कोहवर लाल ओ गुलाल हे।
मिथिलाक कोहवर पान सँ छाड़ल हे ॥
ताही पैसि सूतै गेला दुलहा श्रीराम हे।
संगही में सूतलैन जनकजी के धीया हे ॥
घूरि सूतू फिरि सूतू आर्यजीक पुत्र हे।
अहाँ केर घाम सँ आँचर मैल होई हे ॥
एतेक वचन जखन सुनलैन श्रीराम हे।
घरहुक सेज से बाहर देल बिछाइ हे ॥

उठि गैले बादर बरसे लागल मेघ हे।
ओलती लागल दुलहा रोदना पसारि हे ॥
खोलु धनी खोलु धनी स्वर्णक किवार हे।
आजु केर राति में पलंग पैंचा देहु हे ॥
आजु केर राति में पलंग पैंचा देव हे।
हमर बाबू सँ अहाँ दहेज नहिं लेब हे ॥
अहाँ केर बाबू सँ दहेज हम नहिं लेब हे।
हमरहु माय के जबाब नहिं देब हे ॥

जेवनार के लिए प्रस्थान पद—११३

क्या चला आता है मेरा बाँका बनरा बादशाह।
जिस तरह बादल बहारें बरसने वाला बादशाह ॥
पैरों दस्त देखिये मेहदी से लाले लाल है।
सारी पोशाकें सुरुख रूमाल वाला बादशाह ॥
शौक से सुरमा दिये फूलों का गजरा है गले।
अश्वताजी रासवारी सेहरे वाला बादशाह ॥
शाह शाही जुल्फ है खूबसुर्ती से शोखी लिये।
उमराव शाही शाहजादा है फैजाबाद वाला बादशाह ॥
चश्म मिशले चूं गुलाबी रात का जागा हुआ।
इस बनरे उपर वारूं दीन दुनियां बादशाह ॥
चलो सखि सखी श्याम से मिलना हमें जरूर है।
श्यामसखे बेदस्त रे शमशीर वाला बादशाह ॥

पद—११४

आगु आगु लक्ष्मीनिधि घोड़वा नचावे हैं दुलहा चलि आवे, घोड़वा नचावे दुलहा चार ॥ घोड़बा के चाल देखि लाजेला गरुड़वा हे दु०, मोरवा लजाय लखि श्रृंगार ॥ माथे मणि मौरिया तर उठले बदरवा हे दु०, कारी कारी जुलुफ घुंघुरार ॥ कोमल कपोलवा पर लटकै अलकनियां हे दु०, चमके चन्दनमां लिलार ॥ भृकुटि धनुषवा शर जुलुमी नयनमां हे दु०, प्रेमीजन नयना के शिकार ॥ निरखे सनेह ठाढ़ि महल दुअरिया हे दु०, बन्दीजन गावें जस हजार ॥

पद—११५

झमड़ैत आवे मिथिलेश के भवनमां हाय रे जियरा, दुलहा के रूप अनमोल। माथे पर सोभे इनके सोने के मउरिया हाय रे जियरा, लखिते विकाला बिना मोल ॥ गोरे गोरे साँवर साँवर उमर में बरोबर हाय रे जियरा, कोउ न लखात वा मझोल। एक मन करे मोरा अकेले बतियैती हाय रे जियरा, कहत भिखारी पर्दा खोल ॥

जेवनार

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठए जनक बोलाइ बराती ॥
परत पांवड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा।
सारद सबके पाय पखारे। जथा जोग पीढ़न्ह बैठारे ॥
धोए जनक अवधपति चरना। सील सनेह जाइ नहिं बरना ॥
बहुरि राम पद पंकज धोए। जे हर हृदय कमल महँ गोए ॥
तीनिउ भाइ राम सम जानी। धोए चरन जनक निज पानी ॥

आसन उचित सबहिं नृप दीन्हें। बोलि सूपकारी सब लीन्हें ॥
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सँवारे ॥
दो०—सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वाद पुनीत।
छन महँ सबके परुसि गे चतुर सुआर विनीत ॥
पंच कवल करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भाँति अनेक परे पकवाने। सुधा सरिस नहिं जाहिं वखाने ॥
परूसन लगे सुआर सुजाना। विंजन विविध नाम को जाना ॥
चारि भाँति भोजन विधि गाई। एकएक विधि वरनि न जाई ॥
छरस रुचिर विंजन वहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती ॥
जेँवत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावनि गारि विराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥
एहि विधि सवहीं भोजन कीन्हा। आदर सहित आचमन दीन्हा ॥
दो०—देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज।
जनवासेहिं गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥

बुझौवल

१—तीस चरण महि चलत नहिं श्रवण नयन छत्तीस।
सो तुम्हरो रक्षा करैं नौमुख देहिं असीस ॥

उत्तर—सूर्य भगवान्

२—च[1]कती सोहे वरु[2]न पै वगहा[3] पै असवार।
पला सहित कवि गंग कहे शुभ हो राजकुमार ॥

उत्तर—१. च=चक्रसुर्शन, क=कमण्डल, तो=त्रिशूल।
२. व=ब्रह्मा, रु=रुद्र, न=नारायण।
३. व=वैल, ग=गरुड़, हा=हंस।

३—एक चिड़ैयां अटक लटक के नदी किनारे चरती है।
चोंच तो उसकी सोने की है दुम से पानी पीती है॥

उत्तर—दीपक।

४—बाप के नाम से पूत के नाम नाती नाम कुछ और।
ई बुझौअल बूझ के दुलहा उठइहैं कौर॥

उत्तर—महुआ।

पद—११६

धन धन जीवन लेखो री रघुवर छवि देखो।
जेवन आय महानृप दशरथ, चारों सुत लिय संग रे, कि अनंग रे, चहुँचन्द रे, मन फन्द रे, अंखियाँ लखिके भई दंग रे, आलीरूपनिरेखो
चरन पखारि बैठाय सुपीढ़न, पत्तल मनिन सँवारी दै, पै सुहारी दै, तरकारी दै, भसकारी दै, ता ऊपर से रस गारी दै. पकवान अलेखो॥
जो न बरात पुरो नृप पाये, काहे न लाये निज जनियाँ को, हाँ बहिनियाँ को, पितिअइनियाँ को, फुफुअइनियाँ को, कोउ हरत न उनकी जोबनियाँ को, अजमाय के पेखो॥
तिनसै साठि नारि में इक नर, सत निबहन वर भारी हाँ, कबहूँ नहि होति छुटकारी हाँ, जनकहि दीजै दो चारी हाँ, होइहैं जगसुजस तिहारीहाँ, जो न राखतिहो लगवारी हाँ, सुनि लागोनतेखो॥
गारि गाय सखि बलि बलि जावैं, चारों भैयन की गढनियाँ पै, सुमिलनियां पै, मुसुकनियाँ पै, अति मोदित मोद बकनियाँ पै, परित्यागि निमेखो॥

पद—११७

वर सहँ बड़—बड़ बात सजनी वर सहँ बड़-बड़ बात ।
मिथिला में नहिं आयल कहियो एहन अजब बरियात ॥
पहिनहिं आबि के सासुर बैसला इ सबके अछि ज्ञात ।
हिनके वेद पुकारि कहै छथि पुरुष पुरान अजात ॥
समधी छथि दस सेहो छथि रथ समधिन छथि सतसात ।
एक एक पर सत्तरि सत्तरि होइत हाएत उतपात ॥
तीन मास पहिने बरियाती अयला हिये ललात ।
ओतए तिया सब तड़पैत होइथिन तारा गनिते रात ॥
गंगा जमुना सरजू पुरखिन छथिन भुवन विख्यात ।
छकल छिनारी पाप छिनै छथि छन में छुविते गात ॥
दूषण सब भूषण भए गेलनि जुरिते सियजू स नात ।
मोद मगनसुर जय कहि वर्षहिं सुरतरु सुमन सिहात ॥

पद—११८

प्रिय पाहुन रुचि सँ जेमि लिय,छमि भूल चूक गुनि अबुधि तिय ॥
आहाँक जोग किछु'बनलो नै व्यंजन से विचारि सकुचाइय जिय ।
भावक भुखल स्वभाव अहाँक सुनि पुनि पुनि अति हुलसाइय हिय॥
जानब तखन कहब आहाँ जखनहिं अमुक वस्तु कने और दिय ।
किञ्चित वचन वजैत लजाइ छी परम कृपालु कहाइ छी किय ॥
जनि लजाउ निज कुलाचार पर सन्त सुखद अति अवध धिय ।
मोद मुदित मनविनती सुनावथि सिरकिन लखि लखि सीय पिय ॥

पद—११६

प्यारे रसिया राजकिशोर ऐ प्यारे रसिया।
जेमिय व्यंजन रुचिर हमारे हेरि कृपा की कोर ॥
हैं अनूप गुन रूप तिहारे अचरज भरे अथोर।
हौ सांचे कि तो सांची कहिये प्रश्न के उत्तर मोर ॥
लोकपती तुमको बतलावैं चारिहुँ श्रुति करि सोर।
रावरो बहिनि अहै लोकहिंमें तिन पतिमें क्या निहोर ॥
जगत पिता तुमको जग जानत मानत में नहिं खोर।
भय ताते निज पितहूँ को पितु चाल निराली तोर ॥
सब जग सार तुमहिं बतलावैं सन्तन मतो बटोर।
भरत लखन रिपुसूदनहूँ के सार में क्या तब जोर ॥
नाम पितामह को अज तेरो आपहुँ अज यह घोर।
मोदलता को बेगि बतइये सिय दूलह चितचोर ॥

पद—१२०

तिल भरि गारि ने दै छी सुनु कथा कहै छी।
एकटा रहथि श्रीरघु महिपाल, भेलथिन हुनक चन्द्रवति बाल, प्रथमहिं नासिकेत जनमैलथिन, पाछा सँ सिंदुर धरवैलथिन, साँचहिं साँच बजै छी ॥ नृप युवनाश्व भेला बड़ यशी, नाम सुनत हँसैए हँसी, यज्ञक जल सँ रहलनि गर्भ, मान्धाता नृप भेलथिन अर्भ, वृद्धक मुहें सुनै छी ॥ सगरक प्रिया सुमति कहवैलनि, केओ नहिं कैलक से ओ कैलनि, साठि हजार छनहिं जनमैलनि, जग महँ सुयश समुद्र बहेलनि, कि नहिं अहाँ जनै

छी ।। शान्तीवती अवध में भेलनि, रोमपाद गृह पोसल गेलनि भरि वैस भेलो नै कैलथिन ब्याह, वर्षा बिनु भेल प्रजा तबाह, पाहुन किय सकुचै छी ।। कथा सुनै सँ मन जनि फेरू, कृपा-दृष्टि सँ हमरा हेरू, यकर सुनाई एतवै दीय, मोदहिं आव अपन कए लीय, लखितहिं रहक चहै छी ।।

पद—१२१

जनि मनहिं लजाउ कनै और पाउ यो ।
बनल अलोन सलोन जे हे किछु जानि गँवारि छमा छाउ यो ।।
प्रेमीजन चितवन मुसुकन हित तरसैत छथि तकि मुसुकाउ यो ।
मिलत दहेज चाहब जे जे से ताइला उदासी नै मन लाउ यो ।।
मिललनि सीता दुहुँ कुल तारनि हिनक आदरभाव हिय लाउ यो ।
हँसमुख पाहुन नीक कहाइ छथि हँसैत मोद हिय बसि जाउ यो ।।

पद—१२२

तुम सकुचत कस चितचोर दुलहा रामजी लला ।।
जेंवहु व्यंजन रुचिर हमारे व्यंग बचन सुनि मोर ।
तुम तो श्याम काम छबि लाजत मातुपिता कस गोर ।।
गारी ससुर पुर सुनि रघुनन्दन हँसत सुलखि मुख मोर ।
कृपानिवास हरषि सखि गावैं जुरि-जुरि सियाजू की ओर ।।

पद—१२३

छयलवा को देहौं चुनि चुनि गारी ।
छप्पन भोग छतीसो व्यंजन आनि धरी मणि थारी ।।

जेंवत लालन सिद्धि सदन में गावत सरहज सारी।
अति सुकुमारी राजकुमारी शान्ता बहिनी तुम्हारी॥
देना तो चहिये राजकुमर को लै भागे जटाधारी।
ऐसी रीति जो राजमहल की बाहर काह गुजारी॥
लूटि न जावे अवधनगर की सिगरी कन्या कुमारी।
जंवत लालन मृदु मुसुकावत सियाअली बलिहारी॥

पद—१२४

क्या अजब रंगदारी ललन ससुरारी की गारी।
बड़े भाग बना आये जनकपुर पाये सरहज सारी॥
प्राणहुँ ते प्रिय पाहुन मेरे सुनिये बात हमारी।
शोभा धाम श्याम सुंदर वर रूप अनूप तिहारी॥
कैसे बची होयगी तुमसे अवधपुरी की नारी।
औरो बात सही मैं जानति तुव कुल की उजियारी॥
अति उदार मुनिजन जेहि जाँचत ऐसी बहिनी तुम्हारी।
जिनकी चाह करत सारे जग तिनकी का रखवारी॥
मिथिलापुर की गलिन गलिन में विहरैं शान्ता कुमारी।
सियाअली निज बहिनी के गुन लीजै हिय में विचारी॥

पद—१२५

पाहुन कहू कोना, गुन सुनि सुनि मन सकुचाइऐ।
अहाँक बहिनि सँ जे नेह करैए सेहे अहाँ के सोहाइऐ॥
जकरा पर अहाँ नजरि करैछी तकरे गर लपटाइऐ।
लोक लाज कुल कानि अपनपौ कनैक कनैक क खाइ ऐ॥

तव कुल कन्या परम विलक्षणि, कनिको नै सरमाइऐ।
एक पुरुष संग सुख नै करैऐ, तीनू लोक बौआइऐ॥
नख सिख सुखमा देखि अहाँ के, काम बेकाम बुझाइऐ।
मोद अवध के नागरि अनतह कुलटा बनि बनि जाइऐ॥

पद—१२६

अयलौं पाहुन से खूब कैलौं, भाग्य सँ सिय सुन्दरि पैलौं॥
प्यारी पुर दिसि पाँव धरैते, पावन यश त्रिभुवन छैलौं।
सतसंगे अछि सार जनैलौं, बुढ़वा बाबा के संग लैलौं॥
सकल अरिष्ट कटल धनु टूटत, पाय सीता सीतल भेलौं।
रुख लखि के मन मोहनि सिय के मोद अलिन के कर धैलौं॥

पद—१२७

गारी खूब सुनैबै छयल अलबेला ललाजू॥
दृग पुतरिन को पीढ़ा बनैबै, अँखियन महँ बैठैबै।
छरस रुचिर छत्तीसहुँ व्यंजन हित सों आनि जिमैबै॥
ससुरारी की गारी है प्यारी सुनि सुनि के न लजैबै।
एके बहिन आपके लालन हम पूछैं केहि देबै॥
केते जतन करत हैं मुनिजन तुव बहिनी के पैबै।
बिनु शान्ती सुख लहत न काहू झूँठ तनिक का कहबै॥
सब जग चाह करत शान्ताजू को कहँ कहँ उनहि पठैबै।
दीजै बहिन दान मिथिला में सियाअली यश पैबै॥

पद—१२८

मत मनिहऽ मनमें बुरा हमर सुनि बात हो रघुनन्दन।
ई गारी हऽ ससुरारी के सौगात हो रघुनन्दन॥

कच्ची पक्की और परसिहैं हम तो चटनी चूरन।
लगै चटपटी जगै भूख सुठि व्यञ्जन रुचैं हुजूरन॥
जानत बानीं गोरकू लगिहैं आँखि चढ़ा के घूरन।
तबहू ना हम बन्द करबि जब तक न बोलबऽ पूरन॥
चाहे बैठल बैठल बीते सारी रात हो रघुनन्दन ई गारी० ॥
ना हम तोहके बोलि पठवलीं ना कोई लिखलीं पतिया।
बिनु पनही के पैदल अइलऽ मुनि के बनल सँघतिया॥
लखि अनूप अमराई ललचल युगल भ्रात के मतिया।
इहवें रहिं जइती हरदम यदि गुरुजी दें अनुमतिया॥
मन सोचत केहि विधि जुटे जनकपुर नात हो रघुनन्दन ई गारी०॥
कौशिकमुनि से आज्ञा माँगे जनक नगर दर्शन के।
उत्कण्ठा तो अपने मन में ओट लिये लछुमन के॥
आयसु हो तो नगर दिखाउँ ज्यों पण्डा तीर्थन के।
गइल गुमान भये न्यौछावर यदपि चले बनठन के॥
फुलवारी के तो दशा बरणि नहिं जात हो रघुनन्दन ॥ई गारी०॥
प्रथम दृष्टि में बाहर बाहर नगर रम्यता देखी।
तबहीं दोनों राजकुमार के बिसरि गइल सब शेखी॥
अन्तर नगर निकाई के तो बरणिये निपट अलेखी।
जहाँ जाई मन तहँइ लुभाई पलकनि तजी निमेखी॥
धनुमख मण्डप दिशि चितवत चकित चिहात हो रघुनन्दन ई गारी०
टूटल धनुष कौन विधि से सब जानत मिथिलाबासी।
ईस काहि धौं देहिं बड़ाई की भई दूरि उदासी॥

सिर झुकाय जयमाल पहिरलऽ ऊ झाँकी एक खासी ।
पत्री गइल अवधपुर हरषल बरसल आनन्द रासी ॥
सब सरावोर भये विनु वादल बरसात हो रघुनन्दन ॥ई गारी०॥
चौदह भुवन उछाह व्याह सुनि लगी होन तैयारी ।
रथ गज बाजि ऊँट वृषवाहन भूपन वसन सँवारी ॥
वाहन विविध बराती सुरनर मुनि मन हर्षित भारी ।
अनुपम सकल समाज किन्तु एक वर बैठे ससुरारी ॥
लखि जग निहाल विनु दुल्हा के वरियात हो रघुनन्दन ई गारी०॥
मन वांछित सुर दुर्लभ सुख लहि नित नूतन अनुकूले ।
सारे अवध निवासी जन निज घर दुआर सब भूले ॥
तीन मास से पहुनाई में खाय खाय सब फूले ।
गारी सुनि रस भरी अटपटी मुग्ध मनो रसगूले ॥
उत अवध तियनि के तारा गिनत प्रभात हो रघुनंदन ॥ई गारी०॥
धरी रसोई सकल परसिके बैठे चारों भाई ।
ग्रास उठावत बनै नहीं बस रहे मन्द मुसुकाई ॥
कथनी में तो कन्दुक इव लेवैं ब्रह्माण्ड उठाई ।
करनी से अब उठत नहीं एक लड्डू सरिस मिठाई ॥
अब ढँकि रूमाल मुख मन्द मन्द मुसुकात हो रघुनंदन ॥ ई गारी०॥
एक दिन दाल भात अरु गो—घृत परसे सबके आगे ।
और वस्तु परसत परसत में अवधी धीरज त्यागे ॥
लै आचमन पञ्चकवली करि चटपट जीमन लागे ।
'व्यञ्जन तो सब परसि लेन दो' सुनत सकल सकुचा गे ॥

अब दुविधा में कर सिमटत बनै न खात हो रघुनंदन ।।ई गारी०।।
बासमती के चिउरा लखि मुँह सभी परस्पर ताकें।
'कइसन एहिका पेड़ होत हैं' कहैं जबान दबा के ।।
व्यञ्जन और विविध विधि के लखि इत उत तकैं चिहा के।
एक कहैं चुप रहो नहीं तो हँसैं लोग मिथिला के ।।
कहैं 'मिथिलावासी' अद्भुत जुटल जमात हो रघुनंदन।।ई गारी०।।
अनत वेद मन्त्रन से पूजा इहाँ अटपटी बानी ।
सिलवाँन गाल सेकाये लालन लछुमन सरिस गुमानी ।।
धान कुटाय लगाये गुलचा नाक पकड़ि मिथिलानी ।
चलत न एकहु चाल चतुर के हो गये पानी पानी ।।
अब 'नारायण' सैननि हा हा खात हो रघुनंदन ।। ई गारी० ।।

पद—१८६

कौना गुमान में भुलइलऽ हो राघोजी, कौना गुमान में भुलइलऽ।।
बड़बड़जतन कइलन दशरथ कौशल्या तब उनकर ललना कहइलऽ।
बिना बुलवले मिथिला में आइके सेतिहा में सबके भेटइलऽ हो ।।
बक्सर में पहुँचे से पहिले अवध में कौन पुरुषारथ कमइलऽ ।
ताड़िका के मरलऽअहिल्या के तरलऽमिथिला के राह जब धइल ।।
पहिले त मोहनी मुरतिया से ठगि ठगि मिथिला सकल बस कइलऽ।
भइलऽचकोर फुलवरिया में जाइके सिया के सुरति पर ठगइलऽहो।।
चललऽदिरद बांधि सोभा संग्राम ठानि नूपुर के धुनि सुनि डेरइलऽ।
शरद भोर छूटल पसीना ललाट पर पढ़ल लिखल सब हेरइलऽ ।।
शुचि मन रघुवंशी कहा के वचन मन से अइसन अंकुरान अंकुरइलऽ।

सायं के संध्या विधि पूर्वाभिमुख कइके दूपन विधि हिमकर पर धइलऽ
रहलऽतूँ करिया अन्हरिया सरिस जब अवध शहरिया से अइलऽ।
गोरी किशोरी श्रीजनक लड़ैती के छाया परत हरिअइलऽ ॥
धनुहा के तोरि जयमाला पहिरि के रघुवर बहुत गरबइलऽ।
खोलत किशोरी कर कंगन कपत कर नाहीं खुलल तब लजइलऽ॥
सबका के बन्हलऽतूँ माया के बंधन में मिथिला में अपने बँधइलऽ।
सब जग जुड़ाय तोहरा आश्रयमें आके तू मिथिला में आके जुड़इलऽ
सब जग ग्रहीता तू दाता जगत के दानी शिरोमणि कहइलऽ।
मिथिला में दाता जनकजी उदार अति जिनकर ग्रहीता तू भइलऽ॥
और और ठौर सर्व देवन शिरमौर होके वेद के ऋचा से पुजइलऽ।
आय ससुरारी में सारी और सरहज के गारी बिना ना अघइलऽ॥
वेद प्रतिपादित अजित होके साखयन से कोहबरके जुआमें जितइलऽ।
पाहुन'नारायण'के हारि नजरबन्द होके मिथिलासे बाहर नागइलऽ॥

नित्य जेवनार के पद—१३०

रघुवर जेंवत जानि एक सखी अंचल दै हँसि बोली जू।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहहु सब खोली जू॥
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुति गावैं जू।
भूपति गौर श्याम तुम लालन हम कैसे पतियावैं जू॥
सुनहु चतुरि हम श्याम न होते को शृँगार रस गावैं जू।
हमरे श्रीजनकलली रस के रस विनु बोले पिय आयों जू॥
कहहु कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहि कौन बुलावै जू।
रामचरण सखि मरम वचन सुनि सब सखियाँ मुसुकावैं जू॥

पद—१३१

सुनिये रसिकराय रघुनन्दन प्रीति रीति युत गारी जू ॥
तुम तो श्याम स्वामिनी मम गोरी यह अचरज बड़भारी जू ।
जो पै लाल आप रुचि होवे तो हम बात विचारी जू ॥
कछुक काल मिथिला में रहिये होय नागरि सुकुमारी जू ।
श्रीलक्ष्मीनिधि के महलन में रहिये रूप उजियारी जू ॥
मन भावतो टहल पिय करिये श्रीसिधि के रुचिकारी जू ।
तब तुम गौर वरन पिय ह्वैहौ मम स्वामिनि अनुहारी जू ॥
हँसि हँसि कहहिं परसपर सब मिलि सुखद सुखेन विचारी जू ।
सुनि मुख मोरि हँसत रघुनन्दन कामदेन्द्र बलिहारी जू ॥

पद—१३२

जेंवत कुँवर रसिक रघुनन्दन रस आगरि नागरि सिय प्यारी ।
छप्पन चार छऊ रस उपरस भोग सौज सुखकारी जू ॥
चिन्तामणि चौकिन पर कोमल दुग्ध फेन सम सारी जू ॥
तिन ऊपर रुचि जानि युगल की रचना न्यारी न्यारी जू ।
फल रसमय अंकुर कंदाली मेवा मधुर सुधारी जू ॥
चटनी निकर अँचार मुरब्बा अमित भाँति तरकारी जू ।
परसत परम किशोर नागरी जानि युगल रिझवारी जू ॥
सुरभिवन्त शीतल सरयू जल मंत्रित कंचन झारी जू ।
रस भीनी बतियन विरमावत प्यावत निज कर वारी जू ॥
दम्पति एक थार महँ जेंवत मोद कन्द मुद भारी जू ।
अग्रअली के जीवन दोऊ तृण तोरत बलिहारी जू ॥

पद—१३३

मिलि जेंवत श्रीरघुवीर बने सखि संग लिये मिथिलेश लली ।
भुज अंश दिये बहियाँ जु लसैं विहसैं मृदु मंजु अनंग रली ॥
करि कौर सिया मुख देत पिया कहि स्वाद सराहत भाँति भली ।
रस के निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहुँओर किशोर अली ॥
मणि मंदिर में झलकैं प्रतिबिम्ब मनोज के मानो विहार थली ।
श्रीअवधपुर नित्य विहार करैं लखि अग्रअलीजू की आस फली॥

पद—१३४

दोउ जेंवत हास विनोद मगन रस रंग उमंग अंग-अंग वरसैं ।
परसि परस्पर स्वातिक भाँतिक ग्रास उठे मुख ना परसैं ॥
स्वकर सुधारस कौर सिया को राम जिमावत हित दरसैं ।
दृगकोर सिहाय सुभाग भरे कर चूमि महा हिय में हरषैं ॥
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसैं ।
कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहि जाको महामुनि मन तरसैं ॥

पद—१३५

मिलि जेंवत प्रीतम संग सिया दोउ मंगल मोद बढ़ावैं हो ।
कौर परस्पर देत चन्द्रमुख मन्द मन्द मुसुक्यावैं हो ॥
भोजन विविध परोसति विमला कमला विजन डुलावैं हो ।
सोभा सिन्धु कही न परै कछु माधुरी कुंज सुहावैं हो ॥
चन्द्रकला सखि झारि लिये कर सरयू जल अँचवावैं हो ।
रामसखे प्रभु थार प्रसादी रह्यो अवशेष सु पावैं हो ॥

पद—१३६

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया हिय निरखि निरखि सखि मोद भरैं।
बैठे रतन जड़ित मणि पीढ़न घन दामिनि दुति मन्द करें॥
व्यंजन विविध सुधारि सुघर सखि कर कमलनि मणि थार धरैं।
परसत गान करत पिक बैनी मधुर मधुर मृदुसप्त सुरैं॥
कोउ कर पानि पात्र मणि झारी सुन्दर सरयू नीर भरैं।
पिय प्यारी मुख चितवत सब अलि देत जबै चित चाह करैं॥
कौर सुधारि परस्पर शशि मुख देत जबै छवि कहि न परैं।
रसिकअली यह रस अद्भुत दृग निरखि न्यौछावरि प्रान करैं॥

पद—१३७

भोजन करत भावते जीके।
अरस परस दोउ खात खवावत सो सुख जानत लोचन हीके॥
कीन्हों कछुक मनोरथ प्रीतम देत बनाइ ग्रास मुख सी के।
हँसि चितई भरि नयन माधुरी रहि गयो कौर हाथ ही पी के॥
पंच भाव तर यह रस दुर्लभ सो सुख जानत अलिगन नीके।
हरि सहचरी मनोरथ मनके कृपा साध्य मिथिलेश लली के॥

पद—१३८

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया दोउ नवल माधुरी कुंज लसैं।
रस मत्त परसपर रूप छके करकंज कौर मुख देत हँसैं॥
बहु व्यंजन भाँति अनेक बने षट चारि अमी रस लै परसैं।
नव वैस किशोरी चहूँदिशि बाल खड़ी अनुशासन को तरसैं॥

अनुराग भरी रस रूप छकी मुसुक्यान मनोहर चित्त ग्रसैं ।
सुख सिन्धु अमी विच रामसखे मन मीन रसिक छवि जाल फसैं ॥

पद--१३६

अचमन करत राम सिय प्यारी ।
श्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जल झारी ॥
चन्द्रवती खर्का दर्पण लिये चन्द्रकला सुकुमारी ।
सुभगा लिये वागो प्रीतम कौ सहचरि लिये सिय सारी ॥
करि अचमन वैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी ।
रामसखे वलि वलि दम्पति छवि सुन्दर वदन निहारी ॥

पद--१४०

भोजन करि वैठे पावत पान ।
गोरी नवल किशोरी सियाजू प्रीतम श्याम सुजान ॥
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतर करावति घ्रान ।
वीड़ी वदन अधर छवि छलकत मन्द मन्द मुसुकान ॥
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान ।
प्यारी कर गहि उठे लाल तव रसिकअली सुखदान ॥

पद--१४१

वीड़ी दैहौं मैं नागर पान की ।
कथ चूना अरु लवंग सुपारी और लगाउँ मन मान की ॥
आवो ललाजी चौपर खेलैं वाजी लगाऊँ जिय जान की ।
'जनहरिया' हारे रघुनन्दन वीड़ी दई सनमान की ॥

मिथिला के डोम का पद—१४२

डोमवा कवरवा धैले ठाढ़े हो लाल ।

बहुत दिनन से दुलहा आसा लगौले बानी, से दिनमाँ आजु मोरा आइल हो लाल ॥ इ तो जुग जुग से बबुआ हमरे चलि आवे से अबकी के पारी हमार हो लाल ॥ एहो जूठन के बबुआ सुर नर मुनि तरसे से भगतन के होला अधिकार हो लाल ॥ कुरमिन वारिन इत उत चितबे दुलहा पत्तल हमरो चोरैहैं हो लाल । कर जोरि जोरि दुलहा विनती करत बानी डोमवा के आपन करि जनिह हो लाल । कहथिन रामा भक्त आशा चरण के दुलहा नेक नयनमां तनि हेरिह हो लाल ॥

मिथिला की डोमिन का पद—१४३

ए दुलहा, आपे से लागी नजरिया, तो पर मैं वारी सँवरिया ॥
शिर पर चीरा कमर पट पीरा पहिरे जामा केशरिया ।
गले बिच हीरा चभत मुख बीरा बिहँसत करे कहरिया ॥
छैला छबीला रंगीला नुकीला ओढ़े गुलाबी चदरिया ।
भौंह कमान तान नैन बान मारे भरि भरि के काजर जहरिया ॥
मिथिलाकी डोमिन अवध में वसवों जूठन बटोरब, भरि थरिया ।
अधर सुधारस दुलहा के चखि चखि ऐसे बितैहौं उमरिया ॥
अब राउर पिछवा ना छोड़बो चलवो मैं अवध नगरिया ।
नौंशे छवी विलोकत रहबो घर आंगन कचहरिया ॥
सरयू स्नान जब जैहो सियावर सांझ सबेरे दुपहरिया ।

महावर चरण प्रभु निरखत रहवों अँचरन वहारव डगरिया ॥
रंग महल के टहल बजइवो छिन-छिन डगरा दउरिया।
नेहलता दुलहा छवि निरखत प्राण जीवन धनु-धरिया ॥

विदाई प्रकरण वारहमासा पद--१४४

अब छाड़ि ससुरारि कहाँ जैहौं,सरकार,पिया रहि जइअउ मिथिला नगरिया में। आव आयल पूस मास, हिय अतिहिं हुलास, सब साजु सुख रास ससुररिया में ॥ माघ शिशिर सुहाई, लइहौं प्रेम की रजाइ, जाड़ा लगने न दूँगी वेअरिया में ॥ फागुन फगुआ खेलायव, रंग घोरिक ले आयव, रंग भरि-भरि रंगिहौं पिचकरिया में ॥ चैतमास रितुराज, फूले कुसुम दराज, गजरा गूथि गूथि गेरिहौं सुगरिया में ॥ माह आयउ वैशाख, तन तलफन लाग, छयला तोहिंको छिपइहौं छतरिया में ॥ जेठ तपतल बात, घाम सहलो न जात, पिया चलने न दूँगी डगरिया में ॥ माह आयउ अषाढ़, बुन्द बरिषैं अपार, छटा-घाट के लखइहौं कोठरिया में ॥ आई श्रावन की वहार, करिहौं झूला के तैयार, झूला झूलइहौं मैं लली फुलवरिया में ॥ भादव भरे नदी नार, नौका रचिहौं सँवार, झुमि-झुमि झिझरी खेलैहौं कमला सरिया में ॥ आसिन सरद वहार. चन्द चाँदनी झलकार, रास रचैहौं मैं कंचन मझरिया में ॥ कातिक दुतिया मनायब, शान्ती एतहीं बोलायव, बजरी मोदक पवैहौं मणि अरिया में ॥ अगहन उत्सव रचायव, गारी दे दे के जेमायव, मुद अस कहाँ जस ससुररिया में ॥

पद—१४५

एहन ससुरारी दुलहा कहु कहाँ पायब यो मिथिला जनि छारू, कोहवर में रहियौ बारहो मास ॥ सारी सरहज सब सेवे में रहती यो०, मन की पूरत सब आस ॥ जे जे आहाँ चाहब से से हम पुरायब यो०, कबहूँ न होये देव उदास ॥ फुलवा के चुनि–चुनि सेजिया बिछायब यो०, ताहि पर करब सुख विलास। हम सब संगहीं में सुख से बितायब, रूपलता त्यागि जग आस ॥

पद—१४६

नित नव व्याह रचैता पाहुन बसि जैता।
मिथिले में बसि जैता पाहुन कत जैता ॥

जो पाहुन अवधहिं चलि जैता, सारी सरहज कहाँ पैता ॥ भेटतन तहँ पकवान मिठाई, गारी बिना कोना खैता ॥ पड़ल आदत पाहुन कोनाक छोड़ैता, बहिनीके संग कोना गाँठि जोड़ैता ॥ अवध जो सारी सरहज लै जैता, अवध कि रहतैं ओत मिथिले बनैता ॥

पद—१४७

बसो किन राजा बना जनक नगरिया।
मृदु मुसक्याय हरो मन मेरो, डारी नेह रसरिया ॥
रसिक रमन चितवन चितचोरन मारी नैन कटरिया।
यहि पुर बीच बसाय सजनपुर निकट विदेह बखरिया ॥
सनमुख महल किशोरीजू के रुचि शुचि कनक अटरिया।
विमल चाँदनी चौक चमन की सुतरु सुगंध डगरिया ॥

सदा बसंत समीर त्रिविध जहँ बिचरहु मोद बजरिया।
ललना ललकि मिले नित लालहिं सीय सरिस प्रिय सरिया॥
सबहिं सनाथ करो राजा बनरे अति प्यारी ससुररिया।
हास विलास विविध विधि विलसहु करो परस्पर ररिया॥
करहिं कटाक्ष सुमुख मृगनैनी सरहज मारे नजरिया।
मौन मुदित नित अवध नगर को भेजत रहियो खबरिया॥

पद—१४८

छाड़ि ससुरारि ललन कहाँ जैहौ॥
मिथिला से जो अवध को जैहौ साँची कहो कब ऐहौ।
एक बेर आये सियाजू को पाये फिर ऐहौ कछु पैहौ॥
गारी देत सियाजू के नाते गारी के दुख जाने लैहौ।
श्रीरघुराज नागर ननदोई सरहज के सुधि जनि भुलैहौ॥

पद—१४९

ललन ससुरारि छाड़ि कहँ जैहौ, यह सुख कतहुँ न पैहौ।
सासु ससुर सारी सरहज सब मिथिला विरह सतैहौ॥
मानि ननद नाते ननदोई फिरि विधु बदन देखैहौ।
प्रमदावन भूलेहु जनि रघुबर निज कर पाति पठैहौ॥
जो तुम साँच अवध नृपनन्दन साँचि कहो कब ऐहौ।
ज्ञानाअलि तब सफल मनोरथ जब हँसि कंठ लगैहौ॥

पद—१५०

प्रीतम श्याम सुजान सजन संग चलना री आली॥
यहि मिथिलापुर जन्म भयो है शंकर गौरि पसाव।
स्वामिनी सील निधान सियाजू बहुरि न बनहिं बनाव॥

धाम शिरोमणि अवध कोशला रसिक शिरोमणि राम।
विपिन शिरोमणि श्रीप्रमोदवन जहाँ सकल सुख धाम॥
जासु विरह पच्छी शुक सारो अति अधीर पुर देश।
युगलप्रिया अब उचित न रहना चलना अवध विशेष॥

पद—१५१

जौं हम जनितौं कि रामजी पहुनमां विहनमां सबेरे घरवा जैहैं हो लाल। दश पाँच सखी मिलि राम पहुँ जइतौं से पहिले ही किरिया धरैतौं हो लाल॥ घोड़ला चढ़ल जात रामजी पहुनमां से फर फर उड़ेला चदरिया हो लाल। रामजी के शोभे रामा लाली हो पगरिया से सियाजी के सबुजी चुनरिया हो लाल॥ नीको न लागे रामा घरवा दुअरवा से नीको न लागे मोरा सेजिया हो लाल। कहति जनकपुर के सखिया सहेलिया से प्रीतिया लगाके दगा दै गेल हो लाल॥ एक मन करे सखि हे रामहिं संगे जइतौं से दूसरे लग जैहैं बुल दगवा हो लाल। धीरज धरु सखि हे राम फिरि अइहैं से संग नेने जनकदुलारी हो लाल॥

पद—१५२

मिथिला नगर तजि सिया जखन चललीं हे कि कहियौन बहिना, मिथिला खसल मुरझाय॥ कहलो न जाइया सखिया नृपति की गतिया हे०, नैना से अँसुवा झहरल जाय॥ विरहिन सुनैना रानी अंगना में कानथि हे०, जनु बिनु बछिया हुकरथि गाय॥ मुरुछि अहुरिया काटि सुगा मैना कानै हे०, सिया सिया रटनि लगाय॥

समदावन पद—१५३

वड़ा रे जतन सँ हम सियाजी के पोसलौं से हो रघुवर नेने जाय।
हाथी हथिसार रोवै घोड़ा घोड़सरवा रानीजी रोवत रनिवास ॥
मिलि लेहु मिलि लेहु संग की सहेलिया आब सीया चललीं विदेश।
आगे आगे रामचन्द्र पीछे पीछे डोलिया ताही पीछे लछुमन भाइ॥
जनकनगर में रोदन उठैत छै अयोध्या में बाजत बधाइ।
लक्ष्मीपति प्रभु गावें समदौनियाँ लिखल मेटल नहिं जाय ॥

पद—१५४

प्यारा राम बन्ना रघुनाथ सदा थे राजी रहिज्योजी।
राजी रहिज्योजी सदा थे कुशली रहिज्योजी ॥
हाँथ भेली मिथिला की नार, गाय रही सज सोलह शृङ्गार,
सुनो थे विनती राजकुमार ॥
विनती म्हारी ध्यान से सुनो बन्ना श्रीराम।
अवध जाय नित कीजियो एक हमारो काम ॥
सुवह दोफाराँ शाम याद म्हानें करता रहिज्योजी ॥प्यारा०॥
सखी सब आँसूड़ा ढलकाय, थोड़ा दिन ठहरोजी रघुराय,
लाल देख्या विन रयो न जाय ॥
हठ करने सूँ डर रही मत होज्यो नाराज।
म्हें तो भोली नारियाँ आप चतुर रघुराज ॥
पगां लागणा मात कौशल्याजी ने कहिज्योजी ॥ प्यारा० ॥
जानकी ने लेय मिथिला साथ, आवता रहिज्योजी रघुनाथ,
जिमास्यां उजला उजला भात ॥

फ़ुरसत लेय पधारज्यो आपहिं की ससुराल।
थोड़ा सा दिन राखस्यां विदा करौं ततकाल ॥
मनो कामना आप हमारी पूरण कीज्योजी ॥ प्यारा० ॥
गंगा जमुना जब तक वहसी, सूरजड़ी धूप धारा जब सहसी,
अमर थारी जुगल जोड़ी रहसी ॥
जोड़ी जुगल अमर रहे सब मिलि देहिं असीस।
माफ़ करीज्यो सांवरा थे मत करिज्यो रीस ॥
सीताबाईरा श्याम सदा सुख पाता रहिज्योजी ॥ प्यारा० ॥

श्रीअवध में परिछनपद--१५५

सखि अलबेलो म्हारो प्राण पियारो।
आयो आजु अवध मिथिला ते कोशलनाथ अनोखो कुमारो ॥
दुलहिन सहित चारिहू दूलह करवायो शिविका असवारो।
मातु करन लागी परिछन सब सियका घूँघट हुलसि उघारो ॥
सिय-मुखछटा रामसुख छाजति गोरवरन दरशो तनु कारो।
भोर भयो दशरथ राननिको कस ह्वै गयो कुमार हमारो ॥
मिथिला की नटखटी नागरी चेटक मन्त्र कछू पढ़ि डारो।
राई लोन उतारन लागी श्रीरघुराज जाय बलिहारो ॥

पद—१५६

सखी लखु सिय दुलही घर आई।
परिछन करि सब सासु उतारी पुनि पुनि लेत बलाई ॥
पाँवड़े डारत मनिगन वारत लै आई अँगनाई।
घूँघट खोलत कोटि शशी सम फैली फरस जोन्हाई ॥

चितवहिं चकित देखि दुलहिन को आनन्द सिन्धु अन्हाई ।
हेरि थकी सिय मुख पटतर छवि त्रिभुवन में नहिं पाई ।।
कोशलपति सत सक्र साहिवी वारयो मातु लजाई ।
बदन बिलोकि नेग देवे को कछु नहिं जिय ठहराई ।।
सखि मिस गिरिजा गिरा इन्दिरा देखन हेत सिधाई ।
श्रीरघुराज गुमान रूप को दीन्ह्यो बदन देखाई ।।

सवैया

वनरी लखि दीप दुहूँकुल की सरिता सरि गौरि सुमान सरेख्यो ।
शत सप्त प्रभृति भरी गृहमें मन चाहति सिद्धि खड़ी ढिग पेख्यो ।।
मुख देखन योग्य सिया समता अरु ढूँढ़ि थकी सब लोक असेख्यो ।
दै रघुनन्दनरत्न सियाकर सासु सकोच तऊ मुख देख्यो ।।

श्रीअवध में चुमावन पद—१५७

आजु चुमावन सिया रघुवर को नाउनि देल हकार गे माइ ।
आँगन चानन नीपू कौशल्या गज मोती अहिपन देल गे माइ ।।
अलस कलश लए पुरहर धाएल मानिक लेसू प्रहलाद गे माइ ।
पियर पीताम्बर रामजी के शोभे सीतहिं दहिन बैसाइ गे माइ ।
चुमवए बैसली मातु कौशिल्या चुमवथि सीता श्रीराम गे माइ ।।

मुँह दिखाई का पद—१५८

मुँह दिखाई सिया की अजब गुइयाँ ।।
शैर—कनक भवन के अहाते में भीर भारी है ।
हजारों रानियों की आ रही सवारी है ।।

गगन में लग गया देवाङ्गनाओंका मेला है।
पुरी की नारियों का भी बड़ा झमेला है ॥
सब गावें सहाना अजब गुइयाँ ॥ १ ॥

शैर—कैकेयी रानी ने उत्साह से घूँघट खोली।
देखती रह गई वह पीछे सम्हलकर बोली ॥
विश्व की शोभा न्योछावर है बहू के ऊपर।
रति रमा वाणी उमा कोई नहीं है पटतर ॥
है महल योग्य इन्हीं के सो मुबारक होवे।
नित्य नव केलि सुहागिन को मुबारक होवे ॥
सुख सो सब भाँति रहब गुइयाँ ॥ २ ॥

शैर—रानी कौशिल्या धीरमती मुजराकर बस फूल गई।
मणिमाल पतोहू को अपने कर सों पहनाना भूल गई ॥
तब तुरत सुमित्रा रानी ने उनके कर में वह हार दिया।
कंठश्री दुलही को देकर अपना भी मनोरथ सफल किया॥
मुख निरखि वधू को जियब गुइयाँ ॥ ३ ॥

शैर—इसी तरह से सभी रानियों ने मुँह देखा।
निछावरों की करे कौन कवि यहाँ लेखा ॥
अजिर में भूषणों की ढेर लग गई खुश तर।
सुमन से पाट दिया परियों ने मगन होकर ॥
अनुरागिन सबकी सब गुइयाँ ॥ ४ ॥

शैर—रानियाँ हट गई तब औरों की बारी आई।
शान्ताजी ने निकट बैठ उतारी राई ॥

वारी-वारी से दिखाने लगी श्रीमुख छविको।
ताव किसको है जो निज दृष्टि से देखे रवि को॥
सब विसरेउ कहब सुनब गुइयाँ॥ ५॥

शैर—जो आई रूप गुमान भरी इन्द्राणी आदि विबुध नारी।
उनके दिल औ निगाहों में हो गई अजब इजरत तारी॥
मुख है या अजब तमासा है कहती जू कलन्दर टर ही गई।
अपना ही मुख देखा उसमें अपना सा मुँह लेकर ही गई॥
हम बोलब मिलब हँसब गुइयाँ॥ ६॥

कवित्त

खोलि मुख दुलही को ननद लै नगीच बैठी,
देखिबे को युवतिन की जुरी यूथ बीसा है।
आगे से पीछे से दायें बायें से बिलोकैं सब,
निज मुख दीखैं पै न वाको मुख दीखा है॥
फिरि-फिरि जायँ आवैं पूछैं सब सासुन से,
काको यह तिलस्मात काको बकसीसा है।
ग्वाल कवि आपस में अचम्भा सब मानि कहैं,
सीसा की वहू है कि वहू को बन्यो सीसा है॥

श्रीअवध में आरती पद—१५६

मुदित मन आरती करै माता।
कनक वसन मनि वारि वारि करि पुलक प्रफुल्लित गाता॥
पां लागनि दुलहियन सिखावति सरिस सासु सत साता।
देहिं असीस ते बरिस कोटि लगि अचल होउ अहिवाता॥

राम सीय छवि देखि जुवति जन करहिं परस्पर बाता।
अब जान्यो साँचहू सुनहु सखि! कोविद बड़ो विधाता॥
मंगल गान निसान नगर नभ आनंद कह्यो न जाता।
चिरजीवहु अवधेस सुवन सब तुलसीदास सुख दाता॥

कंगन छोरन पद—१६०

गजब बनी गुण खानि ये सियाजू की कंगनियाँ।
छोरनि कला निधान कंगन छोरत हारे भूलि गये सब अभिमनियाँ।
शिव धनु तोरि अभिमानी बनि आयो बर मिटि गयो गर्व गुमनियाँ॥
गाँठ मरम नहिं पाये नवलवर, छोरत परत उलझनियाँ।
योगेश्वर जीवन धन हारि हिय, ललीजू की जो हैं चितवनियाँ॥

पद—१६१

ये न होइवो धनुष को तोड़िवो कठिन कंकण गाँठि छोड़िवो।
देखे अब तुम्हारी चतुराई, कैसे पाहन नारी बनाई,
जाके मुनिके जग्य कराई, मारे निश्चरगण समुदाई,
ये नहिं होवे मारीचमद मोरिवो-कठिन कंकण गाँठि छोड़िवो॥
जाके जनक सभा पग धारे, कैसे क्षत्रिण के मद मारे,
तुमसे परशुराम लड़ि हारे, सो तुम पर गये फन्द हमारे,
इहाँ चलिहैं ना नयना मरोरिवो-कठिन कंकण गाँठि छोड़िवो॥
मोहे जनकपुरी की नारी, वे तो सारी लगे तुम्हारी,
आखिर अबला आई विचारी, तिनको बिना हथियारन मारी,
ये न होवे पराइ चित चोरिवो—कठिन कंकण गाँठि छोड़िवो॥

तुम रघुवंशी कुँअर कहाये, जगमें अगनित यश फैलाये,
कबहूँ हारे ना शीश नवाये, कह द्विजगुरु को शीश नवाये,
अब सीखो ललीको कर जोड़िबो, कठिन कंकण गाँठि छोड़िबो ॥

कवित्त

बोली एक नारी सुनो अवधबिहारी यह
शंभु धनु हैं न जाहि वेगि गहि तोरोगे ।
रसिकबिहारी हौं तिहारी प्रभुताई तब
जानौंगी सुकंकण की गाँठि जब छोरोगे ॥
ता छिन छबीली एक दूजी हँस बोली श्याम
आज धीरताई वीरताई सब बोरोगे ।
तुम पै तो तौलौं न छूटि हैं छबीले लाल
जौ लौं नहिं जनकलली के कर जोरोगे ॥

दुलहिन छवि वर्णन-पद--१६२

अति छबि जनकलली की अलकैं ।
चिकनारी कारी घुँघुरारी चन्द्रवदन पर झलकैं ॥
झूम रही नागिन सी दोउ दिशि देखि थकित भई पलकैं ।
सूरकिशोर लाल दशरथ को देख देख मन ललकैं ॥

पद--१६३

सियाजू आज बनी गोरे गात ।
चुरिया चमकन सरिया झमकन रचि रहि मेहती हात ॥
चरवन पान पीक झुकि गेरनि मन्द मन्द मन्द मुसुकात ।
कृपानिवास अलिन बिच बैठी रूप भरी इतरात ॥

पद--१६४

सखिन मधि राजित जनकलली।
अलिगन कुमुदकली सी भ्राजहिं सिय जनु चम्पकली॥
शशि वदनी रमणी रघुवर की सुषमा वेलि फली।
जाकी छवि निहारि प्रीतम की एकएक मति न चली॥
अंसन भुज धरि जासु कुमर नित फिरत अशोक गली।
रसमाला मेरे मन भावति सिय विश्राम थली॥

पद--१६५

बढ़ौ नित जनकलली को भाग।
कनक भवन स्वामिनी सखिन बिच रही जोति ज्यौं जाग॥
जाको जस गावहिं विधि नारद सारद शिव शुक काग।
सो प्रभु जाकी भौंह निहारत पग्यो प्रेम के पाग॥
जाके सकल अंग अंगन में लाग्यौ अचल सुहाग।
रसमाला चिरजिवो लाड़िली मिलि पिय के अनुराग॥

पद--१६६

सिय छवि वरनि सकै कहु कौन।
उमा रमा शारद गणेश श्रुति शेष रहे धरि मौन॥
हम नित निरखि विचारि यही छवि राखि सुखी उर भौन।
उपमा कहुँ न लही तिहुँपुर में सिय सम कीजिय जौन॥
हम सबहुन अनुचरी जानि हँसि चितै रहति दृग कोन।
रसमाला सिय वदन निरखि छवि वारहु राई लोन॥

पद—१६७

सियाजू मोहि भरोस तिहारो ।
नातो नाम ग्राम मिथिला को और न हितू हमारो ।।
सुनु मिथिलेश कुमारि लड़ैती आपन विरद सम्हारो ।
मन भावन की यही बिनती हैं चरणन से जनि टारो ।।

पद—१६८

प्रियाजू के नैनन की बलिहारी ।
भाव भरे रस भरे मनोहर मुदप्रद अवधविहारी ।।
चितवनि चपल चतुर चित चोरनि मुरनि ढुरनि निज न्यारी ।
अंजन बिनहिं सोहावन भावन बरसावन सुख वारी ।।
पगे प्रेम प्रीतम सुजान नित नवल रसिक हिय हारी ।
हेमलता उपमान वारि सब अनिमिष रही निहारी ।।

पद—१६९

बोलनि ललित लड़ैतीजू की ।
श्रवन सुनत सानंद रसिक पिय जिय रुचि चारु चौगुनी नीकी ।।
मधुर रसाल सुधा सित शत गुन सरल सुभग भूषन रस तीकी ।
अतिहिं अमोल अलोल लगन मन मनन करत लागत कुल फीकी ।।
मंगल सदन वदन बिच राजत जनु शशि महँ शुभ सुमन अमी की ।
हेमलता बानी रस सानी जीवन जड़ी रसीले पी की ।।

पद—१७०

हमारे माई जनकललीजू के राज ।
जाके रस बस भये रघुनन्दन रसिकन के सिरताज ।।

पाटी पारत माँग सँवारत अलक कपोलन माँज।
जीवन जरी भरी सब रस सों करि हिय हार खलाजु॥
रचि रचि आभूषण पहिरावत छाड़ि दई कुल लाज।
सदा अधीन रहत हैं सियके गई सकुच सब भाज॥
सिय जानी रानी महारानी निरखत करतल माल।
मुख मयंक निरखत हैं छिन छिन भये चकोर के राज॥
रास समय नाचत प्रिया आगे गावत बाजत साज।
प्रियासखी के सिय स्वामिनि के लाल करत सब काज॥

पद—१७१

स्वामिनी तोर सुहाग मनाऊँ।
श्रीमिथिलेश किशोरी सेवा जब जब यहि जग आऊँ॥
अतर फुलेल अरगजा सुन्दर पिय प्यारी उबटाऊँ।
बीरी सरस लगाइ पवाऊँ रस की बैन सुनाऊँ॥
प्रीतम सों नित लाड़ लड़ाऊँ टहलिनि होइ अपनाऊँ।
श्यामसखे दरबार रहूँगी जूठनि आस धराऊँ॥

पद—१७२

सियाजू के अरुनारे दोउ तरवा, मानहुँ अनुरागिन के घरवा॥
का गुलाब का कमल कँटीलो का बड़ लाल अनरवा।
का कुसंभ जल बुंद परतहीं बिगरत रंग निचोरवा॥
का मखमल का सिरिस कलंगी का मालती पतरवा।
इनकी कोमलता के आगे का कपोत बटपरवा॥

ऊरध पदुम कल्पतरु अंकुश रेखन की उजियरवा।
एक एक रेखन पर वारों त्रिभुवन को सिगरवा ।।
जिनके धोवत डरत देवता जिमि चुई परइ अतरवा।
इनसे लगन नहीं तो विरथा दंड कमंडल करवा ।।

पद--१७३

सियाजू रानिन में महारानी, और सबै रौतानी ।।
चितवत भौंह खड़ी कर जोरे इन्द्रानी ब्रह्मानी।
गौरा पान लगावत रचि-रचि रमा पवावत आनी ।।
आठौ सिद्धि खड़ी करजोरे नवनिधि मनहुँ विकानी।
कोटिन ब्रह्माण्डन की प्रभुता रोम रोम अरुझानी ।।
जो माया एकै घाटै पर सबहिं पियावत पानी।
सोउ चाहत जाकी करुना को बार-बार सनमानी ।।
जा विनु पातौ हिलि न सकत जो सब घट माह समानी।
संत जनन की इष्ट देवता राम प्रिया जग जानी ।।

पद—१७४

सियाजू की सर कर सकत न राम।
याको न्याव करहिं बेलागी इहाँ न हठ को काम ।।
जनक देवैया राम लेवैया काको ऊँचो धाम।
जग में प्रथम सिया कहि पाछे परत राम को नाम ।।
श्रीपद ही से सबकी शोभा सो श्रीसीय ललाम।
सीय चरित ही धरे राम पर रिषि की यही कलाम ।।
केस सँवारन पद धोवन में को छिपि बनत गुलाम।
देव रहस्य समुझि मन सुमिरहु सिय को आठो जाम ।।

पद—१७५

किशोरीजी राखि शरण मोहि लीजै।
दीन दयाल प्रणत हित पालक अवगुण चित नहिं दीजै॥
तुम सम हितू नहीं जग मेरो अरज कान सुनि लीजै।
अली वृषभान कुँवरि विनवत हैं आपनो कर गहि लीजै॥

पद—१७६

सियजू के दृग छवि नित्त नवीन।
अंजन मिस रंजन मन पिय लखि श्याम सु डेरा कीन॥
गौर अंग अरुणाम्बर झीनहुँ कहि न सकत गति झीन।
छिन छिन छटा घटा रस बरसत चित चातक रस लीन॥
नित संयोग वियोग न सपनेहुँ निज मुद खुद लैलीन।
कृपा साध्य गुरु जुगलविहारिनि जानहिं रसिक प्रवीन॥

पद—१७७

प्रियाजू के नेह भरे दोउ नैन।
अंजन जुत रंजन मन रंजन अलिगन के सुख दैन॥
खंजन मोर मीन पंकज दल दुरि बन कोउ जल सैन।
रती कहैं मैं अहौं रती भरि मैन कहैं सम मै न॥
उमा रमा ब्रह्माणि आदि सब तौली सुमति तुलै न।
श्रीमिथिलेश कुमारि प्यारि पिय उपमा तो कहुँ है न॥
जेहि दिसि हँसि दरसत मुद सरसत बरनत बरनि बनै न।
जुगलविहारिनि जानत प्रीतम जे निरखत दिन रैन॥

पद—१७८

किशोरीजू के अनुपम रसमय बैन।
सुधा सुधाकर शुक पिकहूँ नहिं कोकिलहूँ सम हैं न॥
मंद हँसनि रद लसनि अधर छवि फँसनि पिया प्रद चैन।
अंग अंग छवि फवि कवि दवि मति शारद बरनि सकै न॥
करत विहार अपार पिया संग कनक भवन सुख दैन।
जुगलविहारिनि भरि उमंग सखि सेवति हैं दिन रैन॥

पद—१७९

दुलहिया दूलह देखो दिलदार।
जनकल्ली यह फली भाग बस भली देवतरु डार॥
निमिकुल सिन्धु चन्द्रिका प्रगटी अवध कियो उजियार।
सुधामुखी दूलह दृग पीवत छवि पियूष की धार॥

पद—१८०

नवेले लाल की दुलही हो॥
निमिकुल कमल प्रभाकर स्वामिनि रघुकुल सुख उलही हो।
अवध ललन नव नेह ग्रन्थि की कलित कला खुलही हो॥
निज रुचि रुचिर प्रीति पालन लहि ललन ललकि सुलही हो।
कामदेन्द्र सुकुमार लाड़िली मम शिर की कुलही हो॥

पद—१८१

मोहिं तो भरोसो सिया जू रावरी चरण को।
प्रेम राशि बसत सों पदतल रजकण कौशलकिशोर मन मूरि सो
हरण को॥ 'तव पद' तरवा तरणि की किरण मेरे कब उगिहैं

उर मंगल करण को। सार रस रूप नित सुख जहँ सरसत
शुभ गुण खानि भक्ति उर आभरण को। नेकु नेह करत
निहाल होत जन जिय विरद उदार बिनु कारण भरण को॥

पद—१८२

हमारी सिया सुन्दरता की सीमा।
अंग-अंग प्रति कोटि रमा-रति वारौं निधरक ही मा॥
मुख छवि निरखि चन्द्र नभ में गये भ्रमत लाज दुख जी मा।
पिय की जीवनि मूरि सजीवनि छन बिछुड़त दुख भीमा॥
वारत राई लोन छिनहिं छिन वारि उतारत पीमा।
लखि रसमोद सुअंग माधुरी पान करत न अघीमा॥

पद—१८३

प्यारीजू तिहारी चन्द्रानन पर प्रीतम नयन चकोर किये री॥
एक पलक टारन नहिं चाहत निरखत हैं भुज अंश दिये री।
तृप्ति न मानत कबहुँ रसिकवर रूप सुधा रस पान किये री॥
धनि धनि भाग सोहागिनि तेरो धनि यह सुख सरसात हिये री।
सियाअली यह स्वाद महारस तेरी कृपा बिनु कौन पिये री॥

पद—१८४

बनी छवि स्वामिनी सियजू की॥
कोटिन रवि शशि द्युति पर लाजत सब उपमा भइ फीकी।
ब्याह सिंगार सजति अंग अंगनि लोनी मनहरनी की॥
धन धन भाग अवध बनरा तेरो पायो दुलहिनि नीकी।
सदा सुखी रहो दुलहिनि दुलहा जीवनि सियाअली की॥

पद--१८५

दुलहिया लाड़िली अलवेली ॥
अति सुन्दरि सुकुमारि सलोनी व्याह शृँगार सजेली ।
राजति दूलह संग मराडपतर कोटिन चन्द्र उजेली ॥
जैसहिं नवल बना मनभावन तैसेहिं प्यारी नवेली ।
सियअली लखि लखि न्योछावरि वारति प्राण सहेली ॥

पद--१८६

प्रीतम वड़ प्रेमी छथि प्यारी ।
तव अनुराग रंग नयननि में छैन छायल अरुणारी ॥
पीत रंग कटि वसन रुचै छनि पीत उपरना धारी ।
पीत यज्ञ उपवीत विलोकिऔन पीतहिं खौर सम्हारी ॥
सी सुनिते सम्भ्रम दोड़ै छथि ता ततछन सव छारी ।
सीता जापक जन पर होइछथि वार वार वलिहारी ॥
अधरहिं धैने सदा रहै छथि रसिकराज रसकारी ।
रहिऔन अहूँ सदा रुख रखिते रुख राखनि सुकुमारी ॥
ई छी अहाँ कि ओहे अहाँ छी ई अगम्य गति न्यारी ।
पगल प्रमोद मोद मन्दिर में निवसू सदा सुखारी ॥

पद--१८७

श्रीसिय प्यारी ये, परम मंजु अछि आहाँक कंज दृग कोर ।
प्रीतम टकाटकी लगौनहिं रहै छथि, वनि मुख-चन्दक चकोर ॥
कर पर चादर चरण धरि सादर, चित्रित करैछथि चितचोर ॥
परम सौभाग्य गुनि आनन्द झुमैछथि, चुमैछथि प्रेम विभोर ॥

मछुका कपोल कराठ केशर कस्तूरी,ठगैछथि, तिल दैं सुठोर ॥
उमगि उमगि अंगराग रंगैछथि, रंगि अनंग रस बोर ॥
ततसुख सुखी रुख रखिते रहैछथि, नैनहिं भरने निहोर ॥
नख सिख साजही में हाजिर रहैछथि, मोद रसिक सिरमौर ॥

पद--१८८

प्यारीजू प्रीतम अहाँक प्रेम बस कहु की की नै करैछथि ये ।
अनुछन छटा, छकैत रहैछथि, एकटक पल न टरैछथि ये ॥
छथि अव्यक्त व्यक्त बनि चरण अलक्त भरैछथि ये ।
अति आशक्त जकाँ उन्मत्त जकाँ मस्तको धरैछथि ये ॥
पाटी सिटै छथि चोटी गुहैं छथि टुटक डरै छथि ये ।
अपना जुलुफ सँ सौगुन कोमल हिय गुनि लाज मरैछथि ये ॥
लीलहुँ कृपाकोर मोरिते पद पद्म परैछथि ये ।
सीता जापक जनके ऊपर अतिशय मोद ढरैछथि ये ॥

पद--१८६

गरज है किशोरीजी हमें आपही से ।
न मतलब हमें है जगत में किसी से ॥
विरद आपका मैंने जबसे सुना है ।
लगन लग गई है मिलन की तभी से ॥
भला कैसा होता है विरही का जीवन ।
जरा पूछ लीजै हमारे ही जी से ॥
यही एक जीवन में प्रण है हमारा ।
मिलेंगे किसी दिन सिया स्वामिनी से ॥

चहैं स्नेहलतिका चरण पै लतरना ।
जो होने को होगा सो होगा इसी से ॥

पद--१६०

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे महारानी सिया, अहीं के चरणमां के आस ॥ करम धरम हम किछियो ने कयलहुँ हे म०, सब दिन सोहायल सुख विलास ॥ मिथिला नगरिया बिच भेल मोर जनमुआँ हे म०, एकरे भरोसा वो विसवास ॥ विधि हरिहर सुर नर मुनि किन्नर हे म०, सबके पुरवलौं एहि ठाम आस ॥ अही पर स्नेहलता आशा लगाओल हे म०, दिय सिय पग में निवास ॥

पद--१६१

स्वामिनी पद पंकज की ओर लगी हैं आशाओं की डोर । अन्तर की तुमहीं सब जानो, प्यासे हियहूँ को पहिचानों, करो कृपा की कोर ॥ प्रीति रीति की बेलि पुरानी, सूख रही पाये बिनु पानी, सींचिय अमी बहोर ॥ स्वामिनी सहज स्वरूप सम्हारो, जानि अबोध न मोहि बिसारो, ना अब हाथ सिकोर ॥ युगल स्वरूप सदा हिय ध्याऊँ, रसना से रसमय गुन गाऊँ, करि दीजै रस चोर ॥

पन--१६२

देखो देखो सुछवि दुलहनकी, सहेली मोरी संगकी, सजनसे आला है ॥
शीश चन्द्रिका चन्द्र सिमिटि छवि छाकत रतिहूँ अनंग ।
कारे कच कुटिलाई कहर करे लट भामिनी भुजंग ।
श्रवण झलक झुमकन की, हलक बुलकन की सजन० ॥

विन्दु विचित्र भाल भल चमकत सरसत सरस सुहाग।
नीरज नयन सुसयन नवल उर उमगावत अनुराग॥
मधुराई मुसुकन की, दुति दशनन की सजन०॥
कण्ठमाल कण्ठा कण्ठसर हिय हार हमेल सुढंग।
चन्द विजायठ कंकण कर मणि कर दामिनि दुति दंग॥
रसिक जनन मनभावन सुवस्त्र सोहावन सजन०॥
नूपुर नगन नखन जोती गति शरणागति दरशन।
अरुण वरण आकर मंगलपन पगतल मंजु लशन।
मनमोहन मद गंजन, मोहन मन रंजन सजन०॥

सिय स्वामिनी पद--१६३

तव पदपदुम विहाय ना भरोस मोहि, जोहि जिय लीजै सुधि मेरी।
यदपि हौं अधम मलीन अघ ओघ खानि, तदपि कहाऊँ तेरी चेरी॥
प्रभुहूँ ते सरस क्षमादि शुभ गुन सिन्धु, कीरति वदति श्रुति तेरी।
ताहि बल सो चरित नाम लै उदर भरौं, निदरि गुणादि कृत फेरी॥
करत अधिक छोह तापै आप प्राणनाथ, जापै रंच तोर दृग हेरी।
ताते बार-बार करजोरि माँगौं दीन होय, राखु निज चरणन नेरी॥
द्रवत न कौशलकुमार तव नेह विनु, करे क्यों न योग कर्म ढेरी।
जैहौं नहि द्वारे ते निकारेहूँ पै दयानिधि साँची गुनो कहतहौं टेरी।
जौन माया योगी सिद्ध ज्ञानी विधि शंभुहूँलौं निजवश माँहि किये जेरी
सोऊ तव भृकुटी विलोकति रहति सदा चाहति कटाक्ष कृपा केरी॥
जनककुमारी रघुवंशमणि प्राण प्यारी अब जनि कीजै नेक देरी।
नेहलता प्रीतम से दीजिये धराय कर बिगड़ी बनेगी एक बेरी॥

दूलहा छवि वर्णन-पद--१६४

ये छवि पर वारौं अमित वर चन्दा ॥
श्याम गौर भुज अंश दिये हैं लसत सखिन सुखकन्दा ।
हँसत मन्द बतरात परस्पर चितवनि में जनु फन्दा ॥
रूप रसिक रस छके युगल मिलि ज्यों मधुकर मकरन्दा ।
अग्रअली के प्राण जीवन धन जनकलली रघुनन्दा ॥

पद--१६५

छवि देखु रंगीली पाग की ॥
चकित भई मिथिला की नागरि भरि अँखियाँ अनुराग की ।
राजत राजकुमारन के फबि रहे मनोहर भाग की ॥
कलंगी झूकि रही मानो ऐसी कली कल्पतरु बाग की ।
सूरकिशोर जनक कुँवरिन के अचल ध्वजा है सुहाग की ॥

पद—१६६

ललन मोरी अँखियन प्याओ छवि प्याला ॥
बारे ते मैं सिया संग लागी शरण मैथिली पाला ।
अनत न जाऊँ कतहुँ ना हेरूँ तुम बिन दशरथ लाला ॥
अब आई तुम्हरे घर लालन दोउ मिलि करहु निहाला ।
कृपा दृष्टि चितवनि पर बलि गई युगलप्रिया नई बाला ॥

पद—१६७

जादू भरी राम तुमरी नजरिया ।
जेहि चितवत तेहि बस करि राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया ॥
जुलफन जुत मुखचन्द्र प्रकाशित नासामणि लटकन मन हरिया ।
युगलप्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल बिच मानो मछरिया ॥

पद—१६८

बनरा तोरी चितवनि मन लागा रे।
जब ते आये अवध नगर से मिथिला की रति जागा रे॥
हो तुम सुन्दर श्याम सुभग वर सिय बनरी रस पागा रे।
युगलप्रिया की युगल भावना रसिकन मन अनुरागा रे॥

पद—१६६

जिया परिगै नयन के फेरे में।
वशीकरन है जादू टोना मन्द मन्द हँसि हेरे में।
काह कहूँ कछु कहत बनै नहिं घेरि लियो छवि घेरे में।
मिलत नयन जिय तड़फ जात है तिरछी तकनि तरेरे में॥
छाय रही दृग श्याम मुरतिया बिलग न साँझ सवेरे में।
सब बिधि शरण सियाजू की रहिहौं रामचरण के नेरे में॥

पद—२००

पिया बाँधी कटारी तैने आँखन में।
तेरी अदा जोग अवनी पर नजर न आवे कोई लाखन में॥
जप तप संयम योग समाधी नेम धरम सब ताखन में।
शीलमणी तेरे नैना रसीले कर कतलान कियो खाकन में॥

पद—२०१

मधु रसवा चुवै तेरी आँखन में।
जादूगर जालिम जग जाहिर जीत्यो सकल जमातन में।
कलित कलाकर कोष काम घन चपला चटकि छियो छन में।
बड़े दिमागदार हो दिलवर सबको दरद देत छन में॥
युगलअनन्यअली मन फँसि गयो यह तेरी मुर मुसुकन में॥

पद—२०२

बना तेरी छवि पर बलि बलि जाऊँ ॥
ऐसी द्युति अनमोल लही कित कहौ कौन विधि गाऊँ ।
सौरभ सदन सरस सोहन तन सुखमा लखि हरषाऊँ ॥
मोहनि मन उन्माद बढ़ावनि मधुर बचन हिये लाऊँ ।
चितवनि चपल चित्त चोरन तकि छकि जकि होश गमाऊँ ॥
प्रियवर बैन सुधा निन्दत सत सुनि सनेह सरसाऊँ ।
युगलअनन्यअली दूलह लखि देह गेह बिसराऊँ ॥

पद—२०३

मीठी तान सुना दे सुघर बलमाँ ॥
अधर अरुण तर दसन पाँति वर दामिनि मानो बसी थलमाँ ।
कहाँ छिपै छलिया छलके मद पैयाँ परों लग जावो गलमाँ ॥
नहिं बिसरे वह रूप साँवरो कल्प समान बितै पलमाँ ।
युग्मअली दरसाय जावो प्रीतम चौतनियाँ सबुजी सलमाँ ॥

पद—२०४

प्यारी पियहिं सितार सिखावत ॥
गान तान गत बोल भेद बहु चातुरि निरखि सखी सुख पावत ।
कंज करनि पिय कर गहि कामिनि रीति रहस्य अनूप बतावत ॥
सीखन मिस नागर रस सागर मदन मोदमय कला जगावत ।
यद्यपि परम प्रवीन रसिकवर तउ प्रियाजू से सीखन भावत ॥
दंपति नेह केलि रस निर्मल सकल भाव नव रस बरसावत ।
हेमलता अवलोकि युगल छवि सिखन सिखावन पर बलि जावत ॥

पद—२०५

सजीवन जीवन युगल किशोर ।
रैन ऐन मुद मैन चैन चय चखत चतुर चितचोर ॥
हँसत हँसावत होश जोश बिन बोस लेत रस बोर ।
सुधि बुधि विशद विहाय छाय छबि ह्वै रहे चन्द चकोर ॥
आस पास सहचरी सोहागिनि सिखवहिं मदन मरोर ।
युगलअनन्यअली रसिया दोउ उरझि रहे निशि भोर ॥

पद—२०६

अलवेला बना अनमोल ललित छवि सोहना ॥
अंग अंग रसरंग बिराजित साजित नख शिख सोहना ।
उपमा नैन निहारि निरस नित सम सुवरन मनि लोहना ॥
अग जग ठगि रहे सुभग माँझ मुद माते सुख संदोहना ।
युगलअनन्यअली चाहत चित चितवनि चमकनि जोहना ॥

पद—२०७

निरमोहिया से लागी लगनियाँ रे ॥
जागत जतन जुगुति पर दूनी ऐसी विरह अगिनियाँ रे ।
नाहक्क सीख देतिहौ हमको डसि गई नेह नगिनियाँ रे ॥
ना जानो केहि देश विलमि रहे ठगि लियो कौन ठगिनियाँ रे ।
युगलअनन्यअली प्रीतम हित सब विधि भई जोगिनियाँ रे ॥

पद—२०८

अब हम भईं सोहागिनि साँची ।
कृपा करी कोशलपति प्रीतम मधुर मोहब्बत माँची ॥

विसरी विषय विभूति वासना नाशी जग मति काँची।
नूतन नेह बाँधि नूपुर पद परा प्रीति श्रुत नाँची ॥
साधन सकल निवारि नेम करि युगल नाम सन राँची।
युगलअनन्यशरण सीतावर रहस भावना याँची ॥

पद--२०९

अवध छयल छवि द्दगन वसी री।
रामचन्द्र मुखचन्द्र मनोहर फीको लगै अलि सरद ससी री।
राजत रतन जड़ित सिंहासन क्रीट मुकुट पर कलँगी ल्सी री ॥
मुक्तामाल विराजत उर पर पीताम्बर कटि फेंट कसी री ॥
वायें अंग जनकजा राजत सीस चन्द्रिका अधिक लसी री।
रामचरण वारत मणि भूषण देखि छवी सखि मंद हंसी री॥

पद—२१०

प्रीतम तोरे नयना हो, मेरो वरवस मन हरि लीना ॥
श्रवण सलाह उदार दार लगि प्रतिक्षण लक्ष नवीना।
शोभा सार सार मारक झख कंज खंज मृग मीना ॥
रैन ऐन नहिं चैन लखे विनु वावरि पाँवरि कीना।
कोविद परमानन्द दाइ ये अद्भुत कृत दुख दीना ॥

पद—२११

रँगीले वना दूती तेरी मुसुकान।
घर घर गवन कियो मिथिलापुर वातें करें लगि कान ॥
निज वश करि सब नवल नागरी नेक लाज विच वान।
रसिकअली सोऊ थकि रहिहैं नेह भयो अगवान ॥

पद—२१२

आली री सिया को बनरा अजब रंगीलो ॥
माथे मणि मौर सोहैं मोतिन के लर पोहैं,
लसत कपोल गोहैं कलँगी झुकीलो ॥
लम्बे-लम्बे बार चिकनारे घुँघुरारे कारे,
कजरारी आँखें नासामणि चमकीलो ॥
साँवरे बरन तन अति सुकुमारताई,
अंग अंग सुषमा की अनी अटकीलो ॥
गुमराई गुरूवाई गुणताई छाई दृग,
शीलता स्नेहताई अति दरशीलो ॥
भूली भूख प्यास गई लाजहूँ सकाई माई,
निशि दिन मन रहैं छबि को छकीलो ॥
मनहीं में प्रण कर तन अर्पण कीनो,
जानत सुजान चित हित अधिकीलो ॥
रसिक अली गुरुजन जानी बात यह,
कहाँ लौं छिपाऊँ नेह नद उमगीलो ॥

पद—२१३

समुझु सजनी आशिक होना जरूर ।
जो दिलदार यार नहिं बोलै तौ भी रहना हजूर ॥
सियवर सुयश सुधा वसुधातल और यतन सब धूर ।
सो तजि योग यज्ञ व्रत साधन पियत विषय विष कूर ॥

रसिक सोई रसना निशिवासर नाम सुधारस पूर ।
पिय मुखचन्द चकोर दृगन करि पियै छवि रस नहिं दूर ॥
तन धन जाय जान दे प्यारी लगी लगन मति तूर ।
जखमी होय जखम क्या देखै ह्वै जाना चकचूर ॥
विरहिनि होय विरह शर तीखो सहै कहै नहिं शूर ।
ज्ञानाअलि सोइ पिय की सोहागिनि जो जिय धरै सबूर ॥

पद--२१४

कैसा बना वर बाँका, री सजनी ।
करि सिंगार सुभग सुषमानिधि अति मन हरन मजाका, री० ॥
नैन पैन जनु बान मयन के मारत चोट अचाका, री० ।
मधुरअली कैसे घर जायब पड़त गलिन विच डाका, री० ॥

पद--२१५

देखु सखी छवि राम बने की ।
कंचन मौर खौर केशर शिर जगमग द्यु ति मनिमाल घने की ॥
पग जावक कंकण कर राजत भूषण सकल सुदेश ठने की ।
वैजनाथ कहि कौन सकै गति मृदु कटि पर पट पीत तने की ॥

पद--२१६

श्यामसुन्दर रघुनाथ की छवि लखि मन न अघात री माई ।
निरखत ललकि पलक नहिं लागत देह विवश होइ जात री माई ॥
आठौ याम श्याम रंग भीनी काम न कछू सोहात री माई ।
वैजनाथ भूली सब सुधि बुधि दृग माधुरि पगि जात री माई ॥

पद—२१७

आली सियावर कैसा सलोना ।
कोटि मदन मूरति न्यौछावरि दै दै सखी चलि भाल दिठौना ॥
मोर डरत जिय डगर नगर महँ कोऊ सखी करि देइ न टोना ।
हौं तो जाइ ललकि गर लगिहौं रैहौं न देइ जो मोहि भरि सोना ॥
कहर परी यह जनक शहर महँ छूट्यो खान पान निशि सोना ।
श्रीरघुराज मोर वारे पर अब तो मोहि फकीरिन होना ॥

पद—२१८

सखि लखन चलो नृप कुँवर भलो, मिथिलापति सदन सिया बनरो ॥
शिर मौर बसन तन में पियरो, हठि हेरि हरत हमरो हियरो ॥
उसे सोहत मोतिन को गजरो, रतनारी अँखियन में कजरो ॥
चित में चित चोरत सखि समरो, चितये बिनु जिय न जियै हमरो ॥
अलकैं अलि अजब लसैं चेहरो, झपि झूलि रह्यो कटि लों सेहरो ॥
युवती जनको जालिम जहरो, मन बैठत लखत मैन पहरो ॥
पुनि ऐहैं नाहिं जनक शहरो, ले री लोचन लाहु न करु गहरो ।
यक है वहि लखत बड़ो अनरो, पुनि रुकत न रोकेहु मन उनरो ॥
चित चहत अरी लगि जाऊँ गरो, रघुराज त्यागि जग को झगरो ॥

पद—२१९

बनाजी प्यारी चितवनि है चितचोर ॥
भौंह कमान बान बाँके लोचन कजरारे दृग कोर ।
जुलुफैं जुलुम करत मुख ऊपर अंग अंग भरी हैं मरोर ॥

तुरंग नचावत आवत सजनी दशरथ राजकिशोर।
सरयूसखी बनरा की छवि पर वारिय काम करोर ॥

पद—२२०

ललन पर टोना जनि कोउ डारो।
मिथिलापुर की नारि सबै मिलि आपन नैना सम्हारो ॥
लावो री कोउ भाल दिठौना तरफत जियरा हमारो।
सिया मातु महरानी सुनयना राई लोन उतारो ॥
राम लखन मन मोहनी मूरति लक्ष्मीनिधि सम प्यारो।
लालमणी राघव बनरे पर तन मन धन सब वारो ॥

पद—२२१

बनि आये सुघर रघुराज बनरा मिथिला में।
शिर सोने के मौर विराजे जगमग जोति अपार अनुपम सेहरा में ॥
श्याम बरन तन बसन सुरंग दुति उपमा छवि दरसात ज्यों घन चपलामें
शिवदयाल सुर नर मुनि मोहैं देखि धरत नहिं धीर बर कोउ अबलामें॥

पद—२२२

सखी री मन लै गयो अवधकिशोर ॥
मृदु मुसक्यान मदन मन मोहन अवलोकन चितचोर।
चितवत मनहुँ मदन सर मारे पंकज दृग की कोर ॥
विवस भई तन मन सुधि विसरी चितय रही वहि ओर।
निरख अनूप रूप दृग उरझे परम प्रेम की डोर ॥
प्रमुदित अति अनुराग पुलक तन जिमि शशि ओर चकोर।
तृप्ति न होत मधुर छवि निरखत पियत सुधा दृग बोर ॥

लोक लाज मरजाद कान कुल निकल गई तृन तोर ।
निश दिन मौन मुदित मन विचरत जनक नगर की खोर ॥

पद--२२३

नवल बनरा मन मेरो हर लीनो ।
भाल विशाल विशद वर भृकुटी, राजिवनयन लखित कजरा, विलसत दुति झीनो । केशर खौर मोर मनि शोभित, कटि लग झूम झुको सेहरा, मनसिज मद छीनो ॥ घुँघुरारी अलकें अति प्यारी, जनु घन माल बसत भँवरा, रसिकन रस भीनो ॥ भूषन वसन सिंगार सुभग तन, मोतिन माल लसत गजरा, भृगुपद उर चीनो ॥ मुनि मन सहज हरन चित चितवन, मृदु मुसक्याय हरो हियरा, टोना कछु कीनो ॥ छकन छको छवि निरख लगो मन, प्रेम पियूष पगो जियरा, तन मन धन दीनो ॥ रामकुमार बसो हिय सजनी, अति अनुराग उठत लहरा, अमृत रस पीनो ॥ मौन मुदित कुल कान लाज सब, तृण सम तोर जगत झगरा, सुख निधिमय जीनो ॥

पद—२२४

अवधकिशोर बनो प्यारो बनरा ।
हेम जड़ित मनि मौर विराजत, जनु रवि किरण करोर, लुरक रहे सेहरा ॥ भाल विशाल खौर केशर की, अलक लटक दुहुँओर, बसो मानो भँवरा । भृकुटि विकट पंकज दृग प्यारे, अनियारे सरकोर, लसे झीनो कजरा ॥ मनमोहन मुसक्यान माधुरी, चितवन में चितचोर, हरो मेरो हियरा । उर बनमाल

लसत कर कंकन, सुचि रेशम की डोर, लसे मोती गजरा ॥ अंग अंग अवलोकि मधुर छवि अति अनुराग हिलोर, उठत उर लहरा। मौन मुदित रघुलाल बना पर, लाज कान तृण तोर, छोर जग जगरा ॥

पद—२२५

आली सियावर अजब रंगीलो ॥
अंग अंग पर वार मदन मद मंजुलता छवि छैल छबीलो।
मुनि मन हरन वदन शशि मोहन राजकुँवर सुकुमार नवीलो ॥
पंकज दृग चितवन चितचोरन मृदु विहँसन मन सहित ठगीलो।
लोल कपोल डुलन अलकन की कलित ललित वर फंद पगीलो ॥
तन घनश्याम सुभग अति सुन्दर रूप निधान गुमान छकीलो।
भूषन वसन विचित्र मनोहर सुभग सिंगार चार गरवीलो ॥
हरष निरख नर नारि मगन मन उमगो प्रेम पीयूष रसीलो।
मौन मुदित मन मधुप निरन्तर लीनो चरण सरोज वसीलो ॥

पद—२२६

पिया प्यारे के नैना बड़े बाँके ॥
चितवन ही घायल करि डारत, पुरत न घाव मल्हम टाँके, पल परत न चैना। छीन लेत कुल कान छिनक में, मारत मनहुँ मदन डाँके, सरबस हर लैना ॥ मद माते रसिकन रस राते, छवि छाके अनु उपमा के, मोहन मन मैना। जेहि जन मौन लगी सोइ जाने, मृदु मुसक्याय झमक झाँके, कासों कहौं बैना॥

पद--२२७

बिन देखे नयनमाँ ना माने ॥
जब से लखी माधुरी मूरति रूप रसिक दृग दीवाने ।
मुख सरोज मकरन्द पान कर जनु मधुकर मन मस्ताने ॥
जिमि शशि ओर चकोर विलोकत रूप सुधा रस चसकाने ।
अहह सुजानराय पिया तुम बिन कौन मौन मन की जाने ॥

पद--२२८

जिय मारो पियरवा की माधुरी हँसन ।
कोटि काम छबि धाम राम अँग पीत बसन घन तड़ित लसन ॥
तरपि रहे तुर्रा कलँगी शिर जुलुफ जाल मन मीन फँसन ।
महा पीर कसकत नहिं निकसत, नासामणि की मन्द हलन ॥

पद--२२९

घुघरवारी अलक हिय हर गई ॥
अति प्यारी बाँकी भँवरारी, सघन सचिक्कन कारी, कपोलन ढर गई ।
राजिव नयन विलोकन बाँकी, मानहु मदन कटारी, कतल जिय कर गई
चन्द्रवदन मुसुक्यान माधुरी, मदन मोहनी डारी, फांस गले पर गई ।
मौन मुदित मन अवध छयल की, मूरति मधुर निहारी, दृगनमें भरगई ।

पद--२३०

छवि अति बाँकी हमारे हिय बस गई ॥
तन घनश्याम लसत पीताम्बर, जनु चमकन चपला की, लिपटि कटि कसि गई । जनु शशि ओर चकोर तोर तृण, वदन सु चन्द्रकला की रूप रस फँस गई ॥ अंग अंग अवलोकि मधुर

छवि, कोटि मदन सुषमा की, गरूरत खस गई। मौन मुदित छवि अवध छयल की, झमक झरोखन झाँकी, दृगन मग धँस गई।।

पद--२३१

चितचोरन छवि रघुवीर की ।।
वसी रहत निशि वासर हिय में विहरनि सरयू तीर की।
जरकशी पाग तिलक मृगमद की तापर कलँगी हीर की ।।
उर मनिमाल पीत पट राजत चलन मत्त गज धीर की।
प्रिया सखी लखि अवध छयल छवि सुधि नहिं भूषन चीर की ।।

पद--२३२

जाग्यो भाग तिहारो, राघोजी बनाजी।
जा दिन ते थे मुनि संग आये सुधरो सकल जु थारो ।।
ऐसी दुलहिनि तुम कहाँ पाइहो ए तो जिय में विचारो।
सूरजवंश उदै होइ आयो भाल कपाट उघारो ।।
गिनते रहियो श्वांस सियाजू को मन जिन कीज्यो न्यारो।
सियासखी सियजू के ब्याहत धोयो कुलरो कारो ।।

पद--२३३

सिय बनी को बना नित रहइ बना ।।
सुन्दर सुखद सुजान श्याम तन प्यारी प्रेम सना।
रूपी राम काम सत सुन्दर रूप वितान तना ।।
सोइ रूपी चख चखत प्रिया छवि तृपित न होत मना।
युगलविहारिनि अलियाँ असीसत पाइ सु जुगल धना ।।

पद—२३४

सखि यह अवध छयल दिलदार बना बनि आयो री।
मोतिन मौर सीस पर सोहैं, जुवतिन को मन छिन में मोहैं, को है यहि जग बीच जो नाहिं लुभायो री।। मिथिला की बाँकी सुकुमारी, जेती रूप गुमानन वारी, निज गुमान छवि पिय की निरखि गँवायो री ।। मोहनि पढ़ि टोना हँसि डारत, तापर तिरछी सैन निहारत, डगर-डगर यहि पुर में कहर मचायो री ।।

पद—२३५

बनरा बना क्या बाँका, सोहत शिर मौर ।।
दीन्हें नयन-बिच कजरो, वसन तन पियरो, लेत ठगि जियरो, केशर की खौर । घूमें अलिन मिथिला की, प्रेम में छाकी, छवी पै लला की, सब ठौरहिं ठौर ।। होवें सियापति रामा, मोहनि सुख धामा, कहैं सब वामा, पूजें गणगौर ।।

पद—२३६

मारे कलेजे हँसिके तेरे नैना रंगदार ।
घायल फिरूँ मैं घायल फिरूँ मैं घायल, खाये दृग तरवार ।।
मारे पुतरिया काली पुतरिया काली, लाली दृगन खुमार ।
टपकैं सुधा रस अधरन सुधा रस अधरन, मोहनि दिलदार ।।

पद—२३७

सँवलिया तेरी कहर करै मुसुकान ।
जो तुव लाल हँसन निरखत है भूलि जात सब ज्ञान ।।
घूमि गिरत घायल ह्वै छिति में राखत नहिं तन प्रान ।
मोहनिअली विदेहलली पिय त्यागि देहु यह बान ।।

पद—२३८

सँवलिया के सोहत भौंह कमान।
छिन में घायल करत अली री, रहत न तन में प्रान॥
अब मिथिला बसिहैं को सजनी, लखि पिय की मुसुकान।
मोहनिअली नैन छैला के, हैं मनमथ के बान॥

पद—२३९

नैना दोउ जहर बुझी तरवार।
वार करत हिय लहर चढ़त हैं ऐसी गजब की धार॥
विह्वल ह्वै डोलत गलियन में तन की न रहत सम्हार।
मोहनिअली करै बस अपने अवध छयल दिलदार॥

पद—२४०

लाल की अलकैं अतर भरी।
चारु कपोलन पै इत उत सखि झूमत हैं बिखरी॥
कहर करैं निरखत ही सजनी बावरि मोहि करी।
मोहनिअली कतल करिबे को हरदम सान धरी॥

पद—२४१

मो मन मृग को फाँसि लियो है हाय अलक के जालन सों री।
घायल कीन्हों अवध लाड़िलो मारि नयन के भालन सों री॥
लगी प्रीति छूटै नहिं अब तो कीन्हें ऐसी चालन सों री।
मोहनिअली कहो जाके अलि यह सन्देस मेरो लालन सों री॥

पद—२४२

विहँसि मोहि मारी नैन कटार।
लोनी कुंज लतन में सजनी अवध छैल सुकुमार॥

वसीकरन कोउ मन्त्र सिखा दे मनिहौं यह उपकार ।
मोहनिअली चलाइ सखी री सब करिहौं दिलदार ॥

पद—२४३

ठाढ़ो रे प्रमोदवन अवध दुलारो रे ॥
लटपट चाल अनोखी झाँकी देखत मन्न ठगि जात हमारो रे ।
बोलत वचन सुधा जनु बरसत चितवन में टोना पढ़ि डारो रे ॥
यह निकुंजवन कहँ तूँ आई कहि मो तन हँसि नेक निहारो रे ।
मोहनिअली सुनत पिय बतियाँ नैनन बहत नेह जल धारो रे ॥

पद—२४४

अनोखे छैला मारी हमहिं दृग सैन ।
रहि-रहि जिय अकुलात सखी री आवत नींद न नैन ॥
कल नहि परत धीर नहिं धारत कसकत हिय दिन रैन ।
मोहनिअली निठुरता त्यागहुँ तुम विन परत न चैन ॥

चैती पद—२४५

निरखत सीय कंगनमाँ हो रामा, छवि रघुबर की ।
टारत नाहीं टेक रही कर, छाकी प्रेम मगनमां हो रामा ॥
सब सखियाँ मिलि मंगल गावत, बैठी जनक अंगनमां ।
मोहनिअली छुटै नहि सजनी, जा हिय लाग लगनमां ॥

पद—२४६

विधु सम आनन पहियाँ हो रामा, लट लटकत हैं ।
मैं सुरझावन गई सुनु सजनी, सीतल कुंजन छहियाँ ॥
सुरझावन में मो मन अरुझ्यो, कारे जुलफन महियाँ ।
मोहनि यह लखि अवध सँवलिया, हँसि दीन्ही गलबहियाँ ॥

पद--२४७

धड़ धड़ धड़कत छतिया हो रामा, पिया मिलिबे को ।
कंकन सरकि भुजन पर आये, तउ नहिं भेजत पतियाँ ।।
सुधि न रहति जब याद परति सखि, पिय की मधुरी बतियाँ ।
मोहनि अवध छैल मिलिबे बिनु ऐसी भई मोरी गतियाँ ।।

पद---२४८

मो पिय अवध बिहारी हो रामा, सुधि बिसराई ।
बरसत रैन दिना प्रीतम बिनु, अँखियाँ भई रतनारी ।।
कहर करत जब याद परत सखि, जुलुफन की घुंघुरारी ।
मोहनि छिनहुँ लगत नहिं मनमां बिरह करी अस ख्वारी ।।

पद—२४९

बिहरत प्यारा रे, सरजू किनरवा हो रामा ।
कुँजन छहियन दै गलबाहीं, सिय संग अवध पियरवा ।।
अंग अंग सुन्दर भूषन राजै, उर फूलन के हरवा ।
मोहनि अस जिय होति सखी री, दौरि मिलूँ पिय गरवा ।।

पद—२५०

छैला मारी रे, तिरछी नयनमां हो रामा ।
छिन अंगना छिन गलियन डोलूँ, पड़ेला नाहीं रे कतहूँ चयनमाँ ।।
ऐसी दशा भई मेरी सखी री, सूखे कबहूँ ना हमरो नयनमाँ ।
मोहनिअलि अवध प्रीतम बिनु, मुख तें तनिको ना निकसे बयनमाँ ।।

पद—२५१

गोरे से वदन पर श्याम बिंदुलिया ।
मानहुँ अलि छौना पंकज पै, बैठो है आय लगै छबि भलिया ।।

तापर झीन नील सारी तन चमकत जनु घन माँझ बिजुलिया ।
मोहनि पिय मन जाइ फँस्यो है,लखि सियकी मुसुक्यान रंगिलिया ॥

पद—२५२

सियवर छवि अवलोकु अली री ।
राजत मनिमय कनक सिंहासन अमित मदन उपमा जु दली री ॥
सुरपति मनिघन नील जलज वपु निरखति छवि मम मति न चलीरी ।
क्रीट मुकुट कुटिलालकवृत मुख निरखत रवि शशि दुतिहु मली री ॥
गोल कपोल श्रवण मणि कुंडल नासामणि सुर सुमन कली री ।
बोलनि हँसनि पीक झुकि गेरनि हेरनि में हिय होत गली री ॥
विकट भृकुटि रद चिबुक मनोहर कंबुकण्ठ मणिमाल रली री ।
उर विसाल मोतिन की माल बिच सुमन माल छवि लगति भलीरी ॥
जंघा जानु गुल्फ पद पंकज निरखु सजन विश्राम थली री ।
धोती पीत पुनीत कसनि कटि किंकिनि दुति चहुँदिशि उजली री ॥
अरुण कमल कर कमल फिरावत गावत लखि सिय वदन छलीरी ।
सुनि पिय वचन रचन रसमाला होति मुदित हँसि जनकलली री ॥

पद—२५३

हमारे दृगन बसे रघुबीर ।
लोक लाज कुल की मर्यादा सब तजि भये फकीर ॥
भस्म रमाइ सुमिरनी कर गहि डोलत सरजू तीर ।
वन प्रमोद की कुंज गलिन में ढूँढत फिरत अधीर ॥
जुलफन जुत विधु वदन निरखि कै कब मिटिहैं उर पीर ।
रसमाला उर ताप बुझाओ प्याइ वदन छवि नीर ॥

पद—२५४

तेरी चितवनि मोहे राजकुमार।
अनियारे कजरारे नयनन चलत समर सर मार ॥
खंजन मीन कमल मद मोचन लोचन लोल निहार।
जुवती गन तन लता विपिन विच खेलत रूप शिकार ॥
रसिक सिरोमनि राजकुँवर तुम मनकी जाननहार।
रसमाला चितवनि उर साली लीजै वेगि उधार ॥

पद—२५५

राघोजी थारे नैंना जादू भरे।
जिनके लगे भये बिन तनके कसकत भूमि परे ॥
रूप भरे रूपहिं को धावत ज्यौं दुई बीर जुरे।
मीन जलज मृग लजित वापुरे जल बन जाइ दुरे ॥
हमसे पथिक थके बहु मारे घर बाहर सिगरे।
रसमाला वरजो नहिं मानत हियरे रहत अरे ॥

पद—२५६

राघोजी थारे नयनन की न परतीति।
कमलन कमलन फिरत भ्रमर जस छाँड़ि प्रीति की रीति।
फूलन छाँड़ि कलिन पर धावत गावत फिरत अनीति ॥
मालति छाँड़ि केतकी गरके हार भए करि प्रीति।
हारेहूँ पर हार न मानत चाहत अपनी जीति ॥
रसमाला ए नैन तुम्हारे करत फिरत नई रीति ॥

पद—२५७

राघोजी थारे नैना जुलुम करै ।
चंचल मदन छके गरबीले जहँ तहँ खेत लरै ॥
रूप सुधा पीवन के कारन विधु सों विनय करै ।
इनसों मीन जलज खंजन लजि जल बन वास करै ॥
इत उत चलत लरत फिरि सनमुख हारेहूँ न हरै ।
रसमाला चित चोरि सबन के काहू सो न डरै ॥

पद—२५८

साँवला नैन बान मारा कैसे के जियरा राखों रे ॥ कमलनयन की तिरछी अँचकनि लागिगै तन मन सुधि नहिं पावों रे । थर-थर देह काँपे इन्द्रीपति हिया बिच चलत पसेवा अँसुवा नयना झरि लावों रे ॥ है निरदय रे दरद दी हिया बिच घायल करि छैला नियरे न आवो रे । नवलविहारी प्रिया दशरथ सुत पिया सियाजू के लाय मोको जिया के बचावो रे ॥

पद—२५९

श्यामसुन्दर मनमोहन प्यारे आइ गले मोरे लागू ना ॥
कबकी बिछुड़ी प्यासी अँखियाँ झाँकी अमृत प्यावू ना ।
जियरा तड़पे हियरा कड़के अधर सुधा रस पागू ना ॥
रसबस रसिये अंग सब गसिये भुजबन्धन बिलमावू ना ।
नवलअली विरहिन अति आतुर त्यागू जनि रस पागू ना ॥

पद—२६०

साँवरे सलोनेजू से नैना मोरी लागि गये ।
नैनन में नैन सों जुलुफ घुंघुरारे कारे अधर सों अधर पीवत

जागि गये ॥ करज सों करज हिया सों हिया गये गासि, लोक परलोकहूँ के सुधि सब भागि गये ॥ किंशुक गुलाब कली चली रसकेलि गली, निस दिन जाने नहीं झनन झनकि गये ॥ नवल-अली सुघन दामिनी परसपर, अरध उरध रस बस रस पागि गये ॥

पद—२६१

दृगन भरि छवि लखु सिय रघुवीर ।
कनक भवन राजत प्रिया प्रीतम श्यामल गौर शरीर ।
अंग अंग नव रंग रंगे वर लसत सुरंगी चीर ॥
फूल छड़ी प्यारी कर राजत पिय कर सुचि धनुतीर ॥
नजर बाग अनुराग लाग फल नटत मोर मन कीर ।
नर देही सुमिरन वैदेही हेतु वदत मुनि धीर ॥
हृदय पत्र लेखनी प्रीति करु तत्त्वमसी मुद नीर ।
जानकिवर दंपति छवि संपति लिख ले सखी तसबीर ॥

पद—२६२

दृगन लग जायगी राजिव नैन ।
मैं जो कही मत जा वह मारग मान बावरी बैन ॥
अति प्यारे कारे कजरारे अनियारे अति पैन ।
चितवत ही चुभि जात अचानक करत हिये विच ऐन ॥
काहू के जो मन अटकेंगे खटकेंगे दिन रैन ।
रामसहाय रूप बिनु देखे कल न परत जिय चैन ॥

पद—२६३

तनिक हँसि हेरैं जो राजकुमार ।
बुधि बौराय हेराय जाय मन रहत न तन की सम्हार ।

दूरहिं ते जाके तन ताके मदन भये जरि छार।
सो त्रिपुरारि भिखारि वेष धरि अलख जगावत द्वार॥
सपने निकट जात नहिं कबहूँ माया मोह विकार।
सो भुसुरिड शिशु चरित विलोकत फँसी प्रेम की जार॥
सुनत बोल विनु मोल बिकानी सारद सी हुशियार।
रामसहाय जाय सोइ जाने अवध नगर की बजार॥

पद—२६४

गजब तोरी चितवनि अवध विहारी॥
छूटत बान कमान भौंह ते जान न आन अनारी।
उपर न चोट करत उर घायल हौ तुम अजब शिकारी॥
भरे सुधा विष मद आँखन में श्वेत श्याम रतनारी।
जियत मरत झुकि परत अचानक जेहि बलदेव निहारी॥

पद—२६५

दोउन की अरुझनि आली मोहि भावै॥
भुज से भुजन गरेग रखहियाँ विहँसि विहँसि बतरावै।
दोउ मुखचन्द निहारि परसपर ललित कपोल मिलावै॥
उरझि रहे दोउ मुकुट चन्द्रिका अलियन मुकुर दिखावै।
सियाअली मेरे जीवन धनं छवि पर बलि बलि जावै॥

पद—२६६

निहारे विनु ना माने नेही नयनमां॥
जब देखौं सरयूतट कुंजन विहरत श्याम सजनमाँ।
शिर पै ताज श्रवण बिच कुण्डल घुँघुरारे अलकनमाँ॥

चितवनि चोट सहि जात न मोपै वेधत मृदु मुसुकनमाँ ।
सियाअली मन जाय फँस्यो अब मानत नाहिं कहनमाँ ॥

पद—२६७

तोहे राखौं पियरवा मैं केहि विधि से ॥
हिय विच राखौं नयन तरसत हैं नयन विच राखौं हिया तरसे ।
एको भाँति न मन ठहरत है प्यारे बताओ मिलूँ कैसे ॥
दृग से दृगन मिलाय सांवरे हिय से हिया अरु गरे गर से ।
सियाअली यहि भाँति मिलौ जब ताप मिटै अंग अंग परसे ॥

पद—२६८

ऐसोई मन चाहत निशि वासर अपने प्रीतम प्राण निहारौं ॥
और ठौर उझकौं नहिं नयनन छिन छिन पियके अलक सँवारौं ।
पियत रहौं रस युगलमाधुरी हँसि हेरनिमें तन मन वारौं ॥
प्राण सुमनको सनेह तागमें पोहि उर हार युगल गरे डारौं ।
सियाअली उर लाय प्राणधन जग नातो सब दूरि करि डारौं ॥

पद—२६९

छयल तेरी छवि की गयल में अब तो मैं आइके हेरानी ॥
पगिया पेंच किधौं कलँगिन में धौं जुलफैं अरुझानी ।
धौं तिरछे नयनन की कोरन धौं यह मृदु मुसुकानी ॥
पीत वसन अरु कटि की कसन में धौं दुपटा फहरानी ।
सियाअली हेरत मैं हारी ना जानो कहवाँ भुलानी ॥

पद—२७०

अँखियन बिच तुमको चुराय राखूँ ।
कोटि कहौ तोहि जान न दैहौं हियरा से हियरा मिलाय राखूँ ॥

मृदु विहँसनि बाँकी चितवनि से तन मन अपना रँगाय राखूँ ।
सियाअली ए दोउ जीवन धन सब विधि अपना बनाय राखूँ ॥

पद—२७१

साँवरो रस के भरे तोरे नैन ।
जादू की पुड़िया पढ़ि-पढ़ि डारी नाहिं परत जिय चैन ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया कासे कहूँ यह बैन ।
जागत सोवत बागतहू में करकत हैं दिन रैन ॥
रतनारे कारे कजरारे अनियारे अति पैन ।
जदपि करत उतपात घनेरो तदपि मधुर सुख दैन ॥

पद—२७२

बने रहो नीके रहो मेरे प्यारा ॥
प्यारी संग आनन्द करो नित जीवन प्राण हमारा ।
मिलो न मिलो तुम्हारी खुशी हैं तुम सुख से सुख सारा ॥
दूरिहिं से सुनि सुनि सुख पाऊँ रहती हूँ ताहि सहारा ।
सियाअली जहां रहो मेरे ही रहो नियरे रहो चाहे न्यारा ॥

पद—२७३

मजेदार क्या बनरा बनि आया ॥
माथे मौर केशरिया जामा क्या सेहरा छबि छाया ।
भौंह कमान नयन रतनारे क्या कजरा मन भाया ॥
मिथिलापुर की चतुरि नारि कहैं क्या रानी सुत जाया ।
सियाअली मेहदी कर दीन्हे क्या लाली दरसाया ॥

पद---२७४

मतवारे वना की नजर कैसी ।।
जव से तुम मिथिला में आये शहर में कहर मची ऐसी ।
नोकदार जहरीले नयना युवतिन पै चोट करै ऐसी ।।
केती मनही मन घायल भई केतीं ठाढ़ी जकी जैसी ।
सियाअली मिलनो अव चहती सिन्धु में जाय नदी जैसी ।।

पद---२७५

जिया सिय दुलहे पै विकाय गई रे ।।
माथे मौर खौर केशर की जुलफन में अरुझाय गई रे ।
मन्द मन्द मुसुक्यान माधुरी हँसि हेरनि में हेराय गई रे ।।
अंग अंग की छटा माधुरी पीत वसन फहराय गई रे ।
सियाअली इन मृदु मूरति पै सव कुलकानि गँवाय गई रे ।।

पद---२७६

सिया के दुलहा मोह्यो मेरो जियरवा ।।
शिर पर मौर जुलुफ घुंघुरारी बड़ी-बड़ी अँखियाँ में सोहे कजरवा ।
अधर वुलाक श्रवन विच कुण्डल गर विच सोहे सुमन की गजरवा ।।
अंग अंग पर छाई माधुरी तापै फहरत वसन पियरवा ।
सियाअली तन मन धन वारी अव जनि होहु दृगन ते नियरवा ।।

पद---२७७

जिया मानत नाहीं चुभे नैना ।।
अवध छयल छवि छटा लखी जव तवसे नाहीं परे चैना ।
छवि दरसाय देखाय चन्द्रमुख मृदु मुसुकाय दई सैना ।।

काह कहौं सखि दुख अपनो सब तरफरात बीती रैना।
सियाअली के हिय बिच सालत प्रीति भरे दोऊ नैना॥

पद—२७८

वारी रे इन तिरछी तकनि पै॥
मृदु बोलनि पै लटक चलनि पै, वारी रे मोहन मुसकनि पै।
घुंघुरारी कारी जुलफन पै, वारी रे अलकन लटकनि पै॥
मन के हरन पै भुजन भरनि पै, वारी रे चंचल बुलकनि पै।
सियाअली इन श्याम बदन पै, वारी रे पट पीत कसनि पै॥

पद—२७९

आजु दुलहा बने हैं, सिया के पिया।
माथे मौर केशरिया जामा जुल्फ जंजीर में फाँसे जिया॥
धन्यभाग मिथिलेशलली को जिन निज भुज भरि भेंट लिया।
दम्पतिअली इन युगल रूप पै तन मन धन सब वारि दिया॥

पद—२८०

क्या छबि धारी सियाजू को बनरा॥
जगमग जगमग मौर विराजे और अनूपम मोतिन सेहरा।
पीत वसन श्यामल अंग शोभित और मनोहर फूलन गजरा॥
पान खात मुसुकात मधुर मृदु सैन चलावै नैन दिये कजरा।
गोपअली बिनु मोल बीकि गई परत अचानक वारत नजरा॥

पद—१८१

मोहे छैला ने मारी नजरिया रे।
नयनों की घाली मैं इतउत डोलौं, घर की मैं भूली डगरिया रे॥

तिरछी विलोकन मंद हसनियाँ, हियरे में मारी कटरिया रे।
मन अरुझाय गयो अलकनमें, तनकी रही न खबरिया रे ॥
श्याम रंगमें रंगि रही सजनी मोरी श्यामहु भई चुनरिया रे।
बाँके पिया मोहे कल ना परत है मन मान्यो सलोनो सँवरिया रे ॥

पद—२८२

दोऊ खेलि रहे नयनन में ॥
पान खान मुसुकान मनोहर गसि रहे अंग अंगन में।
रूप माधुरी पान सु करि करि अतन छाइ अंग अंग में ॥
नव नव केलि करत दोऊ मिलि नव यौवन के उमंग में।
एक एक के देखि देखि के तृप्त होत नहिं मन में ॥
एक के ऊपर एक उतारिके वारि पियत छिन छिन में।
अधरामृत को पान सु करि करि गहि गहि भुज लपटन में ॥
दम्पति की यह केलि सु अद्भुत बसि रही सखी नयनन में।
यह रसमोद प्रिया प्रीतम के कहत न बने कथन में ॥

पद—२८३

करत दोउ नैनन से संग्राम।
मृदु मुसुक्यान मन्त्र आकर्षण चौगुन चाव ललाम ॥
भौंह धनुष युग साधि नयन सर करत जिगर कतलाम।
चलत कटाक्ष सुतीक्षण दुहुँदिशि मनहुँ चपल असि काम ॥
गोली गजब गरूरी पुतली भीतर करत सु ठाम।
भाव भिरत भट प्रेम प्रचारत जीतन को सुखधाम ॥

समरारूढ़ सु गूढ़ मूढ़ नहिं लरत लरत भइ शाम ।
'मधुरी' रस रण अजिर मत्त दोउ लेत नहीं विश्राम ॥

पद—२८४

मोरा अँगना में उगि गैले चान तखन परवाहे की ।
हम सब छी श्रीसियाजू की बहिनी राघो भेला मेहमान ॥
अहोभाग्य मिथिला आँगन की पाहुनजी कुटलनि धान ।
जिनकी कृपा कृपाहूँ चाहत सखियों पर सेहं मेहरबान ॥
जाकर ध्यान धरत ब्रह्मादिक तकरे कैलौ गाँठि सँ बंधान ।
जुग जुग जीवो माधुरी जोड़ी छिटकैत रहें मन्द मुसुकान ॥

पद—२८५

एहन स्वरूप कहाँ पैलौं अलबेला यो अवधेशी छैला, हेरितं हरैए हमर प्राण ॥ काजर कएल आँखि जुलुम करैए यो०, मोरैए मदन मन मान ॥ जुलुफक फाँस में फसैंलौं पुरवासी यो०, गाँसी मारि मन्द मुसुकान ॥ स्वामिनी सिया के संग मिथिले निवसियौ यो०, मोद उर एहे अरमान ॥

पद—२८६

मैया सुनयना के पाहुन रे कहीं नजरो न लागे ।
प्रेमिन जीवन धन रे कहीं नजरो न लागे ॥
कवन सुकृत हम परसल पायल कौशिल्या के चारु खेलौना रे ।
वाम नयन भुज फरकन लागे पायऊँ छबीले नृप छौना रे ॥
छेमकरी नित मँडरत आँगन देखलौं मैं श्याम सलोना रे ।
मोद न भूलि लड़ैयो नैना, चितवन में जादू टोना रे ॥

पद—२८७

कैसा बना अलबेला लखो री सखी ॥
शिर मणि मौर कलंगी झुकेला, छोरन छवि छहरेला,
जुलुफ सिटेला, भृकुटि मटकेला, चितवनि चखनि चुभेला ॥
केशर खौर भाल झलकेला, अलक कलित झुलकेला,
नासामणि मंजुल हुलकेला, लखितहिं मन ललकेला ॥
अधर मृदुल मुसुकनि मधुरेला, मिथिला सिथिल करेला,
सियाजू के नाते पाहुन भेला, मोद सुमगन नचेला ॥

पद—२८८

सिया दुलहे से नयन जब जूटी ॥
लोक लाज कुल की मर्यादा ताग तड़ातड़ टूटी ।
काल कर्म भ्रम प्रबल कालिमा छबि छाकत ही छूटी ॥
निज निज रुचि अनुरूप महा सुख लूटैं चतुर बधूटी ।
मोदअली के प्राण जीवन धन श्याम सजीवन बूटी ॥

पद—२८९

देखिऔन देखिऔन ए बहिना, हरियो हरिअरभेला होइते वैदेही दहिना
जिनकर सुषमा शेष शारदा कल्पहुँ लौं कहिना ।
पार पवै छथि से सिय सन्मुख जुगुनु ज्योति जहिना ॥
पिय प्यारे निबसै छथि पलहूँ प्यारी बिनु रहिनां ।
पियमुख चन्द चकोरी भोरी सिय गोरी तहिना ॥
परम भाग्य सँ भेल समागम होइत रहो यहिना ।
धन मिथिला धन मोद मैथिली धन हम सब बहिना ॥

पद—२६०

जेहने सलोनी सिया तेहने सलोना यो दुलरुवा दुलहा, कनि हँसि हेरू हमरी ओर ॥ अपने दुलरुवा शिर मौरिया सँवारब यो दु०, मोतिया लगायब चहुँओर ॥ जुलुफ अतरवा भाल केसर की खौरवा यो०, कजरा लगायब दृगकोर ॥ धनि धनि प्यारी मोरी धन मनमोहना यो दु०, मड़वा बैसायब गाँठि जोर ॥ मुख चूमि-चूमि दुलहा लेइबे बलैया यो दु०, कनि बोली बोलू रस बोर ॥ दोनों दुलरुवा के हिय में बसायब यो०, सियाअली सरबस मोर ॥

पद—२६१

मोहि लेलक सजनी मोरा मनमाँ, पहुनमाँ राघो ।
जुलुमी जुलुफिया कारी, माथे मणि मौरिया न्यारी, लाल लाल भाल पर चननमाँ ॥ अँखियामें काजर काली, ओठवा पर पानक लाली, मुसुकैत श्यामल बदनमाँ । दुपटा चपकन लगनौती पहिरं विअहुती धोती, पहुँची पर आम के कंगनमाँ ॥ धनि धनि किशोरी मोरी देखल सनेहिया जोरी, हिय मोरा कोहबर के भवनमाँ ॥

पद—२६२

मोहनी मुरतिया देखि मोहे मोरा मनमाँ हे मनमोहन दुलहा, पल भर ना बिसरल जाय ॥ एक मन भावे मोरा तोरे संगे रहितहुँ हे मन०, मुख छवि देखितहुँ अघाय ॥ तोहरो स्वरूप देखि सुधि बुधि भूले हे मन०, रतिपति सतत सिहाय ॥

सिया के सोहाग विधि अचल बनाबथि हे मन०, जाहि देखि जियरा जुड़ाय ॥ कहथि सनेहलता मन के मनोरथ हे मन०, बसु मोरा नयना में सदाय ॥

पद—२६३

नयनमाँ माने नहीं, मोरा लालन कनेक मुसुका दे ।
सुन्दर लाल भाल पर चानन, काजर कयल नयन छवि आनन, मौरिया के लड़ हटवा दे ॥ दाड़िम दसन हँसन विच टोना, त्रिभुवन मोहन श्याम सलोना, मुसुकैत नैना उठा दे ॥ हीरक हार मउर लर मोती, चपकन चारु विभ्रहुती धोती, चरणक महावर दिखा दे ॥ स्नेहलता लखि रूप मनोहर, राखि लेल हिय बीच धरोहर, माँगव न हम किछु जादे ॥

पद—२६४

जादू भरे नयन तोरे जादू भरे नयन, ओ हमारे मोहना जुलुम तोरे नयन ॥ माथे मणि मौरिया जुलुफ कारी-कारी, श्यामल ललाट पर तिलक उजियारी, लागे जेना चन्द्रमा के तरे तरे रैन ॥ भृकुटी कटीली गुलाब केर डारी, काते काते अँखियाँ कयल कजरारी, लागे जेना भौंरा पसारे दुनु डैन ॥ साजन मधुर मुसुकान छवि न्यारी, जनम जनम मन होइया जे निहारी, लतिका सनेहक न पावे जिया चैन ॥

पद—२६५

श्यामला पहुनमां बिनु निदियो न आवे सुनु हे सजनी, मनमां चोरौने नेने जाय ॥ नीको नहिं लागे मोरा दिन अरु

रतिया सुनु०, दुअरो अंगनमा न सोहाय ॥ सियाजू के पाबि मोरा भेल दरशनमां सुनु०, भेलथिन विधाता बड़ सहाय ॥ ललिका स्नेह गावे किछियो न भावे सुनु०, मिथिला से दिय जनि जाय ।

पद--२६६

सिया के सजनमां संग दिवस गमायब हे मन मोहलक मोहना, हुनका बिनु किछियो न सोहाय । जुलुमी नयनमां शर बेधलक करेजवा हे मन०, टोनमां लगौलनि मृदु मुसुकाय ॥ नान्हीं नान्हीं लाल लाल कर कमलनमां हे मन०, अंगुरी छुवैतहि लेल फुसलाय ॥ आब त स्नेहिया बिनु हुनका न बनतैन्ह हे मन०, मिथिला में खुद गेला बिकाय ।

पद--२६७

हिया बसु जिया बसु श्यामला पहुनमां राम, हिया बसि गेल, तोरे मन्द मुसुकनमां राम । कारी घुंघुरारी केश मोरिया सोहनमां राम हिया०, तोरे भाल के चननमां राम ॥ काजर कयल आँखि लाल मुख पनमां राम हिया०, तोरे चोखे चितवनमां राम ॥ पियरी बिअहुती धोती पीत चपकनमां राम हिया०, तोरे आम के कंगनमां राम ॥ सियाजी कुमुदनी संग, नील कमलनमां राम हिया०, सखि 'स्नेह' के जीवनमां राम ॥

पद—२६८

श्रीराघव लला छथि सहाय तखन परवाहे की ।
हम सब छी मिथिला के बासी, मिथिलाके ओ छथि जमाय ॥

बहिनी हमर छथि रघुकुल पतोहू, जिनका सँ दुनियाँ जुड़ाय ॥
विश्व फाँस जिनका करतल में, मिथिला में गेला बन्हाय ॥
स्नेहलता निर्भय रहु हरदम, दुलहा के पग लपटाय ॥

पद—२९९

आजु केर झाँकी अलबेलिया सहेलिया हे।
पूर्ण शशिहिं जनु घेरि मधुप रहे सकुचि सुसीमटि सकेलिया ॥
मुखरित विखरित सोह हीरे कण घन विच नखत उजेलिया।
कोटि अनंग संग जनु इन्द्र धनु भ्रू वर विकट अपेलिया ॥
दृग मृग मीन खंजनहुँ लाजत सकजल जलज लजेलिया।
अमल कपोल लटत दोउ अहिशिशु अमियभ्रम करे रंगरेलिया ॥
नासामणि जनु अमिय सरित बिच उझकि झुकि करत झमेलिया।
छवि माधुरी शोभा सुषमा विच उपमा करत अठखेलिया ॥

पद—३००

जादू भरी तेरी आँखें जिधर गईं।
निरखि छटा घनघोर घटा भावना की उमड़ गई ॥ मुकुलित कली ललित हिय विकसित प्रेम पराग सरस रस भर गई। नैन की कटारी बारी बारी पलकन मारी जादू की पिटारी मानो छुइ मुई कर गई ॥ प्रेम की लड़ी अड़ी दृग दोनों बरसि पड़ी मोती सी बिखर गई। अब पल पलक टरत नहिं टारे छिन छोरत जनु जान निकल गई ॥

पद—३०१

हे अवध छयल मनहरन पिया तेरी आँखें अजब मतवारी हैं।
भौंहें कमान दोउ नैन बान पर विष सम कजरा डारी हैं ॥

चम चम चमके माथे पै मौर चहुँओर छोर छहराय रहे।
झगड़ैं आपस में कुटिल केश अरु निज निज दाव बचाय रहे॥
पर नासामणि है मस्त आज रस पीकर अधर अपारी है।
दाड़ीम दसन मृदुमन्द हँसन लखि ललकि जिया मोर झूलि रहे॥
कुण्डल कपोल पै करैं किलोल सुचि हार गले बिच झूलि रहे।
ओ नील वदन पर तिलक बिन्दु चमके जनु घटा सुकारी है॥
पीत रंग कोरदार वसन चपकन पर चादर डारी है।
पावों में महावर मेहदी हाथ की लाली अजब निराली है।
इस हृदय मध्य में बसो पिया विन्ध्येश्वरि तन मन वारी है॥

पद--३०२

बाँका बनरा ने मन को लुभाया अली।
माथे मौर खौर केशर की तिलक रेख अति भाया अली॥
अलकावलि अतरन सों भींगी उरझि कपोलन आया अली।
मन्द हँसनि नासामणि अधरनि, नयन मयन मद छाया अली॥
ब्याह विभूषण वसन विभूषित, मनमथ कोटि लजाया अली।
पगतल रचित महावर सौरभ, मुनि मन मधुप चुराया अली॥
भाग सुहाग अनुराग सिया के, सोइ दूलह बनि आया अली।
योगेश्वर हिय मान हटाकर, रूप छटा छहराया अली॥

पद--३०३

छवि जादू भरी सिया प्यारे की।
रूप लखत दृग प्राण लुभाने सुधि बिसरे गृह द्वारे की॥

साँवरिया के ओर निहारे रस फीको लगत जग सारे की।
जुल्फी अलकें बने कपोल पै अति नीको मदन छबि वारे की॥
नेह निगाह भरी चितवन से प्राण हरण बलिहारे की।
मूक हृदय की को पहिचानै बिनु सर्वस प्राण अधारे की॥
जावक रंजित सुभग चरणतल दिल दिवाने भये अरुणारे की।
श्रीरामाजी के जीवन सर्वस नित दुल्लह सुकुमारे की॥

पद—३०४

बौरी बना दिया है आँखें बड़ी-बड़ी।
मिथिला शहरकी गलियाँ चरचा छिड़ी है घर घर,उधम मचा दियाहै॥
बेचैनी दिवानी सी दिल थाम बैठे सबरे, जादू जगा दिया है।
ब्याही बिवस न ब्याही हुलसी फिरैं अटा पै, गौने की भई सौने॥
सुनि देखिबे को दौड़े भये सरस संत बौरे,बरछी सी तिरछी मारा।
जहरी अवध छयल के नैना हैं डाकू शहरी, पीछे से पड़ गये हैं॥

पद—३०५

तन मन सर्वस वारी रघुवर प्यारे ललन पर।
शीश कनकमणि मौरी सोहे, सेहरा लहरा लेत छयल की चन्द्रबदन पर। नैना बड़े मद छाये गुलाबी, कंजरा नजरा जादू करे मिथिला अबलन पर॥ कुण्डलके लगमें काली जुलुफिया, मानो नगिनियाँ पहरा देत सिया प्यारी के धन पर॥ बिहँसत पानके लाली लसे मुख, कसकत सबके हियरा नासा मोती हलन पर॥ श्यामल अंग केशरिया जामा,

मोतियन छवि छहराती छोरन पीत वसन पर । नूपुर युत पद सोहैं महावर, नेहशिला के जियरा ललकत लाल ललन पर ॥

पद—३०६

हे रघुवर राजकिशोर तनिक हँसि हेरो ।
वो चन्द वदन मन वोले, वो मधुरी विहँसन वाले, वो साँवलिया चितचोर ॥ प्रीतम अब प्रीति लगा लो, नैनों से नैन मिला लो, विरहा की उठत मरोर ॥ हम जप तप कछु नहिं कीन्हों, तव चरण शरण प्रभु लीन्हों अब नाथ हमारी ओर ॥ है केवल कृपा तुम्हारी, नहिं कौनो उपाय बिहारी, हम विनय करैं करजोर ॥

पद--३०७

सिया स्वामिनि के मन बसिया हो मोरे राघव रसिया हो ॥
भूल बिसर इन गलियन प्यारे वा रज ना परसइयो ।
गौतम तिय को तारि रावरे आगे यश ना लइयो ॥
हे पद रज तारन जसिया हो मोरे राघव रसिया हो ॥
मधुर–मधुर ये बोल रसीले वीणा भरो हिरनी को ।
वेइ वीणा सुधि बाण गये बन बात बनाये की को ।
तू मन फाँसन को फँसिया हो मोरे राघव रसिया हो ॥
लगी प्रीत प्रीतम प्यारे सों बँधी प्रेम की डोरी ।
सन गये रंग अंग अंगन में हो गये नैन चकोरी ॥
तनि दिखलैहौ मुख शशिया हो मोरे राघव रसिया हो ।
जब से लगन लगी लगी बगिया में जागे भाग्य हमारे ॥
तन की पीर हरो मेरे प्यारे मन की जानन हारे ।
रसरंग ज्ञान गुण गसिया हो मोरे राघव रसिया हो ॥

पद--३०८

जखन श्यामल वर लली मुख जोहलनि निज सुधि गेला बिसराय ॥
लोचन पलक झलक अटकौलनि मन मुख लखि ललचाय ।
चन्द्रप्रभा छवि छिटकत छकलनि गर्व गुमान गँवाय ॥
रूप अमृत पीवि जीय जुरैलनि वेरि वेरि नयन चलाय ।
गोरी किशोरी वाम अंग बैसलनि आनन्द अवधि बनाय ॥
श्याम घटा बिजली चमकैलनि प्रेम बुन्द बरसाय ।
जन्मक फल हिय सुख सरसैलनि ब्याह मण्डप बिच आय ॥

पद--३०९

लागी लागी केशिया तोरी साँवली सुरतिया हाय रे दुलहा, दुलहा बोलेला मधुरी बोल ॥ माथे मणि मौरिया तोरी जामा जड़ितरिया हाय०, अलक हलनियाँ अनमोल ॥ नयना कजरिया तोरी छेदेला जिगरवा हाय०, तिरछी तकनियाँ बिष घोल ॥ एक मन करे तोरा संगे संगे रहितौं हाय०, एक मन करे डमाडोल ॥ मोहन मनहरवा तोरी बड़ी बड़ी अँखियाँ हाय०, सनमुख दरश पट खोल ।

पद--३१०

जनक किशोरी मोरी भेलथिन बहिनियाँ हे मिथिले के नाते, रामजी पहुनमां भेलथिन मोर ॥ सिया सुकुमारी छथिन प्राणहुँ के प्यारी हे मि०, प्राणधन कौशलकिशोर ॥ निरख हृदय के हम मड़वा बनायब हे मि०, दुलहा दुलहिनि चितचोर ॥ कबहुँ हृदय के हम कोहवर बनायब हे मि०, हास रस में होयब

बिभोर ॥ दुलहा दुलहिन संगे जीवन बितायब हे सि०, रूपलता लखि दृगकोर ॥

चितचोरना पद--३११

दुलहाक मुँह अनमोल नीलमणि सन लटकल कुटिल अलक।
शिर पै मुकुट सोहैं रवि इव चमकत दमकत पट पट वास ॥
अथवा गगन शशिधरक उदय भेल अभिनव सुषमा विराजे।
कुवलय नयन बयन लागे सुधा सम भृकुटी छटा सँ मधु चुवे ॥
सखी सब मधुकरी निकर बनल छथि रूप रस पीबि माति गेली।
एहन अनूप रूप कत त्रिभुवन मध्य अजब अनोखे दोनों ठोर ॥
जनकदुलारी के सुहाग बड़ गोट छैन जुग जुग जीवे अहिवात।
कहैं रामलोचन सुनु ए सुकुमारी सिय गिरिजा पूजाक फल एहैं ॥

वलमुवाँ पद--३१२

सब जग आश तजि आयऊँ शरण बीच सरस सुभाव सुनि तोर रे।
मोहि लाग कहवाँ भुलाय दीन्हों ताहि कहँ करि लीन्हों हियरा कठोररे
तलफत रहत नयन छवि देखे बिनु अँसुवाँ भरत अति जोर रे।
बिरह बेआधि वश तन जर जर भयो चैन ना परत कभूँ थोर रे ॥
तदपि न रंचहूँ आवत हिय दया तोहि अचरज लागत अथोर रे।
काहे तोहे कहहिं सुसंत सद्ग्रन्थ श्रुति रसिक उदार शिरमौर रे ॥
आश्रित जनन को दुखावन सिखायो कौन जाते ना हेरत दृगकोर रे।
दरशन आशहीं पतित प्रान जात नाहीं सहे निशि दिन दुख घोर रे ॥
निरखि अनाथ हाथ गहि अपनायो कैसे प्रथम न देख्यो अघ मोर रे।
अब क्यों घिनात सकुचात औ लजातहाय नयन करत मम ओर रे ॥

निज गुण विरद विलोकु रघुवंश वीर कृपासिंधु अवधकिशोर रे ।
नेहलता चेरी की न सुधि लेहिं सियकन्त होइ जैहैं बात यह शोर रे ।।

पद—३१३

चिरंजीवै बनी को सुघर बनरा ।
जामा जरद जरकसी पटुका मुखमयंक ऊपर सेहरा ।।
पान खात मुसुकात छबीले घायल करत नयन कजरा ।
मधुपअली निरखत छवि ऊपर तन मन धन न्योछत सगरा ।।

पद—३१४

सियारानी का अचल सुहाग रहे,राजाराम के शिर पर ताज रहे ।।
जब तक पृथिवी अहि शीश रहे, गंगा जमुना की धार बहे ।
नभ में शशि सूर्य प्रकाश रहे, तब तक यह बानक बना रहे ।।
नित बना रहे नित बनी रहे, नित बना बनी में बनी रहे ।
सुहाग रहें शिरताज रहें, नित नित यह बानक बना रहे ।।
नित कनक बिहारी बिराज रहे, नित अलियों का ये समाज रहे ।
नित झाँकी ऐसी साज रहे, प्रेमीजन का बड़भाग रहे ।।

पद—३१५

मलिया जे सूतेला ऊँची अँटरिया हे, मालिन सूतेली फुलवारि हे ।। जागु जागु आहे मलिनियाँ मलिया जगावेला, उठु मालिन भेल भिनसार हे ।। अँखियाँ उघारि जब देखेली मालिन, दुअरे रामचन्दर दुलहा ठाढ़ हे ।। आजु लगि आहे दुलरुआ कबहूँ ना देखल, आजु दुअरिया कैसे ठाढ़ हे ।। आजु लगि आहे मलिनियाँ लगन मधिम रहे, आजु लगनियाँ बड़ी तेज हे ।

बाबा वर आहे मलिनियाँ आजुवे सगुनियाँ उठे, आरसी मउरिया रचि देहु हे ॥ आरसी मउरिया दुलहा अँखियो ना देखल, आरसी मउरिया कैसन होइ हे ॥ आरी पासे रचिहें मलिनियाँ हीरा मणि मोतिया हैं, विचवा में सिया सुकुमारि हे ॥ वाट में रीझै लखि वाट के बटोहिया हे, पनघट पर रीझै पनिहारि हे ॥ मंडप में रीझै लखि सारी सरहोजिया हे, कोहवर में सिया सुकुमारि हे ॥

कवित्त

जोड़ी गई गाँठ पट पीत चुनरी के साथ
जोहत ही मोहे मन जड़ित जड़ाव री ।
वेदन की शाखैं पाढ़ भाखैं मुनि लोक रीति
एते में अनूप एक वनत वनाव री ॥
विन्दु कवि आनन सिया को देखि दूलहजू
ठांव ही खड़े रहे न आगे बढ़्यो पाँव री ।
भूलि गई मण्डप कलश खम्भ जानकीजू
साँवरे शरीर को ही देन लगी भाँवरी ॥ १ ॥

नील मणि माल में न तरुनि तमाल में
न नन्दजू के लाल में न तीसी के सुमन में ।
न जमुना के जल में न देखी जम्बू फल में
न दूर्वा के दल में न नीलकंज वन में ॥
ऐसी श्यामताई की न श्यामता न अन्य कहीं
सावन के साँझ समय देखि नहिं घन में ।

राम के विवाह समय राम छवि छांह परी
जैसी श्यामताई छाई जानकी वदन में ॥२॥
श्रीजनकजू की बेटी छवि अंगन लपेटी
नहि जात है समेटी सुख धाम पीय राम सों।
राम सौंह कहति हौं न पच्छ कछु गहति हौं
सीय निकट रहति हौं न बात यह जाल सों ॥
जाल सों न बात यह सांची प्रमोद मंजु
लिपटे नित रहत पीय सीय अंकमाल सों।
माल सों विलोकि बलिहारी सब बाल जाहि
कनक बेलि उरझी जनु सुभग वर तमाल सों ॥३॥
प्यारीजू कमल तामें प्रीतम सुगंध लसैं
प्रीतम यदि कमल प्यारी सरस रस भीना है।
प्यारीजू नीर तामें माधुरी सु प्रीतम हैं
प्रीतम यदि नीर प्यारी शीतल सुख दीना है॥
प्यारीजू छीर तामें स्वाद रघुवीर लखो
प्रीतम यदि छीर प्यारी माखन नवीना है।
मोद मंजु प्यारी छवि प्रीतम शृंगार सीय
सोने की अंगूठी राम नीलमणि नगीना है॥ ४॥
सहज सजीले लाल लाज सों लजीले गोल
यश सों रशीले औ सनेह सरसीले हैं।
नोकन नुकीले चंचलाई चटकीले चित्त
चुभत चुभीले और शील सों सुरीले हैं॥

जगत जगीले जोति दवत दवीले दुःख
दारिद दरीले और अंजन अंजीले हैं।
गावत गोपाल गुण गुणद गुणीले नयन
सीय महारानी के गरूर गरवीले हैं॥ ५॥

दामिनी सी गोरी अभिरामिनी करोरी रति
स्वामिनी हैं मोरी गति गामिनी गजेश की।
कंचुकि कसोरी नील बसन लसो री अंग
भूषण अथोरी संग सुषमा सुदेश की॥
आनन अँजोरी रही फैलि चहुँओरी
रस राममणि खोरी निशा नाशनी अशेष की।
प्रीति रस बोरी हँसि हेरि दृग कोरी
करैं राम चितचोरी श्रीकिशोरी मिथिलेश की॥ ६॥

कल्पतरु सुमन सँवारे देव देवदारे
मुदित निहारे मुख दम्पति पुनीता को।
विविध विलास में हुलास को विकास जहाँ
चन्द्र ते ज्यों प्रबल प्रकाश भास भीता को॥
त्योंही देख मंजुल महान मुख मैथिली को
सकल विहारी कहैं मन की प्रतीता को।
राम सम शोभा सात लोक में सुनी ना
पर रामहू सों सौगुन अनूप रूप सीता को॥ ७॥

शोभा अवली के वर बंक वरूनी के
कंज काम रस सी के राम सुमन अली के हैं।

ऐसे न मृगी के न सची के नहिं भारती के
सती दिब्यु तीके न रतीके निर्विलीके हैं ।।
सौम्य कारुनीके भरे शील सु अमीके
सम पोसक शशी के भक्त कैरव कली के हैं ।
यन्त्र के वसी के वस कारक सु पीके
रसराम स्वामिनी के नयन नीके मैथिली के हैं ।।८।।

जनक किशोरी जू के जावक रचन काज
नाउनि नवेली आई अतिहीं उतावरी ।
धोवति धवल जल भरिकै परात मांहि
पद जलजाततल जीते जे गुलाव री ।।
परे प्रतिविम्ब रंग रसरंगमखि होत
वारि फेरि फेरि लावैं भरि भरि चाव री ।
दै चुकी कि देनो ऐसो करति विचार उर
बावरी सी भई लिये कर में महावरी ।। ९ ।।

नख में नखत छत्र मुख मण्डल में चन्द्र सूर्य
दुति दसनन में सुदामिनी छटान की ।
नयन में त्रिवेनी सयन में सब सिद्धि श्रेनी
भाव में समस्या नव रस कवितान की ।।
केश में कुटिलता कुलीनता कटाक्ष में है,
कान में प्रवीनता अधीनता कथान की ।
बिन्दु कवि ज्ञान की प्रमान की है वात यह,
जानकी के अंगन में शोभा है जहान की ।।१०।।

सची शिर ढोरें चँवर उर्वशी उड़ावैं अमर,
सावित्री सेवैं चरण महिषी महेश की ।
वरुण खगराज धनराज उड़राज कन्या,
सेवैं गन्धर्वी सुकुमारी सब शेष की ॥
नवला नरेशन की दमकैं नभ दामिनि ज्यौं,
आस पास सौंज लिये ठाढ़ी देश देश की ।
लखौंहीं तिहुँ लोकन की तिनमें किशोरमूर
अद्भुत किशोरी राजैं बेटी मिथिलेश की ॥११॥
केवरा कराव में न केतकी सु ताव में
न सुमन गुलाब में न आमहू अमन्द में ।
पारिजात अंग में न माधवी लवंग में
न मृगमद संग में न वैद्यनाथ चन्द में ॥
जूही में न एलिन में न चम्पा वो चमेलिन में
न सेवती नवेलिन में न मालहू पसन्द में ।
इतर सुगंध में न नील अरविन्द में न
जैसी सुगन्ध श्रीयुगल मुखचन्द में ॥१२॥
देखि बनरी की छवि रति सकुचानी हिय
हेरि बनरा को ज्यों मनोज होत झाँवरो ।
सिय रघुचन्द की छटा निहारि ब्याह समय
रसिक विहारी सब लोग भयो बावरो ॥
चुनरी ग्रथित पट पीत मणि मौर माथे
लखि जन भाखैं मिथिलेश पुन्य रावरो ।

नवल किशोरी गोरी दुलहिन बनी है जैसी
तैसो नव दूलह किशोर वर साँवरो ॥१३॥

छवि की निकाई कहीं दूजो ना लखाई
कि जैसी सुघराई यह कंज नैन बारे में।
सुन्दर श्यामताई है लजाई है कोटि काम
शोभा सवाई सब विधि के सवारे में ॥
मृदु मुसुकाई मन मोहत नर नारिन को
अंग अंग उपमा समाई सिय प्यारे में।
ऐसी मन भाई जो पाइ जाउँ कौनो भाँति
राखि लेतों बाँधि इन्हें पलक पिटारे में ॥१४॥

पहने पग नूपुर उर तोड़ा कड़ा संग
तापै पिताम्बर की कटि में छवि रोपी है।
जामा औ दुपट्टा गोप गुञ्जमाल गले,
कुण्डल कपोलन पै उपमा सब लोपी है ॥
दिये भाल उर्ध्वपुण्ड खौर युत नासामणि,
दसन मन्द हँसन नय सुदामिनि छवि छोपी है ॥
जुल्फैं घुंघुरारी श्रीवैदेहीवल्लभजू की,
तापै रंगीली एक जरीदार टोपी है ॥१५॥

जब से विलोकी मनमोहनी तिहारी छवि,
तब से जिया की गति एहि विधि ठगी रहे।
घर ना सोहाय बरु वर ना सोहाय,
तरुतर ना सोहाय चाय चहुँधा चगी रहे ॥

देर कवि कहत सु वेर वेर हेर फेर,
जाऊँ मिलि आऊँ यही भावना जगी रहे।
कासे बताऊँ तोसे कैसे मिल पाऊँ प्यारे,
वैरिन. ननदिया दायें बायें लगी रहे ॥१६॥
पेखि के पटूका औ चुनरी की सुभग छटा,
थाकि रह्यो लोचन करत ना कछु काम है।
वेदन को अम्बर पटम्बर रंगीलो बन्यो,
ईश केन कठ के कसीदा अभिराम है॥
प्रश्न औ मुण्डक माण्डूक्य के सितारे जड़्यो,
ऐतरेय तैतिर के सलमा ललाम हैं।
छन्द के अरण्य में दुचन्द के प्रकाश मानो,
सुन्दर प्रिया प्रीतम की शोभा सुखधाम है॥१७॥
राम के शरीर हैं जो नील मेघ के समान,
जनकलली की प्रभा शुद्ध बिजली सी है।
राम अंग को हैं रंग जमुन तरंग सम,
तामें जानकी हमारी प्रेम मछली सी है॥
बिन्दु कवि शंकर जटा की भाँति राम रूप,
सीय सुघराई सुर सरिता ढली सी है।
उपमा मिली है भली राम हैं भ्रमर श्याम,
मैथिली अली री स्वर्ण पंकज कली सी है॥१८॥
अवध नगर आय आजु अवलोक्यों आली
अब लों ना विलोक्यो ऐसो अवनि अभूत री।

मति हर लीनी मैं सनेह रीत दीनी और
प्रेम प्रीति लीनी यहि कीनी करतूत री ॥
कहत बिहारी लख्यों जा छिन छबीलो छैल
द्दगन समानो भई बिकल बहूत री ।
बिरह अकूत री परो ना कछु कूत री
सुकौशिला के पूत री भयो री नैन पूत री ॥१९॥
शीश पर क्रीट भासमान शोभमान
दीपति प्रकाशमान चन्द्रिका सी चन्द की ।
कुण्डल जे भीन वह मीनन को मान हरैं
मन्द मुसुकान पै मिठाई कलाकन्द की ॥
साँवरी सुरति हठि बावरी करत मोहि
रहति न गति मति सुरति सुछन्द की ।
तीन लोक झाँकी ऐसी झाँकी हम झाँकी नाहिं
जैसी आज झाँकी है युगल मुखचन्द की ॥२०॥
कोटि मार्तण्ड मणि मण्डित मुकुट शीश
चन्द्रिका चमक चकाचौंधी चहुँओर की ।
शिरपेंच पेंची कल कलँगी कुलिस कन
वन्दनी विचित्र चित्र असल अँजोर की ॥
सतगन नयन पर वसन सुकेश राजै
एक सी प्रकाश दुति दोनों चितचोर की ।
तीन लोक झाँकी ऐसी झाँकी हम झाँकी नाहिं
जैसी झाँकी झाँकी आज युगल किशोर की ॥२१॥

गौर रंग शोभा निरखि चन्द्रमा की भान हुई
नील रंग साड़ी जस सोहत मन भावन के।
साँवला की श्यामता बढ़ावत रंग दूनी जैसे
बदली घनघोर पुनि भादव के मासन के॥
दामिनि सी दमकत हैं ललीजू की गौर वर्ण
लागत अवधेशजू ज्यों पूर्णिमा हैं सावन के।
बिहँसत जब युगल रूप परस्पर गलबाहीं दै
तिरछी तकान गला काटत हैं लाखन के॥२२॥
परसि पदारविन्द पाय नख ज्योति रम्यो
नूपुर में जाय पुनि एँड़िन में अड़ि गो।
भ्रमि कटि मण्डल अखण्ड उर शीश देश
दोरदण्ड होय के पुनि ग्रीवा जाय गरि गो॥
निकसो तहाँ से चढ़ि चिबुक अधर नासा
अमल कपोल नयन भृकुटी निकरि गो।
रघुराज रामलाल भाल होय फिरन चाहे,
तो मेरो मन जुलुफ जंजीरन जकरि गो॥२३॥
मरकत ते प्यारी मेघ आभा सो चमकि रही
अलकें निहारि राम पलकें निवारे को।
पन्नग कुमारी किधौं उमही उमंगि राघो
पेखत जहर चढ़े व्याकुल उतारे को॥
योगिन को चित्त चारु बसि गो रसिक ह्वै कै
दौरत हैं नेक उतै धीरज सम्हारे को।

जुलुफ जंजीरन में फँसिगो हमारो मन
वार वार घूमि घूमि कसिगो निकारे को ॥२४॥
कज्जल ते कारे कच किंचित कुटिल प्यारे
भारे छवि ओजन ते सुषमा लघारे हैं।
मरकत मणि तारे पर शोभा के दुलारे प्यारे
नेह सों सँवारे राघो काकपक्ष वारे हैं ॥
चिक्कन चमकदार वासित सुगंध सार
राम शिर वारे अति सुघर सुधारे हैं।
अलक की लट बीच लटकत योगीन मन
जुलुफ जंजीरन में जग बांधि डारे हैं ॥२५॥
हीरा की झलक जैसी जुगनू की दमक जैसी
चपला की चमक जैसी मोती झलकान है।
सुधा को सीर जैसे नाविक को तीर जैसे
जादू को पीर जैसे करता पयान है ॥
शोभा को मूल जैसे फुलझरी को फूल जैसे
तेज को त्रिशूल जैसे राघव धरी शान है।
पुहुप विकसान जैसे जोति शशि भान जैसे
कंचन की खान जैसे तेरी मुसुकान है ॥२६॥
आज तक देखी नहिं जगत में सुहायवान
शीलवान जैसो यह सांवरो सलोना है।
एकबार बिहँसि कै विलोकत हैं जाकी ओर,
भूलि जात ताहि खान पान निशि सोना है ॥

लाज कुलकानि कर्म धर्म सब छूटि जात

मिथिला निवासिन को काह अब होना है।

साँवरो के आँखिन में क्या भरी सुजान वीर

जादू है कि मन्त्र है कि मूठ है कि टोना है ॥२७॥

तकि के तिरीछे नयन बान सम बेधि सैन,

देत हैं परम चैन भृकुटी नचाय के।

सुषमा निकाय देखो काम बिक जाय ऐसो,

रूप दरसाय कीन्हों विवस बनाय के ॥

रघुराज आलिन समाज ते परानी लाज,

देखो रूप राज प्यारी पलक बिहाय के।

नैन कजरारे मुख मोरिके निहारे

सीय अंश भुजधारे मनमोहन मुसुकाय के ॥२८॥

तेरे नैन कालि में कल्पतरु पैदा भये

ताके बीच मेरे नयन चाहत अकोर हैं।

तेरे नयन पावस अमावस की अँधेरी रैन

ताके बीच मेरे नैन घटा घनघोर हैं ॥

तेरे नयन बाजिवे को मधुर मृदंग भये

ताके बीच मेरे नयन नाचिवे को मोर हैं।

तेरे नयन मेरे नयन मेरे नयन तेरे नयन

मेरे नयन चोरिवे को तेरे नयन चोर हैं ॥२९॥

मार डाला यार तुमने जुल्फ लटका के प्यारे

मन्द मुसुकान आन बान यह तेरी है।

घायल जिगर है औ हस्ती मिटी है
बड़ा बेढब जखम है चोट चितवन करेरी है ॥
ठहर सकेंगे क्या प्रेम के पथिक प्रेमी
भौंहें कमान वान अँखियाँ जो वरेरी हैं।
बचेंगे नहीं ही सन्त रुख से रिहाई पै
चरणमें लगालो जान जाने में न देरी है ॥३०॥
चंचल चखन चित चोरत चलाके चोखे
चुमत अनी सी करि अंजन भरोरे में।
कंजहूँ लजत नाहिं नेकहूँ तुलत नाहिं
कारे मतवारे से फिरे हैं लाल डोरे में ॥
महावीर मोहन के मन के हरन वारे
खंजनहुँ हारे करि यतन करोरे में।
चपल चलावै चहुँओर तिरछौंहें मानो
खेलैं युग मीन कलधौत के कटोरे में ॥३१॥
ताकत ही तेज ना रहैंगे तेज धारिन माँहि
मण्डल मयंक मन्द पीले पड़ जायँगे।
मीन विन मारे मरि जायँगे तड़ागन माँहि
डूबि डूबि शंकर सरोज सड़ि जायँगे ॥
खायंगे कराल काल केहरी कुरंगन को
सारे खंजरीटन के पंख झरि जायँगे।
तेरी अँखियान ते लड़ैंगे यहाँ और कौन
केवल अरीले दृग लली के अड़ि जायँगे ॥३२॥

ए री मेरी आली जरा नेक सुनो कान दै

मानि उपदेश निज प्रेमिन सों कहना ।

पाय तरुणाई कदराई ना जनावे कभू

केहरी कराल को शृगाल जानि रहना ॥

छूरी औ कटारी भाला बरछी तमंचा तीर

तेजा अरु नेजा के असंख्य घाव सहना ।

कालहू जो आवै उसे बालहू से तुच्छ जानो

पै कोरदार नयनासे करोर कोस रहना ॥३३॥

रहना करोर कोस करना न याद आली

आवै आवेश तौ बेहोश नहिं रहना ।

रहना वाही के पास जाने जो पराई पीर

वाही के संग रहै और की नहिं चहना ॥

औरउ की आस है तो आशिकी की आग जरै

छन छन जीना छन छन मरना ।

मरना मंजूर पै टरना न नेक आली

पै कोरदार नयन से करोर कोस रहना ॥३४॥

अजब रसीले समशीले है सुशीले कञ्ज

खंजन हँसीले मीन मंजुल मरोर के ।

सुजन अशीले उर अन्तर वशीले प्रेम

मादक नशीले हैं यशीलै चित्त चोर के ॥

कंदिन के वैन तैन उपमा बनैन दैन

वैजनाथ नैन चैन दैन दया कोर के ।

और हैं न नैन लोक हेरे निज नैन जैसे
हेरे हम नैन नैन कौशल किशोर के ॥३५॥

जाकी ओर एकबार चितवै बिहारीलाल,
ताकी सुधि ना रही ठठोली और बोली की।
चलै की न फिरै की न गिरै चोट लगै की,
न भूषण की न लहँगा की न सारी की न चोली की ॥
देह की न गेह की न पति सुत नेह की,
न बंदुल की न मिस्सी की न सेंदुर की न रोली की।
सखियाँ अचेत ह्वै जात 'नागराजलाल',
मारे नैन बान जैसे चोट लगै गोली की ॥३६॥

पहिरि के कुसुम्बी चैल चली जाग राज गैल,
बीच मिले अवध छैल देखि समतूलैं री।
ज्योंही नियरानी त्योंहीं लाग बरषै पानी,
आप हँसे यह जानी याके नवल दुकूलैं री ॥
वाही छत्रमें सुजान मोहू को छुपाय लीनो,
बूँद भई बन्द गई ऐन अनुकूलैं री।
सौहें मोहि भाईन की पितहुँ के पायन की,
राघव के स्वभाव की कसक नहि भूलैं री ॥३७॥

जौलौं वेदबानी विधि वदन विराजमान
जौं लौं ईश शीश चन्द्र चन्द्रिका तनी रहे।
जौं लौं रतनाकर धराधर सहित धरा
भार धर धीर सों सुधीर ह्वै फनी रहे ॥

जौं लौं नभ मण्डल में रवि शशि विराजे चन्द्र
जौं लौं सीताराम की सुकीरति घनी रहे।
जौं लौं गंगधार के प्रचार पुहुमी के बीच
तौ लौं मनमोहन की ए मोहनी बनी रहे॥

कुण्डलिया

अँखियाँ छवि अँखियाँ लखी बरसत रस जनु मेह।
सजन सजाती समुझिकै सरस्यो सरस सनेह॥
सरस्यो सरस सनेह कानि कुल एक न रखियाँ।
बरबस परबस भईं शहद की सनी सी मखियाँ॥
समुझावत शुभ सीख सयानी संग की सखियाँ।
नहिं मानत मधुरी बात एक मदमाती अँखियाँ॥ १॥
नैना लागैं जाहि उर घाव करैं भरिपूर।
ऊपर प्रगट न देखिये भीतर चकनाचूर॥
भीतर चकनाचूर हाय उठती हिय हूकैं।
मदन मरोरत जोर विषम विरहा की लूकैं॥
दहत रहत दिन रैन परत नाहीं चित चैना।
कढ़त नहीं मुख बैन लगै जब मधुरी नैना॥ २॥
नयना सर विष रस भरे चुभत हीय बेपीर।
कसक करेजे करत हैं धरत नहीं मन धीर॥
धरत नहीं मन धीर शरीर सु थर–थर कांपै।
लहर चढ़त अति जोर जहर अँग–अँग प्रति व्यापै॥

मधुरी कल नहिं परत जाउँ कहँ सतवत मयना ।
करकत हैं दिन रैन जुलुम जालिम सर नयना ॥ ३ ॥
नैन मैन मद रस भरे सैन पैन असि धार ।
लगत तनिक जाके हिये करत सु घोर चिकार ॥
करत सु घोर चिकार घाव नहिं सूझै तन में ।
भूलि जात घर बार और नहिं भावै मन में ॥
लटपट चलत सु माधुरी अटपट बदत सु बैन ।
निठुर गजब जुलमी जबर अजब शिकारी नैन ॥ ४ ॥

सवैया

सुखकन्द नहीं मिसरी में नहीं नहिं दाखन चाखन माखनमें ।
सुख नाहीं मिले उर राखनमें हँसिके खिसके कछु भाखनमें ॥
सुख जेते सुशील प्रवीण भने हम ढूँढ़ बहू विधि लाखनमें ।
सुख हैं सुख तो सुख एकहिं हैं इन प्यारे औ प्यारीकी आँखनमें ।१॥
जाको लगै सोइ जाने ब्यथा पर पीरमें कोउ उपहास करे ना ।
प्रीतम जो चुभि जात हैं चित्त तो कोटि उपाय करे निकरे ना ॥
नेक सी कांकरि आँखि परे सों पीर के मारे धीर धरे ना ।
कैसे परै कल एरी भट्ट जिन आँखिमें आँखि परे निकरे ना ॥२॥
भूलि चितौनी लड़ै जो कभूँ वर व्याकुलताको मिले विनु माँगे ।
बेबस होय मन आय फँसे न चलै बस निगुन के गुन आगे ॥
अंजन देखि निरंजन को जियरा अकुलाय उठे अनुरागे ।
गोलीकी घाव लगे पै लगे इन आँखिनसों सखि आँखि न लागे ॥३

आँख लगे घर बार छुटे अरु भ्रात पिता सुनि के मन मांखे ।
आँख लगे वैराग्य चढ़े दुख दूनो बढ़े दुख ही दुःख व्यापे ॥
तीर चले तलवार चले बरछी जो चले धरणी धरि साके ।
गोली के घाव लगे पै लगे पर काहू की आँखि सो आँखि न लागे ।४

रसि जाते किते रसिया रसमें बसि जाते किते घर जारनके ।
फँसि जाते पथी लखि लोनी छटा गलियान बिहारी बजारनके ॥
परि जाते मजारन में कितने मुसुकानि सों मारे नजारन के ।
बनि जाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते हजारन के ॥५

तन कोमलता वर लोनी छटा छवि श्यामलता चित चोरन के ।
बलिहारी तिहारी बड़ी अँखियाँ तिरछी तकिया दृग कोरन के ॥
कटि चाल छवी मुख माधुरता अङ्ग तोरन भौंह मरोरन के ।
बनि जाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते करोरन के ॥६।

तन श्यामलता की कहाँ उपमा कवि कोविद कौन बखानन के ।
सुर शारद शेष महेशहुँ जाहि न शक्ति रखी है गावन के ॥
अवधेश के रूप की माधुरता लखि भान हुई घटा सावन के ।
बनिजाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते ये लाखनके ॥७।

ताकी तमाम जहानन में उपमा न कहूँ छबि की सम जाकी ।
जाकी सदा पद पंकज की रज की महिमा कहि वेदन थाकी ॥
थाकी गती सहसाननकी कमला रति दामिनि की दुति झाँकी ।
झाँकी अली अँखियाँ हमरी लखिके मुसुकान विदेह सुता की ॥८।

सुनिये श्रीमिथिलेशनन्दिनी विनती एक मोरि चित धरके ।
कबहुँक अवसर पाइ दसा मम कहियो जाय निकट रघुवर से ॥

गोपी ईश अति आतुर होय आयो द्वार त्रसित कलि डर से ।
दीजै शरण जानि शरणागत ये हैं वासी मोर नैहर के ॥ ९ ॥
सखि श्याम सजन रघुनन्दन को क्या पाग सुभग शिर नीको है ।
श्रुति कुण्डल लोल कपोलन पै अलकावलि ग्राहक जी को है ॥
मुख मण्डल की दुति देखि लजी प्रतिभा बहु सूर्य शशी को है ।
रसराज अनूपम अङ्ग सबै उपमा जगकी सब फीको है ॥१०॥
शिरमौर धरे मणियों से जड़ित श्रुति कुण्डल कंचन की लहरें ।
घनश्याम छटा पर पीत पटा दुति विद्युत की चहुँधा बगरें ॥
तुलसी अरु सूक्तनकी गलमाल मुखलाल अधर अघ द्वैत हरें ।
अस दूलह रूप किये मनमोहन सोहनके मनमां विहरें ॥११॥
तुम चाहो न चाहो पियारे हमें दिन रैन सदा जिय रूसे घने रहो ।
बोलो न बोलो हँसो न हँसो गर लागो न लागोजू रोस जने रहो ॥
जो जिय भावे करो रसिकेश भले सुख साज में सार सने रहो ।
नैनन से लखि लीजै लला जुग कोटिन लौं तुम नीकू बने रहो॥ १२
माधुरी सी मुसुकानि अली वर जोहनि मांहि करैं बरजोरी ।
बरजोरी न मानत ए मन री बरजोरी सुधाई चलै तिहि ओरी ॥
आली अरी बरजोरी सिया, बरजोहनि मांहि बसी कर घोरी ।
हे विधना सुन मोरी विनय चिरंजीव रहैं दोऊ सुन्दर जोरी ॥१३॥
श्याम शरीर सुहावन ए मन भावन विश्व लिये छवि छोरी ।
तैसी अली ए विदेह लली मन लेति विदेह तिया वरजोरी ॥
हौ सुकुमार कुमार कुमारि पै काहु की आई परै न ठगोरी ।
शंकर होय सहाय सदा चिरंजीव रहै दोऊ सुन्दर जोरी ॥१४॥

ज्यों सिय रंग रंगे रघुनन्दन रंगी रंग राम विदेह किशोरी ।
प्रेम अपार निहारि दुहूँन की श्याम किशोर भई मति भोरी ॥
औरन डीठ बचाय विलोकहिं रामसिया सिया रामकी जोरी ।
शंकर होय सहाय सदा चिरंजीव रहें दोऊ सुन्दर जोरी ॥१५॥
बैठे वरासन राम सिया सो प्रभा रवि-कोटिनकी छवि छोरी ।
भूषण अंगन अंग जड़ी चुनरी शुभ रङ्ग सुकेसर बोरी ॥
रतनावलि ठौरहिं ठौर लसैं हुलसैं मन मोद प्रमोद भरोरी ।
मोहनि मूरति राम सिया चिरंजीव रहैं दोउ सुन्दर जोरी ॥१६॥
नित्य निकुंज विहार करो रति रंग रंगी रहो लाड़ली गोरी ।
प्रीतम प्राण सुजान के संग दिये गलबांह बसो हिय मोरी ॥
श्रीमती चन्द्रकलादि अली गुण आगरि नागरि रूप लखैं तृण तोरी
ईश मनाय अशीशैं सबै कि बनो रहैं नित्य किशोर किशोरी ॥१७॥
दोऊ दुहूँ की मनोहर माधुरी देखि रहैं जु निमेष बिसारी ।
दोऊ दुहूँ मुसुक्यान मई बतियान में प्रान करैं बलिहारी ॥
दोउ दुहूँ के रंगे रंग में अंग में रंग वाहि रुचै रुचि धारी ।
पीको लगै प्रिय पीत पट्टको भट्टको लगैं प्रिय सांवरि सारी ॥१८॥
दोऊ दुहूँ के स्वरूप छके ललकै न परै पलकै अखियान हैं ।
दोऊ दुहूँन के हास विलास हुलास में जौन तज्यौ सनि सान हैं ॥
दोऊ दुहूँ के सनेह सुभाय समाय रहे उपमान न आन हैं ।
दोऊ दुहूँन के प्रानन प्रान जु जानिये ज्ञान के ज्ञान निदान हैं ॥१९
दोऊ दुहूँ को सिंगार सजैं रिझवारने वारि नई सखियान को ।
दोऊ दुहूँ प्रिय ऐसे लगै आजु ऐसी न दीप सिखा पखियान को ॥

दोऊ दुहूँ के सुजीवन प्राण सुजान सुजीवन ज्यों झखियान को।
दोऊ दुहूँ दरसै सरसै पै तऊ तरसै सरसै अँखियान को ॥२०॥
दोऊ दुहूँ अपने करकंज सुव्यंजन मंजु मजे में पवावैं।
दोऊ दुहूँ मुसुक्यानि महारस खानि विलोकनि पै बलि जावैं॥
दोऊ दुहूँ मुख देखे री यो लखि माधुरी भाय भरी छकि जावैं।
दोऊ दुहूँ रस रंग छके नव रंग उमंगनि सो न अघावैं ॥२१॥
ह्वै बलिहारि निहारि दोऊ दुहूँ वारि उतारि पिये अति प्यार सों।
दोऊ दुहूँ को दुकूल हिये छुपकाइ छकै अति आनंद भार सों॥
दोऊ दुहूँ के सु नाम सुने सनै सो गुनै स्वाद सुधा रसधार सों।
दोऊ दुहूँन के गोद भरैं थहरैं अंग मोद बिनोद अपार सों ॥१२
संगहीं दोऊ रहैं रसिया लखिकै रस रास विलास छकावैं।
दोऊ दुहूँन के अंगनि को अपने कर सेइ सुभाग सिहावैं॥
दोऊ दुहूँ मन में दिन राति अनेकन भाँति अनन्द बढ़ावैं।
अंगन अंग मिलाय रहै पै तऊ मिलिवे को दुहूँ ललचावै। २३॥
दोऊ दुहूँ दुलराय सुभाय अघाय नहीं तरसाइ रहे हैं।
दोऊ दुहूँ के उछाह लिये अति चाह उमाह बढ़ाइ रहे हैं॥
दोऊ दुहूँ गुन गाइ सुरूप लुभाय अपान भुलाइ रहे हैं।
दोऊ दुहूँ उर लाइ महा सुखसिन्धु समाय थिराइ रहे हैं ॥२४॥
दोऊ दुहूँ के सिंगार सँवारि जु कै बलिहारी सु प्यार पगे रहैं।
दोऊ दुहूँ के निहारि सु अंग अनंग तरंगनि सों उमगे रहैं॥
दोऊ दुहूँ रहसैं विहँसैं विलसैं हुलसैं रति रङ्ग रँगे रहैं।
दोऊ कहैं रस की बतियाँ दिनहूँ रतियाँ छतियाँ में लगे रहैं ॥२५

❀ श्रीराम कलेवा ❀

छन्द

जै गणपति गिरिजा गिरजापति जयति सरस्वति माता ।
जय गुरुदेव केशरीनन्दन चरण कमल सुख दाता ॥
उनइस सै दुइके सम्वत् में जेठ दशहरा काहीं ।
ग्रन्थ कियो आरम्भ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं ॥
अहै प्रीति की रीति अटपटी मैं केहि भाँति बताऊँ ।
ताते सानुज रामकुँवर को रहस कलेवा गाऊँ ॥
जेहि विधि जनकसदन रघुनन्दन कीन्हें रुचिर कलेऊ ।
सुख दीन्हें सारी सरहज को सो सब कहिहौं भेऊ ॥
ब्याह उछाह सिया रघुबर को मैं बरनों केहि भाँती ।
छन महँ बीति गई सब रजनी रागे रङ्ग बराती ॥
भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये ।
सुनि के पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू ।
गवनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू ॥
विनय सुनाय राय दशरथ सों पाय रजाय सचेतू ।
आनहु चारिहुँ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीश नाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ।
सखन समेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरङ्गा ॥

कबहुनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ।
मृदु मुसुकात बतात परस्पर पहुँच गये जनवासे ॥
जहाँ भानुकुल भानु अवधपति दशरथ राज विराजें ।
बैठे सभा सकल रघुवंशी तेजस्वी सुख साजे ॥
चोपित चोपदार जहँ बोलत बन्दी विरद उचारे ।
सुख दायक गायक गुण गावत नौबत बजत दुआरे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरंग ते मिथिलापति के बारे ।
चारिहुँ सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधिको लखि सखन सहित सतकारे ।
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहि छिन सानुज निरखि राम छवि सखन सहित सुख साने ।
लक्ष्मीनिधि मुख दरश पायके रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल बैन उचारे ।
करन कलेऊ हेतु पठाओ चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदु वचन प्रेम रससाने दशरथ मृदु मुसुकाने ।
चारिहुँ कुँवर बुलाय बेगहीं विदा किये सुख माने ॥
जनकनगर की जान तैयारी सेवक सब सुख पागे ।
निज निज प्रभुहिं सँवारन लागे लै भूषण बर बागे ॥
रघुनन्दन शिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी ।
तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रुचि रुचि पै जनु साधी ॥
कनक कलित अति ललित मणिन की मंजुल मौर विराजी ।
सिंधुरमणि के सजे सेहरा जोहि होत मन राजी ॥

ताके कोर कोर चहुँओरनि लगी रतन की पाँती।
जगमग ज्योति होत चहुँदिशि ते लखि अँखियाँ न झपाती ॥
कुण्डल लोलैं हलैं कपोलैं लगी अमोलैं मोती।
जेवदार जगमगहिं जड़ाऊ युगल जंजीरन जोती ॥
जालिम ज़ोर जौंहरी जुल्फैं युवतिन जीवन हारी।
छूटी अलकैं दुहुँदिशि झलकैं मनहु मयन तरवारी ॥
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखैं।
रसवारी बरबस बसकारी प्यारी आन न राखैं।
अति अवरंगी रति रस रंगी चढ़ी त्रिभंगी भौंहैं।
मनहुँ मदन के युग धनु सोहैं जोइ जोहैं सोइ मोहैं ॥
तिलक रसाल विशाल भाल पर किमि बरनों छवि ताको।
जनु नव घन पर रीझि दामिनी नेम लियो थिरताको ॥
अरुण अधर बिच दामिनि दुतिहर दमके दशननि पाँती।
सन्मुख मुख करि जेहि दिशि बोलें अजब छटा छहराती ॥
जगमगात अति श्याम गात पर जरव जरनि को जामा।
ताके कोर कोर चहुँओरनि गुथे रतन मणि ग्रामा ॥
पीत सुफेटा सुछवि समेटा कमर लपेटा राजै।
नवल पट्टको करन लट्टको कन्ध पट्टको भ्राजै ॥
छोरन लगीं भरोरन मोती कोरन लगी किनारी।
अतिशय हलकैं लगैं न पलकैं लखि ललकैं सुर नारी ॥
सिंधुरमणि के परे चौलड़े मणिन माल बहु सोहैं।
कठुला कण्ठ बिजायठ बाहन देखत ही मन मोहैं ॥

मणिमय कंचन सुखप्रद कंकन बंकन कर बिच बाँधे।
जनु सब युवतिन मन जीतन को यंत्र वशीकर साधे॥
मणिमय डालैं विरचित जालैं कसी कमर करवालैं।
कंचन वालैं बँधी विशालैं सजी सबुज उर मालैं॥
सुरही पीत जरकसी पनहीं मनही मनैं सुहाती।
नूपुर युत पद दियो महावर देखत देह भुलाती॥
वदन सकल सुख सदन रामको कोटि मदन मद मारे।
दरशत उर बरसत रस सबके जनु तनु धरे शृङ्गारे॥
बीरनि खात बतात सखन सों जब प्रभु जेहि दिशि बोलैं।
तन मन भूलि जात सब ताको लेत प्राण मन मोलैं॥

दो०—वरनि सकै को राम को अनुपम दूलह वेष।
जेहि लखि शिव–सनकादि को रहत न तनहिं सरेख॥

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारों राजदुलारे।
बड़े उमंगन चढ़े तुरंगन अङ्गन वसन सँवारे॥
जो रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे।
चढ़े तुरङ्ग संग ते गमने रामरंग मतवारे॥
बोले चोपदार लै नामैं निज–निज युक्ति अलापैं।
चंचल चमर चलै दुहुँदिशिते छत्र सखा सिर ढापैं॥
राम वाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं।
चंचल वागैं किये तुरंग की वात करत मन मोहैं॥
जगवन्दन जेहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को वाजी।
ताको गुण छवि कहँ लौं बरनौं जोहि होत मन राजी॥

भूषित भूषण अङ्ग अदूषण पूषण हय लखि लाजैं।
चोटिन मनियाँ गुथी सुमुनियाँ पग पैजनियाँ बाजैं॥
जड़ित जवाहिर जीन जरी की जरबीली अति सोहैं।
पूजि पटा की छैल छटा की काम लटा मन मोहैं॥
जेरबन्द मन-फन्द सबन की तंग सुरङ्ग सुहावै।
जरकसि पेटी लसी लपेटी झुक झालरि छवि छावै॥
ललित लगाम दाम बहुकेरी अङ्कित नाम विराजै।
सुछवि उमंगी झुकी त्रिभंगी मणिन कलंगी छाजै॥
जित रुख पावै तित पहुँचावै छिन आवै छिन जावैं।
जमि जमि थमि थमि थिरक भूमि पर गति नीकी दरशावै॥
खीनी कटि पीनी खुर थालैं बँधी नवीनी नालैं।
लेत उतालैं सिंधु उछालैं करत समुद इक फालैं॥
जब उड़ि टापैं धरत धरापै रवि बाजिन उर काँपै।
जल पै थल पै अनिल अनल पै जात न कबहुँ डरापै॥
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व गमावै।
रघुनन्दन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला देखावै॥
नाम समुद मुद देत नरन को जापर भरत विराजैं।
श्रीरघुनन्दन के दाहिन दिशि चलत चपल गति साजैं॥
रोकत बागै अति रिस रागै करते फुरकन लागै।
डमकि डमाकी लगती बाँकी दै हाँकी सुखपागै॥
कहुँ नभ जावै सुरन छकावै कहुँ महि मोद मचावै।
अवनी ते अरु आसमान लौं जनु सोपान बनावै॥

फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपला के चख झाँपै ।
भरत कुँवर को तुरङ्ग रँगीलो बरणि जाय कहु कापै ॥
चम्पा नाम चाल चटकीली जेहिपर रिपुहन भाये ।
सब समाज के आगे निरतत मोर कुरङ्ग लजाये ॥
जो कहुँ नेकहु हाथ उठावत कई हाथ उड़ जातो ।
बार बार चुचकारि दुलारत ताहूपै न जुड़ातो ॥
जब गहि वागै ठुमकत चालैं गनि गनि धरत सुफालैं ।
तकि तेहि चालैं सुरमुनि लाजैं चितवत चकित बिहालैं ॥
गजन मध्य घुसि परत डरत नहि जरत परत पगु धारे ।
रिपुसूदन को बाजि बाँकुरो कोटिन कला पसारे ॥
लक्खी घोड़ा लषन लाल को बाँको विकट चलाको ।
उड़ि उड़ि जात वायुमण्डल को परत न पग महि ताको ॥
छनक छितै छिन आसमान पर छबि छबिको छबि छावै ।
छनमहँ छन छन नाच नई गति सिगरे जनन छकावै ॥
तरफराय उड़िजाय परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ।
उचित विचारहिं सब रघुबंशी रामहु मृदु मुसुकाहीं ॥
मेघ घटापै मारि सुटापै बिचरै विबुध अटापै ।
केम जटापै वाजिन ढापै जनु रविमण्डल नापै ॥
तोप तुपक जूटै जहँ छूटै तहाँ जाय सो टूटै ।
रण रस घूटै वैरिन कूटै वीरन में यश लूटै ॥
हूत करत पुरहूत डरत हिय महा बूत बल जाके ।
जबसे रहे जनकपुर वासी जोहि जोर जब ताके ॥

चीकन चोटी सुभग सुकोटी मोटी कटि छबि पावै।
रेशम तारन जाल सँवारन वायू ऊपर धावै॥
फुल झरिया सो झरत धरत डग करत अनेक तमासो।
दुरकनि मुरकनि थिरकनि तरकनि बरनि जाय कहु कासो॥
तकि तुरङ्ग की चंचलताई लखन की देखि चढ़ाई।
निमिवंशी रघुवंशी सगरे ठगिसे रहे बिकाई॥
राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहैं।
रीझि रीझि तहँ लषनलाल को बारहिं बार सराहैं॥
इमि मग होत विलास विविध विधि विपुल बाजने बाजे।
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे॥
कोउ तिय निरखि वदन की सुखमा अति सुखमा सों पागी।
भरी सनेह देह सुधि नाहीं रामरूप अनुरागी॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला।
फूला नैन सैन मन भूला लागि प्रीति की हूला॥
कोउ तिय पति सँग परी पलँग पै झाँकि झरोखे लागी।
रामरूप रँग गई लाड़िली उठि भागीं पति त्यागी॥
कोउ घूँघट पट खोलि सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी।
देखत दुलह रूप रामको आनँद सिंधु समानी॥
दो०—कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुख पागि।
मधुरी मूरति में पगीं, निज सूरति सुख त्यागि॥
कोउ रघुनन्दन छबि विलोकि कै बोली सुनु सखि बैना।
राजकुमर सब करन कलेऊ जात जनक के ऐना॥

इनको श्रीनिधि गयो लिवाई आयो चारिहु बेटा ।
रँगभीने रघुवंशी छैला दशरथराज दुल्हेटा ॥
धनि यह भाग हमारी प्यारी निज भरि नैन निहारे ।
नतु दर्शन दुर्लभ दूलह के रविकुल प्राण पियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेश की बेटी ।
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति जिन निज भुज भरि भेंटी ॥
बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई ।
हमहुं चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हैं हँसाई ॥
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भईं प्रेम बस बामा ।
सुनत जात मुसुकात अनुज युत कृपासिंधु श्रीरामा ॥
तुरँग नचावत मग छवि छावत बाजत विपुल नगारे ।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पगु धारे ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सँवारे ।
राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उतर जाय लहि सिया मातु की नगर सुआसिन नारी ।
कंचन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर कर ले कंचन थारी ।
परिछन चलीं हेतु रघुवर को बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि राम छवि दृग आनँद जल बाढ़ी ।
छकित रहीं वर वदन विलोकत चकित जहाँ तहँ ठाढ़ी ॥
रामरूप रँगि गईं रँगीली लखि दूलह सुख सारा ।
तन मन रह्यो सरेख न काहू को कर मंगल चारा ॥

प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ।
परिछन अली भली विधि कीन्हों रोकि विलोचन वारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँग ते चारिउ कुँवर उतारे ।
पाणि पकरि रघुनन्दनजी को भीतर महल सिधारे ॥
द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप विराजै ।
बैठे सभा सकल निमिवंशी सुर अंशी इमि छाजै ॥
चोपदार जाँगरे अलापै बहु विधि नौवत बाजैं ।
फहरे विपुल निशान जरीके नव गयन्द गजराजैं ॥
रघुनन्दन तहँ अनुज लषन युत सादर जाय जोहारे ।
देखत उठे सकल निमिवंशी जनक निकट बैठारे ॥
गर गजरा कजरा दृग में सेहरा युत मौर विराजी ।
दूलह वेष विलोकि रामको भई सभा सब राजी ॥
तहँ करि कछु दरबार जनक को दशरथ राजदुलारे ।
लैके राय रजाय नाय सिर सासु समीप सिधारे ॥
जहँ पिकबैनी सब सुख ऐनी सासु सुनैना रानी ।
इन्द्राणी की कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
चन्द्रमुखी चहुँओर विराजै कोउ कर चमर डुलावैं ।
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावैं ॥
बिछे गलीचे गद्दी तेहिके ऊपर आसन आजै ।
जनकराजकी रानि सुनैना कोटि चन्द्र छवि छाजै ॥
तेहि छिन तहाँ गये रघुनन्दन मन फन्दन वर वेषा ।
देखत उठीं सकल रनिवासें रह्यो न तनहिं सरेषा ॥

करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाँय पखारे ।
चारि रङ्ग के चार सिंहासन चारिहु वर बैठारे ।।
लखि छवि ऐना सासु सुनैना एक छन पलक तजै ना ।
भूली चैना बोलि सकै ना कहत बनै ना बैना ।।
तकि छकि रहीं तनक नहिं डोलैं मगन महा मुद माहीं ।
रामरूप रँगि गई रँगीली आँसु प्रेम दृग जाहीं ।।
इमि तहँ दशा विलोकि सासु को राम गुनत मन माँहीं ।
काह भयो यह आजु रानिको पूछत में सकुचाहीं ।।
चतुर सखी चित चरचि रामसों बोली मधुरी बानी ।
यह तुम्हरे गुण हैं सब लालन और न कछु उर आनी ।।
सुनत बैन यह तुरत धीर धरि जगीं सुनैना रानी ।
बार बार बहु लीन बलैया चूमि कपोलन पानी ।।
मधुरी मूरति साँवलि सूरति को तृण तोरति रानी ।
रीझि रीझि तहँ रामरूप पै बिनहीं मोल बिकानी ।।
पुनि करजोरि राम सों रानी बोली अति मृदु मोई ।
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ।।
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहुँ राजदुलारे ।
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पाँय पखारे ।।
रचना अधिक पदक के पीढ़न बैठारे सब भाई ।
कञ्चन थारी मृदुल सोहारी परसी विविध मिठाई ।।
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत पवन डुलावैं सासू ।
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसे बरनि न जाय हुलासू ।।

स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये।
बैठे पहिरि पोशाक सखन युत विविध सुगन्ध लगाये॥

दो०—राजऐन सब चैन युत, राजैं राजकुमार।
जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखन मार॥

तेहि अवसर सुधि पाय सखी युत लक्ष्मीनिधि की नारी।
नाम सिद्धि परसिद्धि जासु गुण रूप सील उजियारी॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दरि नव जोवन मतवारी।
रसिकन रीति प्रीति परवीनी रतिहिं लजावन हारी॥
अति गुणवान निधान रूपकी सब विधि सुभग सयानी।
लक्ष्मीनिधि की प्राण पियारी निमिकुल की महरानी॥
अलबेली सरहज रघुवर की बड़ी सनेह शृङ्गारी।
प्रीतम प्रीति निवाहनहारी राम रूप रिझवारी॥
चंचल चखन चहूँ दिसि चितवति देखन को अतुराई।
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई॥
बदन चन्द अरविन्द लिये कर विहँसत मन्दिर सोहैं।
रामकुँवर कों पकड़ लाड़िली बोली तकि तिरछोहैं॥
ऐ चितचोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे॥
उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई।
तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमार अवाई॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई॥

सुनत रामके वचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई ।
तुमरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई ॥
सासु सुनैना के समीप महँ देत जवाव बनै ना ।
पाणि पकरि रघुनन्दनजी को गई लिवाय निज ऐना ॥
चारि सिंहासन दे तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ।
वारहिं बार निहार बदन छवि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकण्ठ मालती माला बसननि अतर लगायो ।
अंचल सों मुख पोछि राम को निजकर पान खवायो ॥
जहँ चन्द्रिका समान चाँदनी चहुँकित सुछवि विशालैं ।
चमकैं चित्रा हेम सदन के दमकैं मणिन देवालैं ॥
जहँ रति रम्भा सरिस सुन्दरी बैठी किये शृङ्गारे ।
कोउ कुसुमनको कर्णफूल रचि कोउ कलँगी कोउ हारें ॥
ललित लवंग कपूर सुगन्धित कोउ सखि पान खवावें ।
कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ीं कोउ सखि चमर डुलावें ॥
कोउ शीतल जल भरे सुराही कोउ दर्पन दरसावें ।
निज निज साज सजे सब प्यारी रघुवर सन्मुख आवैं ॥
कोउ जलतार सितार तमूरा कोउ करताल बजावैं ।
कोउ सितार ले तार तारगत गूढ़ गतिन दरसावैं ॥
कोउ उपंग मुरचंग मिलावैं दै मृदङ्ग मुख थापैं ।
कोउ लै बीणा नवीन सुरन तें मनहुँ वसीकर जापैं ॥
कोउ मृगनैनी कोकिल बैनी पंचम गीत अलापैं ।
परत कान में मधुर तान जेहि विरहिन के जिय काँपैं ॥

जय की तान मान दै कोई तान वितान बिछावै ।
सुनतै स्रवै द्रवै तरु पाहन मुनिहुँ के मदन जगावै ॥
इमि अभिराम धाम शोभा लखि राजकुँवर अनुरागे ।
बातें करत सिद्धि सरहज सों परम प्रेमरस पागे ॥
जे निमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी ।
राम मिलन की बड़ी लालसा कहि न सकैं सुकुमारी ॥
अति निरदूषन भूषित कञ्चन कैसी बनी नवेली ।
रूप शील गुणवान रँगीली राजकुँवरि अलवेली ॥
जानहिं प्रीति रीति की बातें केलिन कुशल नवेली ।
जिन जोहत मुनिजन मनमोहत मनहुँ मदन की चेली ॥
जिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहुँ भाई ।
तुरतहिं पहुँची सबहीं प्यारी जानि समय सुखदाई ॥
देखन राजकुँवरि सब आईं राम दरस की प्यासी ।
अति सनमान कियो सबहीं को सिद्धि सदन सुखरासी ॥
राम सुछवि देखन ते लागीं दृग आनन्द जल बाढ़े ।
झपझप परें रूप सागर में कढ़हिं नहीं अब काढ़े ॥
मणिक मौर वर मोतिन कलँगी अलवेली अस सोहै ।
राजतियन को कौन चलावे मुनियन को मन मोहै ॥
पीत पोशाक करन कल कंकन बंकन चितवनि जोहैं ।
योगी यती सती तपधारी सबहीं को जिय मोहैं ॥
अनियारे कजरारे कजरा बाँके नैन रिझोहैं ।
रहत न ताके निकट कजाके मार करत तिरछोहैं ॥

चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकैं मुख पर छूटीं।
जोहत जहर चढ़त युवतिन को जड़ी न लागत बूटी ॥
बीरनि लाली दोउ अधरन पर सूरज प्रभा पसारैं।
मानहुँ निकसीं मदन म्यान से सान धरी तरवारैं ॥
झीन सुजामा अति अभिरामा श्यामगात छवि छाये।
रीझि दामिनी जनु घन ऊपर अपनी छटनि छपाये ॥
मंद हँसनि जनु फँसनि लाल को भौंह कसनि गरवीली।
सुधि न रहत तन असन वसनको सुनत जबान रसीली ॥
दूलह मूरति की बलि सूरति कहलौं करौं बखानी।
फिर न दृगन तर आवत कोई जब ते छवि दरसानी ॥
लखि छविवर को श्यामसुन्दर को भई मौन सुख सरकी।
तरकी तनी कंचुकी दरकी कर की चूरी करकी ॥

दो०—मन लोभा शोभा निरखि, भई विवश सुकुमारि।
　　चकित छकित सव रह गई, तन मन दशा विसारि ॥

जो तिय मानि अनूप रूप निज रहीं स्वरूप गुमानी।
तेहि लखि राम वदन की सुषमा बिनहीं मोल बिकानी ॥
जे निज दृगन मृगन ते सुन्दरि गुणि रही गरव के मारे।
छेदि गई सो राम कटाच्छे घायल आँसुन डारे ॥
जे अवला अवलंब वेद लै सदा पतिव्रत पालैं।
ते बेधी मनसिज के बाणन व्याकुल फिरहिं विहालैं ॥
रघुनन्दन अलबेला छैला नैन सैन जेहि मारी।
तेहि सुधि रही न काम धाम की फिरहिं मनो मतवारी ॥

अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी।
तहँ प्यारी गारी रघुवर को देन दिवावन लागी॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो।
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई।
एक बात तुमसो हम पूछैं लाल, न राखहु गोई॥
होत ब्याह सम्बन्ध सबन को अपने जातिहिं माही।
निज बहिनी शृंगीऋषि को तुम कैसे दियो बिवाही॥
की उनको मुनीश लै भागो कै बोई संग लागी।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुबंश अदागी॥
लखन कहैं यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखि दीना।
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना॥
कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ विदेह बैरागी।
भयो हमार ब्याह तुम्हरे घर विधि गति मनै को भागी॥
औरो एक हाँस उर आवै अचरज है सब काहू।
तुमतो हो विधि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि कस ब्याहू॥
एक सखी कह सुनो लालजी तुमहि सकै को जीती।
जाहिर अहै सकल जगमाहीं तुमरे घर की रीती॥
अति उदार करतूतिदार सब अवधपुरी की बामा।
खीर खाय पैदा सुत करतीं पतिकर कछु नहिं कामा॥
सखी बचन सुनतै रघुनन्दन बोले मृदु मुसुकाते।
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आनकी बातें॥

कोउ नहिं जनमें मातु पिता विनु बँधी वेद की नीती ।
तुमरे तो महि ते सब उपजे अस हमरे नहिं रीती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी ।
सिद्धिकुँवरि की लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥
लरिकाईं ते रह्यो लालजी तुम तपसिन संग माहीं ।
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहौ हम पाहीं ॥
की मुनि नारिन के संग सीखे की निज भगिनी पासे ।
मीठो सीठो स्वाद लालजी विनु चाखे नहिं भासे ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहु तो अवै कुमारी ।
वर्नहु पुरुष संगकी बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन संग ज्ञान सिखनको सो सब सिखे सिखाये ।
कामिनि काम कला अव सीखन हम तुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुम न बखानो ।
तुम्हरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानो ॥
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी ।
ऐसी सेवा करो कामिनी जासों हो मन राजी ॥
आये ऐन अपूरब योगी अस निज मन गुनि लीजै ।
अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहिं पूजन कीजै ॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ।
मख राखन को गये कुँवर ये तहँ हम यह सुधि पाई ॥
इन कहँ सुन्दर देखि काम वश त्रिया ताड़का आई ।
सो करतूति न भई लालन सों मारेहु तेहि खिसिआई ॥

बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै।
जो करतूति बनी नहिं इनते सो हमसे भरि लीजै॥
बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो ब्याहू।
सो पछिताव न राखो प्यारी अब करि लेहु समाहू॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावत सो मति करहु उपाई।
वैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिहु भाई॥
सुनि वाणी रिपुदमन लाल की बोली कोउ सुकुमारी।
कहँ पाई ऐसी चतुराई कहिये लाल बिचारी॥
की कहुँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन संग कीनो।
तीनों भाइन ते तुम्हरे महँ लखियत चिन्ह नवीनो॥
रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहिं जानै।
गणिका नारिनहूँ ते सौगुण तुम्हें अधिक हम मानैं॥
हमरो तुम्हरो चिह्न लाड़िली एकै भाँति लखाई।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चहिये अवशि सगाई॥
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातैं बोली सिद्धि कुमारी।
सुनिये रसिक राय रघुनन्दन आनन्द कन्द विहारी॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी।
कैसी बची होयँगी तुमसे अवधपुरी की नारी॥
यों कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुख ऐना।
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु बैना॥

दो०—जस मर्यादा जगत की, बाँधि दियो करतार।
राजा रंक यती सती, करत सांई व्यवहार॥

अनुचित उचित विचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ ।
तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ ॥
यह सुनि भरत लषन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भईं सुखारी ॥
यहि विधि हँसि हँसाय रघुवर सों दे दिवाय मृदु गारी ।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सुकुमारी ॥
कोउ सखि राम समीप जायके कहती कछु लगि काने ।
कुँवर कपोल परसिके प्यारी जनम सुफल करि माने ॥
कोइ निज कोमल कमल हाथ ते चरण कमल प्रभु चापैं ।
बार बार हिय लाय लाड़िली दूर करें तनु तापैं ॥
कोइ गलमाल उतारि कुँवर की डारि कण्ठ निज लेहीं ।
रघुवर मिलन सरिस सुख पावैं वारि अपनपौ देहीं ॥
कोउ चंदन चढ़ाई रघुवर उर पुनि निज तनहि लगावैं ।
स्वेद सुगन्ध परसि के प्यारी तीनहुँ ताप मिटावैं ॥
कोइ कर कंजन लै मृदु अंजन खंजन दृग दै देहीं ।
विलग न मानहिं राम रंगीले आपन जानि सनेही ॥
कोइ चुनि कली अली अति सुन्दरि रचि कलंगी शिर दीनी ।
राम कुँवर कर छुवत छबीली छकित रहीं रस भीनी ॥
कोउ सखि पान खवाय रामको पुनि निज मुख लिये मेली ।
प्रीत प्रसाद जानिके सुन्दरि मगन भई अलबेली ॥
निज निज रुचि अनुरूप रामसों कियो भावना प्यारी ।
चित चढ़ गई साँवली मूरति भईं प्रेम मतवारी ॥

रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी।
जस जाके जिय रही लालसा तस तेहिके रुचि राखी॥
अवधपुरी दिलदार यार सों लगी अलिन बिच प्यारी।
परवस परीं प्रेम पिंजरा में उड़ न सकें सुकुमारी॥
रघुनन्दन तब कह्यो सिद्धि सों जो तुम देहु निदेशू।
तो अब हम गवनैं जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू॥
सुनि यह बाणी रामकुँवरकी काँपि उठीं उर आली।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह बिहाली॥
नेह बढ़ाय छकाय रूपरस आपु अवध अब जैहैं।
हम बिरहिन के प्रान लाड़िले कहो कौन विधि रहिहैं॥
नृप किशोर चित–चोर छबीले तब कस प्रीति लगाई।
हम अबलन अब मारि साँवरो चाहत अवध सिधाई॥
की तुम लाल रहैं बांद राखो जब जैहैं ससुरारी।
करिहैं कतल जनकपुर नारिन मारि प्रीति तरवारी॥
हम अबला अवध्य सब भाँतिन सो तुम कान न मानी।
मारेहु नैनबाण विषबोरे भौंह कमानहिं तानी॥
लोक लाज कुल कान बड़ाई यह छन में सब टूटे।
सुनिये रसिकराय रघुनन्दन लगी प्रीति नहिं छूटे॥
नीच ऊँच कौनिउँ जातिन सों जो सनेह लगि जाई।
मिटै न तरस दरस बिन देखे कोटिन करो उपाई॥
यद्यपि मीतकी मूरति निशदिन हिय में बसति बिशेषे।
तरसत रहत दोउ दृग पापी मानत नहिं बिनु देखे॥

बोलनि चलनि हँसनि प्रीतम की हित ते होत न न्यारी।
तऊ तासु मिलबे को लालन रहति लालसा भारी॥
यों जगमें वहु पुरुष देखियत सुन्दर सुघर सुजाती।
बिन देखे निज प्यारेजी को होत न शीतल छाती॥
छन छन विरह दहै रघुनन्दन नैन लगनि जेहि लागी।
ज्यों भूने की लिये काँकरी जब छिरकत तब आगी॥
निशि दिन ताही में सुख मानत गनत न नीति अनीती।
प्रीति की रीति तेई यह जानै जिनके हाथ विनीती॥
भरि भरि आवैं नैन वियोगी सूखत जात शरीरा।
प्रीतिमान पहिचानहिं प्यारे प्रीतिमान की पीरा॥
वरु सबते निराश ह्वै रहिये सकल जगत सुख भोगू।
परम पुनीत विनीत प्रीत की दैव न देइ वियोगू॥
जो करतार सुनै मम विनती देइ इहै करि छोहू।
अति दिलदार यार प्यारेको कबहुँ न होइ बिछोहू॥
परवस परे जाय वरु सरवस सब तजि होय विदेही।
स्वप्नेहुँ में बिछुरे न विधाता आपन यार सनेही॥
भोगै नरक निकाय जनम भरि रहैं स्वच्छ अरु पापी।
पै कबहूँ बिछुरे न विधाता आपन यार मिलापी॥
करम धरम वरु त्यागि जगत में फिरै प्रेम मतवारो।
पै कबहूँ बिछुरे न विधाता आपन प्राण पियारो॥
वरु जल भीतर बसे जनम भरि तप करि तनुहिं झुरावै।
पर स्वप्नेहुँ अपने प्रीतम को विधि न वियोग करावै॥

वरु मुख खाक लगाय चाय भरि खाय घरन कै टूका।
पै करते निज पिय प्यारे सों कबहुँ परै जनि चूका॥
जाति पाँति वरुगोइ खोइ कुल सब तजि होइ भिखारी।
कबहुँ न होइ प्रीति की मूरति इन नयनन ते न्यारी॥

दो०—जेते सुख सर्व जगत में, सुनिये राजकुमार।
ते सर्व दुख होइ जात हैं, बिछुरत प्रापन यार॥

यद्यपि हम अबला रघुनन्दन नीच जाति सब भाँती।
पै लगि जाहि प्रीति उर जासो तेहिके हाथ बिकाती॥
अति निर्दय स्वारथ रत सब दिन चलियत चाल अनीती।
पै हिय कपट न राखहिं तासों बाँधहिं जासों प्रीती॥
हम तिय नीच मीच की मूरति सदा असाँचहिं भाखैं।
पै लगि प्रीति करै हम जासों तेहि तन मन दै राखैं॥
पति पितु पुत्र बन्धु परिजन ते रहें सबन ते न्यारी।
पै कछु बीच न राखहिं तासों बाँधहिं जासों यारी॥
हमसे नीच न कोउ जग रघुबर तुमसे ऊँच न कोई।
पै हिय प्रीति जो तौलि लीजिये गरू हमारो होई॥
सुनि इमि आरत बैन तियन के तरुन करुन रस साने।
कोमल चित कृपालु रघुनन्दन प्रीति रीति भल जाने॥
बोले वचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहु सब कोई।
अब मैं कहौं स्वभाव आपनो तुम्हैं न राखहुँ गोई॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक इनतें और न भारी।
तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी॥

जो कोउ प्रीति करै मेरे पर होत जो जान अजानौं ।
प्राण समान सदा तेहि राखौं औगुण एक न मानौं ॥
मेरी है यह बान लाड़िली प्रीतिवंत जन जानै ।
नतु खोजत लागे मोहिं प्राणी करि जप तप ब्रत ध्यानै ॥
जिन जिन प्रेमिन केरि जगत में सुनियत बड़ी बड़ाई ।
तिन तिन में विचारि जो देखो सब में एक खुटाई ॥
हिम तन दहै न कहै कयौं कछु पुनि तेहि लखि सुख मानै ।
ऐसो दरद कमल के दिलको कहो भानु का जानै ।
तरसत रहत दरस बिनु पाये नित ताकत तेहि पाहीं ।
अस चकोर की प्रीति चन्द्र के नेकु चुभी चित नाहीं ॥
घुमरी घटा देखि प्रीतम की नाचत दादुर मोरा ।
ताकी ओर तनिक नहिं ताके ऐसो मेघ कठोरा ॥
पिउ पिउ करिके जौन पपीहा प्राण त्याग करि दीन्हा ।
पिव के जीव दया नहिं आई वरु हत्या शिर लीन्हा ॥
सरबस त्याग परी तेहिके बश छाड़ति नहि दिन राती ।
ऐसी मीनकी देखि मिताई जलकी फटी न छाती ॥
जात पतंग समीप दीप के मोहि ज्योति छन माहीं ।
तेहि तन दाहन में कृशानु के भई दया कछु नाहीं ॥
ऐसे बहुत प्रीतिवानन की देखों चाल अधीरा ।
एक तो प्राण देत वाके पर एक करत नहिं पीरा ॥
अस नहिं प्रीति हमारी प्यारी सुनहु सिद्धि सुख धामा ।
अपने प्रीतिमान प्राणी को पल भरि तजौं न ठामा ।

छोट जानि मेरे प्रीतम को जो कोउ गर्व देखावै।
अतिशय बड़ा बनाऊँ ताको ब्रह्मा माथ नवावै॥
सिगरे लोकन माँह लाड़िली सबसे तेहि पुजवाऊँ।
ब्रह्मादिक को कौन चलावै मैं तेहि शीश नवाऊँ॥
अपने औ वाके शरीर में नेकहु भेद न राखौं।
कबहूँ छोह न छाड़ौं ताको चूक करै जो लाखौं॥
तीन लोक को राजकाज सब संपति सुत वैदेही।
ये सब प्यार न लागहिं मोको जस मोहिं प्यार सनेही॥
नाना रूप धरौं तिनके हित वन वन विचरत बागौं।
केती विपति सहौं शिर ऊपर पै निज यार न त्यागौं॥
गणिका गीध गयंद अजामिल शबरी औ कपिराऊ।
जामवन्त हनुमन्त विभीषण जानहिं मोर स्वभाऊ॥
जो निज मन समेटि सर्वस ते बाँधहिं मम पद प्रीती।
ताके साथ दास सम डोलौं अस हमार है रीती॥
मोसे प्रीति लगाय करे जो और देवन की आसा।
कोटिन विनय करे जो प्राणी मैं न जाऊँ तेहि पासा॥
प्रेम परायन अति चितचायन मित्र भाव हिय लेखे।
ऐसे प्रीतिवान प्राणी को कल न परहिं बिनु देखे॥
मनमें स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दरसावै।
ऐसे मूढ़ मीत की सूरत स्वप्नेहुँ मोहिं न भावै॥
महाप्रलय जब होत जगतको बचत न कोउ नरनारी।
नाश नहीं मेरे प्रीतम को सुनहु सिद्धि सुकुमारी॥

जाको मैं राखन मन चाहौं ताहि को मारन हारा।
जाको चहौं उथापन प्यारी तेहि को थापन वारा॥
तनिकहुँ जासु चहौं मनते मैं मंगल मोद भलाई।
ताकी तैंतिस कोटि देवता करहिं सदा सेवकाई॥
छन महँ करौं विरंचि रंक सम रंक विरंचि बनाऊँ।
शिव सनकादिक आदि देवता सब कहँ मैंहि नचाऊँ॥
कर्म धर्म वीरता धीरता योग सिद्ध चतुराई।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुणाई॥
इनते जीति सकै नहिं मोही कोटिन करे उपाई।
हारि जाउँ प्रेमी प्राणी तें तहाँ न मोर बसाई॥
ते तुम सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहि प्राणहु ते प्यारी॥
तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सबहीं भाँति पुजैहौं।
लोककी लाज बचाय लाड़िली तुमते विलग न होइहौं॥
हम सब भाँति तुम्हार साँवरी तुम सब भाँति हमारी।
सत्य सत्य ये सत्य बचन मम मानहुँ राजकुमारी॥

दो०—रघुनन्दन के वचन सुनि, खुलिगे कपट किवार।
वढ्यो प्रेम सब तियन के, तनकहुँ नहीं सम्हार॥

पुनि धरि धीरज अली भली विधि जोरि पंकरुह पानी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुबानी॥
धन्य भाग हमारो रघुनन्दन हमते बड़ कोउ नाहीं।
बूड़त रही जगत सागर में राखि लीन्ह गहि बाहीं॥

हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुदमोई।
राजकुमार रावरे के सम कौन कृपा नहिं कोई॥
प्रति उपकार होत नहिं हमतें जस तुम कीन्हेहु प्यारे।
चन्द्र समान होयँ नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे॥
जेहि जेहि योनि करम बश हमको जनम विधाता देहीं।
तहँ तहँ रसिकराय रघुनन्दन तुमहीं मिलहु सनेही॥
वरु विधि कोटिन करै जातना या तन छन छन छूटै।
हमरी तुम्हरी लगन लाड़िले कौनो जन्म न टूटै॥
सुनि बानी करुणारस सानी रघुबर अन्तरजामी।
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी॥
सबसों विदा माँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगु धारे।
निकसे मानहु सिद्धि महल ते चारि चन्द्र छविवारे॥
रामहि पान खवावत साथहि चली सिद्धि सुख ऐना।
आये राजमहल में सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना॥
चरण प्रणाम कीन रघुनन्दन जोरि सरोरुह पानी।
विदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बानी॥
सुनिकै बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना।
रहो कि जाहु न कछु कहि आवे भूलि गईं सब चैना॥
पुनि धरि धीर अनेक सुभूषण जे वड़ मोल के जानी।
अनुज सखन युत रामकुँवर को दीन सुनैना रानी॥
पाय पोशाक नाय शिर चरणहिं लहि अशीश मुद ग्रामा।
तब कर जोरि सिद्धि भइ ठाढ़ी सुनो राम सुख धामा॥

हम रउरे चरणन की दासी प्रेम पिआसिन नारी।
हम पर छोह न छाड़ब प्यारे आपन विरद विचारी॥
दृग जल भरि बोले रघुनन्दन हम तुम्हरे बन्दि प्यारी।
अस कहि बोध दियो बहु भाँतिन तब सिधि महल सिधारी॥
रघुनन्दन तब अनुज सखन युत जनक सभा पगुधारे।
सादर कियो जुहार चरण छुइ पाय रजाय सिधारे॥
लक्ष्मीनिधि युत राजकुँवर सब आदि! पौरि जब आये।
सेवक सकल तैयारी कीन्हें वाहन सबै बुलाये॥
कोउ तुरङ्ग पर कोउ मतंग पर आप रुचिर सुखपाला।
कोउ सुन्दर स्यंदन चढ़ि राजे बाजे विपुल विशाला॥
फहरे सुभग निशान गगन पर विपुल नकीब पुकारे।
चहुँदिशि ते जाँगरे अलापैं बन्दी विरद उचारे॥
कोउ सिर किये छत्रकी छाया कोउ कर व्यजन पसारे।
कोउ रुचि पान खवावैं रामहिं चमर दोउ दिसि ढारे॥
इमि रचना युत श्रीरघुनन्दन जू चढ़े चले सुखपाला।
ललकि झरोखन झाँकन लागीं जनक नगर की वाला॥
कोउ कह दामिनि बरन बनी जस श्रीमिथिलेश किशोरी।
तैसे श्याम सुभाय सलोने रामकुँवर की जोरी॥
कोउ कह कौन जन्म धौं पूजहि यह लालसा हमारी।
कुछ बातैं करि रामकुँवरसों मिलतीं भुजा पसारी॥
कोउ कह धन्य राजकुल नारी पूर्व पुण्य भल कीन्हा।
हँसि हँसाय श्रीराम कुँवरसों जन्म सुफल करि लीन्हा॥

आज जन्म धनि जगमहँ पायो श्रीनिमिराजकुमारी ।
सुन्दर पाय साँवली मूरति उर तें करीं न न्यारी ॥
कोउ कह कहाँ कुँवर रघुवंशी कहँ हम नारि गँवारी ।
केहि विधि मिलना होय विधाता बीत्यो जन्म वृथा री ॥
कोउ कह होत भाग भरि सजनी सोच करौ कत प्यारी ।
इतनो रह्यो संयोग हमारो नैनन लीन निहारी ॥
इमि आरत सुनि वचन तियन के अति करुणारस भीने ।
तिनको दिशि कृपालु रघुनन्दन चितै प्रबोधहिं दीने ॥
इमि मग होत विलास बहुत रघुनन्दन तब जनवासा ।
उतरे अनुज सखन युत रघुवर तुरत चले पितु पासा ॥
अवधराजको देखि दूरते सानुज कीन्ह प्रणामा ।
भूपति धाय जाय उर लीने कहि न जाय मुद ग्रामा ॥
ढिग बैठारि दुलारि सुतनको पूछत अवध भुलावा ।
केहिविधि राम कलेऊ कीन्हों सब कहि जाहु हवाला ॥
राय रजाय पाय रघुनन्दन अति आनन्द उर छाये ।
सब कहि गये महलकी बातें रघुवर सहज सुभाये ॥
सुनि विहँसे महराज सभा युत बरनि न जात हुलासू ।
पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहँ गे सब निज निज वासू ॥
इमि आनन्द जनकपुर वासी नित प्रति पावत लोगू ।
कोटिन इन्द्र नजर नहिं आवत निरखत वह सुख भोगू ॥
रामकलेवा रहस चरित ये हम लघुमति किमि गावैं ।
शेष गणेश महेश शारदा तेऊ पार न पावैं ॥

जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो प्रथमहिं यह बाँचै ।
पूरण पावै प्रेम रामको पुनि जग नांच न नांचै ॥
राम कलेवा रहसग्रन्थ यह रसिक जनन अधिकारा ।
जाके श्रवण परत सब बातैं हिय ना उठत विकारा ॥
ज्येष्ठ दशहरा ते आरम्भ करि क्वार दशहरा काहीं ।
राम कलेवा रहस ग्रन्थ यह पूरण भो मुदमाहीं ॥

दो०—निज पैंतालिस बरसकी, उमरि जाति परमान ।
किया कलेवा ग्रन्थ यह, रामनाथ परधान ॥

❀ इति श्रीरामकलेवा सम्पूर्णम् ❀

परिशिष्ट जयमाल-पद

अब पेन्हूँ गले जयमाल भला रघुवंशी लला ।
सिया मोरी छोटी न पावे गला रघुवंशी लला ॥
अलप वयस की किशोरी मोरी अति कृश तनु री ।
हाथ लपाई के पावे गला रघुवंशी लला ॥
हमरी सिया नई नागरिया अलबेली अली ।
नहिं जानतिहैं रसकेलि—कला रघुवंशी लला ॥
सखी तन पिया के प्रीत चढ़ा सुखकारी रहो ।
झुकि जाहु जासे सिया पावे गला रघुवंशी लला ॥

पद—३०८

आभा अभिराम हो गौर और श्याम हो सिया जू बनी हैं बनी,
बना बनें राम हो !
झिलमिल झिलमिल झाँकी झलकत, छलकत छटा छबीली हो।
घनदामिनि की उलहत उपमा सुषमा नीली पीली हो ।
शोभा सुख धाम हो लाजैं कोटि काम हो ॥ सिया जू० ॥
मन मन मनियन मौर विराजें, मूरति मधुर हसंती हो ।
बनी बसन रंग सुरंग सुहावन, बनरा बसन बसंती हो ।
मोतिन की दाम हो हीरा ठाम ठाम हो ॥ सिया जू० ॥
जुगल रूप की जुगल छटा की उपमा जात कही ना हो ।
स्वर्ण अंगूठी जनकनन्दिनी रघुबर श्याम नगीना हो ।
रूप और नाम हो भूलें आठों याम हो ॥ सिया जू० ॥
मदन मनोहर बदन बना को मोहनियाँ सी डारी हो ।
सहज सुहावन बंक विलोकन बरसे बाण बिहारी हो ।
मोह लई तमाम हो मिथिला की बाम हो ॥ सिया जू० ॥

पद—३०९

झाँकी झलकावहीं दरस दिखाव हो ।
प्रीतम हमारें प्यारें अबैं जिन जाव हो ॥
गैल चलत गौतम तिय तारी, देखी मिथला नगरी ।
धनुष तोर ब्याही वैदेही, चोगुद (वाह वाह) बहवा बगरी ॥
यारी न छुड़ाव हो ब्यारी न लगाव हो ॥ प्रीतम० ॥

जनक लली की लगन देखकर, द्वारे दर्शन दीने हो ।
जनक पुरी के नगर निवासी, रस वस वस कर लीन्हें हो ।
पिया अपनाव हो जिया न दुखाव हो ॥ प्रीतम० ॥
कछु दिन और रहो रघुनन्दन करियत मान मनौती हो ।
धन्य भाग्य हम सबन तियन के तुमसे भई नतौती हो ।
नाते को निभाव हो छवि में छकाव हो ॥ प्रीतम० ॥
होत सबेर सदा सरजू से भर ल्याहैं जल झारी हो ।
रावर सकल टहल कर करिहैं, महलन वास विहारी हो ।
रंग सरसाव हो संग न छुड़ाव हो ॥ प्रीतम० ॥

पद—३१०

स्वामिनि सिया जू पर बलिहार ॥
वाम अंग रघुवर के सोहैं, त्रिभुवन पति के हू मन मोहैं ।
रही मोहनी डार ॥ स्वामिनि ॥
इक कर दियें गलें प्रभुजी के अभय हेत भक्तन को नीकें ।
इक कर रही पसार ॥
पाहि माम हूँ मात शरण में रसरंग मन के एई चरन में ।
जुड़े रहैं नित तार ॥ स्वामिनि ॥

पद—३११

छबीली पिय छवि देख छकी ।
मोहत मन मोहन मग जातन, तिरछी तकन तकी ॥
वा छिन से डग डोल न जानी बोल न बोल सकी ।

चन्दा के हित भई चकोरी चक्र के हेत चकी ।।
आवत जात न बनत बिहारी ऐसी थकिन थकी ।

पद--३१२

सुगना जे हमरी अटरिया, रे सजनियाँ,
मीठे बोल बोलैना ।
मोरा आँगना रे पहुनमा अनमोल ऐलैना ।। २ ।।
नैन के कोठरिया में पुतरी पलंगिया
हम बिछाय देबै ना ।
डारी पलकन के चिकवा पिया रिझाय लेबैना ।। २ ।।
जहियाँ से देखलौं सखि साँवरी सुरतिया,
सुधि भुलाय गेलै ना ।
नेह-नदिया में मनमा मोरा नहाय गेलै ना ।। ३ ।।
लोकवा के लाज सब प्रेम अगिनियाँ में,
जराय देलियै ना ।
सब जग के जजंलवा बिसराय देलियै ना ।। ४ ।।
मिटले करील सब चाह छबि दुलहा,
हिया बसाय लेलियै ना ।
प्रीति-नदिया में ममता लता भँसाय देलियै ना ।। ५ ।।

पद—३१३

आजु मिथिला नगरिया निहाल सखिया ।
चारों दुलहा में बड़का कमाल सखिया ॥
माथे मणि मौरिया कुण्डल सोहे कानवाँ ।
कारे कारे कजरारे जुलुमी नयनवाँ ।
लाले लाले चन्दन चमकेला भाल सखिया ॥ चारों०॥
साँवर साँवर गोरे गोरे जोड़िया जहान हे ।
अँखियाँ न देखलस, सुनलस ना कान हे ॥
युग युग जीये जोड़ी बेमिसाल सखिया ॥ चारों० ॥
गगन मगन आजु मगन धरतिया ।
देखि देखि दुलहा के साँवरी सुरतिया ।
बाल वृद्ध नर नारी सब बेहाल सखिया ॥ चारों० ।
जिनका लागि जोगी मुनि जोग जप कइले ।
से ही हमरा मिथिला में पाहुन बनि के अइले ।
अब लोढ़ा से सेंकाई इनकर गाल सखिया ॥ चारों०

❀ शुद्धि–पत्र ❀

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
रखखानिहि	रसखानिहि	६	२२
दरशन	दशरथ	१०	१९
दीन	दान	१३	१९
बनाइए	बनाए	१८	६
ससीरा	सरीरा	१९	१८
तंच	पंच	२८	१९
गुलुमी	जुलुमी	३२	५
हैलक	हैकल	३५	१२
राधेजी	राघोजी	४२	११
गमन	गगन	४३	१७
हश्व	हर्यश्व	४९	९
सिय	लिय	५५	१
राजित	राजति	६०	१८
सारद	सादर	७०	१७
अनिल	अलिन	७२	४
सारद	सादर	७९	१६
मेहती	मेहदी	१०६	१७
राजित	राजति	१०७	१
एकएक	एकटक	१०७	४
अरुझानी	अरुझानी	११०	९
निरस	निरख	१२१	९
पघुराज	रघुराज	१२५	६
उसे	उर	१२५	९
जगरा	झगरा	१२८	४
सब	बस	१३३	२
जागि	रस जागि	१३८	१
बोले	वाले	१५३	४
जाग	जात	१७०	११
लोगो	लागो	१७४	१२
मुलावा	[illegible]	२०३	१३

श्रीलक्ष्मणकिलाधीशजी द्वारा लिखित

एवम्

प्रकाशित पुस्तकों की सूची

श्रीसीतातत्त्व मीमांसा	१.००
श्रीहनुमदुपदेश	१०.००
अजामिलोपाख्यान	१०.००
भ्रमरगीत	१.५०
गोपीगीत	२.००
श्री वैष्णवदर्शन	१.५००
प्रवचन पीयूष	२.००
श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल	५.००
गीता तात्पर्य	१.००
श्रीधाम कान्ति	१.५०

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

अवध सन्देश कार्यालय

श्रीलक्ष्मणकिला, श्रीअयोध्याजी

जि० : फैजाबाद (उ० प्र०)